વિજ્ઞપ્તિ,

" તત્ત્વબોધ આપનાર પુસ્તકનો યોગ્ય સત્કાર કરે
મ આળથી સાચવી રાખો, જ્યાં ત્યાં જેમ તેમ તેને રઝળ
ન મૂકો પણ પ્રેમ પૂર્વક શરીર શુદ્ધિ સાચવીને
વાંચો વિચારો અને તમારા સ્વજન
મંડળમાં તેનો ફેલાવો કરો "

આગત્યની સુચના

ઘણું કરીને ભવ્ય આત્માઓને પવિત્ર જ્ઞાનામૃતનો [illegible] લાભ થાય [illegible] એવા શુભ ઉદ્દેશથી ભેટ દાખલ આપ [illegible] આપના કોઇ પણ પુસ્તક ઉપર કોઇએ પણ લિખ્યા [illegible] [illegible] શુદ્ધિ રાખી કોઈ રીતે પુસ્તકનો દુરૂપયોગ કરવો [illegible] પણ પ્રમાદ રહિત [illegible] રાખી તેનો [illegible] બીજા [illegible] બહેનોને તે ભેટ દાખલ [illegible] પુસ્તકો [illegible] લાભ લેતા રહેવું અને એવી રીતે [illegible] ઉપજાવી ભેટ [illegible] આપવાના પુસ્તકનો પવિત્ર ઉદ્દેશ સફળ [illegible] જૈન [illegible] બહેનોને નમ્રતાપૂર્વક ખાસ ભલામણ કરે [illegible] શુભ ઉદ્દેશથી પુસ્તકો ભેટ [illegible] આપવામાં [illegible] તે ઉદ્દેશ સફળ થાય અને તેની કોઈ રીતે આશાતના [illegible] અટકે એટલું સૂચવી વિરમિયે છીએ

[illegible]-બહુમાનપૂર્વક પઠન, મનન અને પરિશીલન[illegible]

परोपकाराय सताम् विभूतय

श्री शत्रुंजय महातीर्थादिक यात्रा विचार.

याजक

शांतमूर्ति मुनि महाराज श्री वृद्धिचंद्रजीना
शिष्याणु मुनि कर्पूर विजयजी

स्वधर्मी भाईओ व्हेनोने

श्री पाटण निवासी शा. हरीलाल वलमजी ना

स्मरणार्थे तेमना विधवा भार्या

फतुबाई तरफथी भेट

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता

श्री जैन श्रेयस्करमंडळ—म्हेसाणा

(तरफथी शा. वेणीचंद सुरचंद.)

आ पुस्तक श्री सत्यप्रकाश प्रेस खाडीया अमदावादमां
शा. प्रेमचंद हालचंद तथा डाह्याभाई दलपतभाई
गांधीए छाप्युं

संवत १९७० वीर संवत् २४४० सने १९१३

कीमत वांचन, मनन अने यथाविध वर्तन

आ पुस्तक उघा स्थां रसडतु मुकी आशातना करवी नहीं

ॐ नमः श्रीतीर्थराजाय, सर्वतीर्थमयात्मने ॥
अर्हते योगिनाथाय, रूपातीताय तायिने ॥ १ ॥

भावार्थ.—सर्व तीर्थमय जेनु स्वरूप छे एवा श्री शत्रुंजय तीर्थ राजने तेमज परमयोगीश्वर, देहातीत अने विश्वत्राता एवा अरिहंत परमात्माने अमारो नमस्कार थाओ !

श्रीतीर्थपांथरजसा विरजीभवन्ति,
तीर्थेषु वभ्रमणतो न भवे भ्रमन्ति,
द्रव्यव्ययादिह नरा स्थिरसंपदा स्युः
पूज्या भवन्ति जगदीशमथार्चयन्त ॥

भावार्थ —श्री तीर्थ भूमीना रज स्पर्शथी भव्यात्माओ कर्मर रहित थाय छे तीर्थोमा परिभ्रमण करवाथी भवमां भमता नथी (भ भ्रमणथी मुक्त थाय छे), अने दान देवाथी मनुष्यो अचळ लक्ष्मी वाळा थाय छे अने जिनेश्वरनी पूजा–अर्चा करता छता विश्व पूज्य थाय छे

विज्ञप्ति

प्रिय वांचनार !

सत्पुरुषो पोतेज तीर्थरूप छे एटलुंज नहि पण तेमना पवित्र चरणकमळथी स्पर्श थयेली भूमि अने तेनी प्रत्येक रज ए पण तीर्थरूप छे एवा तीर्थनी विधिपूर्वक स्पर्शना, बहुमान, पूजन वगेरेथी आपणामां ते ते सत्पुरुषोना असाधारण सद्गुणो संक्रांत थाय छे. अने तथाविध उपासनाथी अनुक्रमे आपणे ए सत्पुरुष जेवाज थइ शकीए तेम छीए, अनंत सद्गुण संपन्न महर्षीओना रोमेरोममां उच्चता, पवित्रता, श्रेष्ठता, भरी रहेली होय छे तेमना प्रत्येक श्वासोश्वासमां अने शरीरना साडात्रण क्रोड रोममांथी निकळता परमाणुओमां अलौकिक असर करनारी उच्च शक्तिओ रहेली होय छे तेओ ज्यां ज्यां जाय छे त्यां त्यांनी दशे दिशामां ए सद्गुणोनुं बळवान वातावरण रचाय छे ते वातावरणमां जइ वसनाराओ उपर तेनी चमत्कारिक असर थाय छे ए हालनी सायन्स विगेरे अनेक पुरावाओथी सिद्ध करी बताव्युं छे अने आपणा सर्वज्ञ शास्त्रकारोए अनेक दलीलो साथे जणाव्युं छे.

तीर्थाधिराज शत्रुंजयतीर्थ ए अनंत महात्माओनी स्पर्श करेली परम पवित्र भूमि छे, देव दानव अने इन्द्रादिदेवो जेना दर्शन स्पर्शनने अहोनिश इच्छे छे, ते भूमिनी यात्रा आपणामांना घणा सज्जन स्त्री पुरुषोए एक करतां वधु वखत करी हशे, पण यात्राने जे विधिपूर्वक

करवी जोइए ते विधिपूर्वक न करवामा आवे तो जोइए तेटलो लाभ मळतो नथी कडवी तुंबडी अडसठ तीर्थनी यात्रा करी आवे ते छता तेमानी जरा पण कडवाश कमी थती नथी. तेवी यात्राओ आपणे अनेक वखत करी चूक्या होइशु, पण यात्रा करीआव्या त्यार्थी आपणे शु नवो सद्गुण लेता आव्या ? आपणामाथी केटली खामीओ कमी थइ ? आपणामा केटली योग्यता वधी ? योग्यता न वधवाना शु कारणो छे ? शास्त्रकारोए शामाटे आवा तीर्थनी यात्रा करवामा जन्मनी सफळता कही छे ? केवी रीते यात्रा करवामा आवे तो आपणने यात्राना योग्य लाभो मळे ? ए बाबत समजाय, अमलमा मकाय अने तथाविध यात्रानो लाभ लेवाय, तो श्री शत्रुंजय माहात्म्यादि ग्रंथोमां शत्रुंजयनी यात्रानु फळ जणाव्यु छे तेनो निश्चयात्मक अनुभव थाय

अनेक मुमुक्षु स्त्री पुरुषो, आ साधनोनी अनुकूळतावाळा जमानामा आ तीर्थनी यात्रानो लाभ घणी वखत लेछे पण तेमानो म्होटो भाग गतानुगतिक होवाथी यात्राना खरा लाभोथी वेनसीब रहे छे केटलीक वखत तीर्थनी आशातना वगेरे करीने, तीर्थनी छायामा नहीं आचरवा योग्य कृत्यो करीने, लाभने बदले महोटो टोटो करी जाय छे, माटे तेम थतु अटकाववाने अमारा साहित्य प्रसिद्धिना उच्च उद्देशनी सिद्धि अर्थे आ "श्री शत्रुंजय महातीर्थादि यात्राविचार" नामनु न्हानकडु पण अति उपयोगी पुस्तक अमारी ग्रथमाळाना २६ मा मणका तरिके प्रथमावृत्तिमा घणीक उपयोगी

वाचकोनो उमंगे करीने जिज्ञासु स्त्री पुरुषोने भेटतरीके आपी तेनो बहोळो प्रसार करवा अर्थे छपावी बहार पाडवामां आव्युं छे

आ पुस्तक शांतमूर्ति मुनिमहाराज श्रीमान कर्पूरविजयजी महाराजजीए तैयार करी आप्युं छे, उपोद्घात अने प्रस्तावनामां पण तेओश्रीए पोताना विद्वत्ताभर्या उद्गारो जाहेर कर्या छे ते बदल तेओश्रीनो अमो अन्तःकरणपूर्वक आभार मानीए छीए अने आवा अनेक ग्रंथो रची जैन कोमने विशेष आभारी करशे एम इच्छीए छीए

आवा ग्रंथनी प्रसिद्धि माटे अने जनसमाजमां बहोळो प्रचार करवा अर्थे धननी मदद करनार धर्मचुस्त सज्जनोनो पण अमो अन्तःकरणपूर्वक आभार मानवासाथे आवा कार्यमां वारंवार योग्य मदद करवा कराववा माटेनी सविनय विज्ञप्ति करीए छीए समग्र जैन प्रजानुं आवा उत्तम कार्य भणी लक्ष्य खेंचाने अने समाजने उपयोगी थई पडे तेवा त्यागना ग्रंथो विना मूल्ये के पाणीना मूल्ये समाजमां फेलाववा अमो सर्व सज्जन स्त्री पुरुषोने साग्रह विज्ञप्ति करी विरमीए छीए भूलचूक मिच्छामि दुक्कड   सुज्ञेषु किं बहुना।

सौभाग्य पंचमी संवत् १९७०   ली० प्रसिद्धकर्त्ता

श्रीशत्रुंजय महातीर्थादिक यात्रा विचार.

[प्रस्तावना]

" योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जाणोरे;
तेह तणे आलंबने, आतम ध्यान प्रमाणोरे "

नवपद प्रकरणमां कह्युं छे के " भो भो महानुभावो दश दृष्टांते दुर्लभ मनुष्य जन्म पामीने अने ते साथे वळी आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल विगेरे प्रधान सामग्री पुन्य जोगे पामीने महा अनर्थकारी पांच प्रकारनो प्रमाद (मद, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा) जलदी तजी दइ उत्तम धर्म करणी करवा तमारे पुरुषार्थ फोरववो जोइए ते धर्म सर्व जिनेश्वरोए दान, शील, तप अने भावभेदे करी चार प्रकारनो उपदिश्यो छे" तेमां पण भावनी प्रधानता वखाणी छे भाव सहित ज करवामां आवती धर्म करणी दान, शील, तप प्रमुख सफळ कही छे भाव वगरनी ते करणी अलेखे जाय छे ' भाव पण मन सबद्ध छे अने आलंबन वगर मन अति दुर्जय छे, तेथी मनने नियममां राखवा माटे सालंबन (आलंबनवाळुं) ध्यान कहेलुं छे

जोके शास्त्रमां अनेक प्रकारना आलंबन वखाण्या छे तो पण ते सहुमां नवपद ध्यानज मुख्य छे एम जिनेश्वरो कहे छे "

"१ अरिहंत, २ सिद्ध, ३ आचार्य, ४ उपाध्याय, ५ साधु, ६ दर्शन, ७ ज्ञान, ८ चारित्र, अने ९ तप ए नवपद वखाणेला छे "

ए नवपदनुं सविस्तर वर्णन नवपदप्रकरणमां करवामां आव्युं छे त्यांथी जाणी तत्संबंधी निश्चय करवा योग्य छे ए नवपदज जगतमां सार

छे तेथी तेनुज आराधन करवा अधिक ??? गणवानी जरुर छे ए नवपदमां अरिहंतादिक पांच धर्मी (धर्मात्मा) छे त्यारे दर्शनादिक चार (प्रकारनो) धर्म छे ए दर्शन (सम्यक्त्व), ज्ञान, अने चारित्र्य सद्धर्मनु आराधन करवाथीज धर्मात्मा थइ शकाय छे जे जे अरिहंतादिक थाय छे ते सहु उक्त धर्मना आराधन (सेवन) वडेज थया छे अने भविष्यमां पण जे जे अरिहंतादिक थशे तेओ पण पवित्र धर्मना आराधन वडेज थशे एथी वर्तमान काले पण भव्य जनोए एज पवित्र धर्मनु आराधन करवा उजमाळ रहेवु उचित छे धर्म धर्मी जनोमां निवसे छे तेथी धर्मनु आराधन करवा इच्छनारे उक्त अरिहंतादिक धर्मात्माओनु दृढ आलंबन लेवु अत्यंत जरुरनु छे

अरिहंतादिक पवित्र धर्मात्माओना नाम, स्थापना द्रव्य अने भाव ए चारे निक्षेपा पूजनिक छे जेमना भाव पवित्र छे तेमनाज नाम, स्थापना अने द्रव्य पण पवित्र छे पण बीजाना नथी. तेथी अरिहंतादिक पवित्र आत्माओनु (भाव सहित) नाम स्मरण करवाथी, तेमनी (शाश्वत अशाश्वत) प्रतिमानां दर्शनादिक करवाथी, तेमज तिरागत तेमना आत्मद्रव्यने नमस्कारादि करवाथी आपणो आत्मा जागृत थाय छे एटले ए अरिहंतादिकमां जेवा उत्तम गुणो छे तेवाज उत्तम गुणो प्राप्त करवा उजमाळ थाय छे जे गुणो अरिहंतादिकने व्यक्त (प्रगट) थयेला छे तेज (तेवाज) गुणो आपणा प्रत्येक आत्मामां शक्ति (सत्ता) रुपे तो रहेलज छे ते गुणो कर्मना आवरणथी ढकाई गयेला होवाथी प्रगट देखी शकाता नथी परंतु जो प्रगट गुणी अरिहंत परमात्मादिकनु दृढ आलंबन लइ ए कर्मना सघळा आवरण

दूर करी देवामां आवे तो पछी स्वसत्तामां रहेला समस्त गुणो जेनाने तेवा झळहळता प्रगट थायज छे सूर्यादिक उपर आवी लगेला वादळां दूर थतांज तेनी स्वाभाविक प्रभा शुं प्रगट थया वगर रहे छे? एथीज अव्यक्त गुणी एवा आपणे व्यक्त गुणी एवा अरिहंतादिक परमेष्ठीनुं दृढ आलंबन लेवुं उचितज छे जे जे कार्य उचित विवेक सहित विधि पूर्वक करवामां आवे छे ते अल्प श्रमे अद्भुत लाभ मेळवी आपे छे एटलामाटे पवित्र धर्म करणीनुं सेवन करनारे यथोचित मर्यादारूप विधि साचववा अने यद्वा तद्वा करवा रूप अविधि दोष टाळवा खास काळजी राखवी ज जोइए. एवा हेतुथी प्रस्तुत प्रथम श्री शत्रुंजय महातीर्थ जेवा पवित्र स्थळनी स्पर्शना–सेवना करवा जेवो पुण्य–संयोग मळे त्यारे जे कंइ विधि–सेवा करवी जोइए अने अविधि दोष टाळवा जोइए तेनुं दिग् दर्शन प्रसंगे प्रसंगे करावेवामां आवेलुं छे ते लक्षमां राखी भविथी हित मार्गनो आदर करवा भव्यात्माओने खास भलामण छे जुओ! खेती करनारा खेडुत लोको तेमना क्षेत्रने यथाविध खेडी तेमां खातर प्रमुख नाखी यथा अवसरे वावणी करे छे अने तेनो विनाश रखे न पामे पण प्रतिदिन तेनी रक्षा–पुष्टि थया करे तेवी पूरती काळजी राखे छे तो परिणामे तेमांथी ईच्छित लाभ मेळवी शके छे, एज रीते आपणे जे धर्म करणी करीए तेनो यथार्थ लाभ लेवोज होय तो ए खेडुतनी पेरे आपणे पण पूरती संभाळ राखी रहेवानी खास जरुर छे ज सुज्ञेषु किं बहुना इति शम्

ली० शासनरुचि मुनि कर्पूरविजय

उपोद्घात अंतर्गत प्रस्ताविक बोध वचन

श्री शत्रुंजय, गिरिनार, अर्बुदाचल (आबु गढ) अने समेत शिखर प्रमुख उत्तम तीर्थोने भेटवा जतां, तेमज गमे ते गाम, नगर, पुर, पाटण प्रमुख स्थळना भूषण रूप श्री जिनचैत्यो (जिन मंदिरो तेमज तेमां प्रतिष्ठित प्रभुनां बिंबो) ने जुहारवा जतां तथा मुनिजनोने वंदन करवा जतां यथायोग्य प्रवचन सारोद्धार, पंचाशक अने देववंदन भाष्य प्रमुख पवित्र शास्त्रोमां फरमाव्या मुजब आपणे निसीहि प्रमुख दशत्रिको बराबर लक्ष राखीने साचववी जोईए एटले के १ यथास्थाने त्रणवार निसीहि (तेनो परमार्थ समजी-धारी) कहेवी २ चैत्य फरती त्रणवार प्रदक्षिणा देवी (प्रदक्षिणा देतां कंई आशातना जेवुं नजरे पडे तो ते टाळवा प्रथम लक्ष करवो) ३ त्रणवार पंचांग नमावीने प्रणाम करवा (प्रथम प्रभुजी नजरे पडे एटले तत्काळ अंजलि (बे हाथ) जोडी प्रणाम करवो, पछी नजदीक आवतां अर्धांग नमावी देवुं अने छेवटे चैत्यवंदन करती वखते पंचांग प्रणाम करवा जोईए). ४ त्रण प्रकारनी पूजा (अंग पूजा, अग्र पूजा अने भाव पूजा) करवी ५ प्रभुनी त्रण अवस्था (छद्मस्थ अवस्था, केवळी अवस्था अने निर्वाण अवस्था) भाववी ६ प्रभु शिवायनी त्रणे दिशा तरफ जती दृष्टिने संयमी-नियममां राखी ते दृष्टि प्रभुनी सन्मुखज स्थापी राखवी ७ प्रभुने पंचांग प्रणाम करतां त्रणवार नेत्रनी भूमिनुं प्रमार्जन करवुं ८ चैत्यवंदन करतां उच्चरवामां

आवता सूत्रादिक शब्दो शुद्ध बोलवा, तेना रहस्यार्थमां उपयोग राखवो अने प्रभुनी मुद्रा उपर सारी रीते लक्ष राखवुं ० नमुथ्थुण कहेतां योग मुद्रा करवी. जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय कहेतां मुक्ताशुक्ति मुद्रा अने काउस्सग्ग करतां जिन मुद्रा करवी. छेवटे १० चैत्यवंदन समये जावंति चे०, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय ए त्रण प्रणिधान बराबर लक्ष परोवी कहेवा, आवा चैत्यवंदन समये मन, वचन अने कायानी एकाग्रता करवी ए दशे त्रिकोनुं अधिक स्वरूप भाष्यत्रय नामना गुजराती पुस्तकमांथी पण जोई, जाणी, अविधि दोष टाळी, विधि-मार्ग आदरवा पूरतो खप करवो उक्त पवित्र स्थळमां दाखल थतां (प्रवेश करतां) पांच अभिगम पाळवा पण पूरतुं लक्ष राखवुं १ निज भोगमां लेवा योग्य सचित वस्तुनो त्याग करी देवो २ शुद्ध वस्त्र, अलंकारादिक अचेत वस्तु साथेज राखी लेवी ३ अखंड उत्तरासंग (जनोईना आकारे) नाखीने प्रवेश करवो ४ मनने एकाग्र करी देवुं अने ५ देव-गुरु नजरे पडतांज बे हाथ जोडी मस्तके लगाडी नमस्कार करवो वळी राज्य चिह्न रूप गणाता १ छत्र, २ चामर, ३ मुकुट, ४ खड्ग, तेमज ५ उपानह (मोजडी प्रमुख) बाहर उतारी नाखीने ज अंदर प्रवेश करवो उचित छे अन्यथा देवगुरुनी आशातना करी लेखाय.

देव-गुरुना दर्शन पूजादिक करीने पाछा वळतां (बाहेर निसरतां) आपणा परम पूज्य देव-गुरुने पुठ वाळीने (पुठ दइने) चालवुं नहिं पण विवेकथी तेमने आपणी पुठ न पडे एम उपयोग

गमीने अश्व सर पाछा फरवु जूओ ! लौकिकमां कोई शहेनशाह प्रमुख मातबरनी सलामे गया होय तेमने पण सलामी लई पाछा पगले चालवु पडे छे तेम छतां कोई जाणतां अजाणतां पुठ दइने चाल्यु होय तो तेणे ते मातबरनुं अपमान कर्युं लेखाय छे ज्यारे आम छे त्यारे त्रण जगतना परम उपकारक प्रभुनो (शुद्ध देव-गुरुनो) आपणे केटलो बधो विनय साचववो जोईए ? आ बाबत खास करीने सहुकोई सज्जनोए विशेष सभाळ राखी व्यवहार शुद्धि साचववा पूरतो ख्याल करवो जोईए दरेक हित कार्य पण विवेक पूर्वक करवाथीज व्यवहार शुद्धि पळे छे. श्री शत्रुंजयादिक पवित्र तीर्थोनी स्पर्शना करती वखते, अने गमे त्यां देवाधिदेव (वीतराग परमात्मा) ने जुहारती वखते तेमज ब्रह्मचर्य, निःसंगता प्रमुख उत्तम गुणोथी अलंकृत आचार्यादिक पवित्र आत्माओना दर्शन करवा अर्थे तेओनी समीपे जतां, खुल्ला (अलवाणा) पगे barefooted चालीने जवु जोईए. चालतां जतां अने गया बाद हृदयमां तेमना पवित्र गुणोनुं सतत स्मरण अने बनी शके तेटलुं तेवा सद्गुणोनुं अनुसरण करवु जोईए. तीर्थादिक पवित्र स्थळे पुन्ययोगे आवी तेनी शारीरीक सेवा करवी, पण देहादिक जड वस्तुओ उपर मोह ममता राखीने सुख शील थई केवळ ऐशमां रहेवानु अथवा इन्द्रियादिकनी लगाम मोकळी मूकी दई स्वेच्छाए म्हालवानु नथी जे जीवो अहीं आवी लाभ लइ जवाने बदले अवळो व्यापार करीने उलटो बोजो बांधे छे ते हत भाग्य जनोनो बचाव कदी थवानो नथी पण दीर्घ विचारी प्रमादाचरण तजी, पोतानु जन्म सुधारी सुकृत उपार्जन करवा जरूरी साव

धान थई जवु जोईए. दुर्भाग्यवशात् अवळे रस्ते चालेला छता श्री शत्रुंजय जेवा परम पवित्र तीर्थस्थलनो तन मनथी दृढ आश्रय करी, फरी धर्म सन्मुख थयेला पापी जीवो पण पावन थई जाय छे. जूओ! वहुधुंळेथे "च्यार हत्याना नर परदारा, देवगुरु द्रव्य चोरी खावे, चैत्री कार्तकी पुनम जात्रा, तप जप ध्यानथी कर्म जलावे. गिरिवर दर्शन विरला पावे" धर्मना एक अशरणने शरण आपनार अने अधर्मनो पण उद्धार करनार निष्कारण बंधु समान आ प्रस्तावे शत्रुंजय माहात्म्यमां विस्तारथी वर्णवेलु कड्ड राजानु चारित्र मनन पूर्वक वाची धडा लेवा योग्य छे. जेमा प्रसंगे कह्यु छे के " धर्मनाज प्रभावे सुख साहेबी पामीने जे कृतघ्न, पछ धर्मनो अनादर करे छे ते स्व स्वामी द्रोह करनार पापीप्राणीनु भविष्य शीरीते सुधरी शकशे? नहिंज सुधरी शके " आवा मार्मिक (उंडी असर करनारा) वचनोथी कड्डराजा चमकी उठयो हतो, तेम भरभीर जनोए जागृत थईए नहिंतो पछी " समय वळी गई उपमा, पछी नर पस्ताय " एना जेवु थवानु. शाणा माणसने एटली शिखामण बस छे. सासारिक पाप भारभमां रगदोळायाथी मलीन थई गया छता छेवट निर्मळ थवा इच्छता भव्य जनोए पवित्र तीर्थस्थळमा जईने अद्भुत वीर्योल्लासथी प्रभु प्रतिमानु अथवा निर्गय साधु पुरुषादिकनु उत्तम आलंबन लही स्थिर चित्तथी चपलता रहित प्रेम पूर्वक-रुचि बहुमान सहित प्रभुनो पवित्र मार्ग आदरवो जोइए अने अनादि कालथी दृढ रुढ थयेला दोष जाळनो उच्छेद करवा प्रबळ पुरुषार्थ सेववो जोइए." शत्रुंजयादिक महातीर्थना उच्च प्रदेशमा सद्गुरुना चरणमा आधीन

ईहा यथाशक्ति तप जप संयमवडे अनादि कर्म मळनो क्षय करवा उजमाळ थवु जोइए. पूर्वे अनंत आत्माओए पवित्र रत्नत्रयीनुं यथार्थ आराधन करी जेम सकळ कर्मनो क्षय करी शाश्वत सुख मेळव्युं छे तेम भाविक जनोए रत्नत्रयीनुं आराधन करवा अत्यारे पण लक्ष राखवुं जोईए. शाश्वत-मोक्ष सुख मेळववुं एज आपणुं साध्य बिंदु होवुं जोइए; अने एनोज उपाय गवेषीने आदरवो जोईए

शाश्वत-मोक्ष सुखनो उपाय

तत्त्वार्थ सूत्रकार कहे छे तेम सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्र रूप रत्नत्रयीनुं सेवन करवुं ए मोक्ष प्राप्तिनो अमोघ उपाय छे

श्री जिनेश्वरे (सर्वज्ञ परमात्माए) भाखेला तत्त्वोमां यथार्थ श्रद्धान ते सम्यग् दर्शन अथवा सम्यक्त्व, ते तत्त्वोनो निर्मळ [योग्यतो शंका रहित] अवबोध ते सम्यग् ज्ञान अने ए उभयना परिणामे तजवा योग्यनो त्याग अने आदरवा योग्यनो आदर ए सम्यक् चारित्र जाणवुं अथवा आत्माने अनंत विभूति (सत्तागत गुण समृद्धि) नी प्रतीति थवी ते सम्यक्त्व, तेनुं यथार्थ भान थवुं ते ज्ञान अने ए उभयना परिणामे स्वरूप स्थिरता कहो के निज गुणमां रमणता थवी ते चारित्र, ए रीते आत्मश्रद्धा, आत्मज्ञान अने आत्मरमणता रूप रत्नत्रयीनुं ससेवन करवुं एज मोक्षनो खरो उपाय छे

शत्रुंजयादिक महातीर्थादिकनुं सेवन पण एज हेतुथी करवानुं छे ए पूर्वोक्त रत्नत्रयीरूप मोक्ष मार्ग पामवा माटेज अने एमांज आगळ वधवा माटेज शुद्ध देव-गुरुनां, सत्पुरुषोनां, शत्रुंजयादिक पावन

तीर्थोना, तेमज तेमां पावन थता आवता अने आवेला शासन रसिक श्री चतुर्विध संघना दर्शन, स्पर्शन, बहुमानादिक सद्भावथी कर वाना छे ए लक्ष भाविक यात्रिकोए सदाय राखी रहेवानु छे–भूल-वानु नथी. ए लक्ष वगरनी करणी एकडा वगरना मींडाजेवी जाणवी पवित्र तीर्थ स्थलोमां पुन्ययोगे अनायासे अथवा अल्प श्रमे प्राप्त थता सत् समागमनो अपूर्व लाभ लही, बने तेटली तत्त्व गवेषणा करवी, स्व शंकास्थळोनु समाधान मेळवी निःशंक थावु, अने एम तत्त्वज्ञान वडे आत्म श्रद्धा रुप समकितनो पायो मजबूत रची ते उपर यथाश क्ति व्रत नियम अंगीकार करी लेवा रुप शुभ इमारतनु चणतर करवु बहुज हितकारी छे पण आ बधु जो कल्पित सुखनी इच्छा–कामना रहितज (निष्कामपणे) थरवामां आवे तो परिणामे ते अक्षय–मोक्ष सुख आपवावाळु थई शके क्षणिक अने कल्पित सुखनी आशाथी धर्म करणी करवी ए तो कोडीने साटे चिंतामणिरत्न गुमावी देवा जेवु जाणवु एम समजीनेज मोक्षना अर्थी मुमुक्षु जनो आ लोक सबंधी क्षणिक अने कल्पित सुखनी इच्छा के आशा राख्या वगर ज केवळ निष्कामपणेज धर्म साधना करे छे अने एज रीति नीति अख्त्यार करवी हरेक आत्मार्थी जीवने खरेखर हित कारक छे

वेदान्तिक अन्य शास्त्रोमां पण मोक्षना उपाय तरीके कहेवामां आवेलु अत्र प्रसंगागत जणाववामां आवे छे. तेमां कह्यु छे के " मोक्ष–सुख मेळववानो उपाय, परमात्म स्वरुपनु यथार्थ ज्ञान थवु एज छे " अत्र प्रसंगे ' प्रभुपणे प्रभु ओळखीरे, अमल विमळ गुण धाम, साध्य दृष्टि साधकपणेरे, वंदे धन्य नर तेह ' इत्यादिक आप्त वचनो तेनुं समर्थन करे छे " मननो लय करवो ए परमात्म स्वरुपनु ज्ञान

थवानो उपाय छे " (योगी-योगनिष्ठ-संयमी पुरुषो एनो अनुभव करी शके छे) " शुद्ध-निष्कामपणे कर्म-उपासना करवी ए मनना लयनो उपाय छे. ' तेमज वळी

" आ सर्व जगत् विनाशी छे एम विचारपूर्वक जाणवुं अने अनुभववुं अने तेनो दृढ निश्चय करवो, ए निष्काम थवानो उपाय छे (शान्त सुधारस भावनामां पण प्रवेशक उदार आशय समायेलो छे) अने एज भावनुं अनेक महाशयोए अनेक रीतथी समर्थन करेलुं जणाय छे जेमके—

" ध्याता ध्यान ते समकित रूप, तेहिज ज्ञान अने चारित्र तेह छे जी, तेहथी जाये सघळा हो पाप, ध्याता रे ध्येय स्वरूप होये पछे जी ' इत्यादिक अनेक आप्त पुरुषोना वचनो एज समर्थन रूप छे

जे भव्यजनोने तारे अथवा तारवानुं सामर्थ्य आपे, जेनाथी भव्यजनो भव सागर तरी पेले पार थई शके, ते तीर्थ स्थावर अने जंगम बे प्रकारनां छे तेमां श्री शत्रुंजयादिक स्थावर तीर्थ छे त्यारे शासनरसिक श्री गणधर प्रमुख चतुर्विध संघ जंगम तीर्थ गणाय छे मोक्षार्थी जनोए ए उभय प्रकारना तीर्थनो यथायोग्य विनय सत्कार करवो अत्यंत हितरूप छे परन्तु बंने प्रकारना तीर्थमांथी कोईनो पण अनादर करवो योग्य नथी विकथादिक प्रमादाचरणनो त्याग करी ते उभय प्रकारना तीर्थनो सर्व प्रकारे लाभ लेवा प्रयत्नशील थावुं ए आ मनुष्य जन्मादिक दुर्लभ सामग्री पाम्यानुं उत्तमोत्तम फळ समजवानुं छे आवुं उत्तमोत्तम फळ मेळववा आपणे क्यारे भाग्यशाळी थइ शकिये ? ज्यारे आपणामां उक्त पवित्र तीर्थो प्रत्ये अविहड प्रीति-भक्ति जागे त्यारेज

अविहड प्रीति-भक्ति केवी होय ?

प्रीति रीति कछु और है, जाणे जाणणहार,
गुंगे गुड खाया तेनो, स्वाद कहे शु वार ?

अर्थ—खरी अंतरंग प्रीति (प्रेम-भक्ति) नी खुबी कंई विलक्षणज छे ए तो जे जाणता होय ते ज जाणे एटले एवी अद्भुत प्रीति-भक्ति जेना हृदयमां जागृत थयेली छे, जेने तेनुं अपूर्व रसास्वादन मळ्युं छे अने तेथी जेनामां नवुं चैतन्य रेडायुं छे, ए सिवाय बिन्होरडे तेवी प्रेम-भक्तिनी खरी खूबी जेना जाणवामां-कळवामां आवी होय छे तेज तेने पिछानी शके छे कोई मुंगे माणसे गोळ खाधो होय-तेनो रसास्वाद मीठो होय ते तेनुं स्वरूप बीजाने पोतानी शक्ति उपरांत होवाथी शी रीते समजावी शके ?

प्रीत मेह अरु मोरडी, आवत दे अति मान,
पुकारिके जगमें कहत, आवत मेह महान २

अर्थ—मेघ अने मोरलीने जेवी प्रीत लागेली छे, तेवी अकृत्रिम प्रीत होवी जोइए ज्यारे मेघ आवे छे-आववानी तैयारीमां होय छे त्यारे ते केकारव करी सृष्टिने जणावे छे के अमारा प्राणाधार अति व्हाला अने उपकारी महान् मित्र-मेघराज पधारे छे २

मेह पिछानत मोर नहीं, मोर करी तस प्रीत,
पूर्व जन्मके कर्मथे, होत प्रीत इस रीत

अर्थ–जो के मेघराज मोरने कई ओळखता पाळखता नथी तेम तेने मोरनी तमा (दरकार) पण नथी, छतां जेम मोर मेघना मगळकारी गुणोनी पिछान करी तेनु आगागमन हृदयना उमळकाथी वधावी ले छे अने मुक्त कंठथी तेना नामोत्कीर्तन पुर्वक गुण गाय छे, यावत् मेघने दर्शी देखी जेम ते नाचे माचे छे तेम पूर्वोपार्जित कर्मना सरबंधथी एवा प्रकारनी गाढी प्रीति बंधाय छे के जे अतरनी हेतथी अनुकूळ–प्रतिकूळ संयोगोमा पण कायम बनी रहे छे, अने परिणामे स्वपर उभयन अनेक जातना उत्तम लाभ समर्पे छे

प्रीत प्रीत सब जन कहै, जुदी प्रीतकी रीति,
लोह चमक जड दोउ पैं, दखत चलन सुनीति ४

अर्थ –प्रीत प्रीत सहु कोई मुखथी पोकार छे, पण प्रीतनी रीत कंई विलक्षण ज छे जुओ ! लोह [लोढु] अने चमक उपल (लोहचुंबक पाषाण) ए बने जड पदार्थ छता एक बीजा तरफ केटलु बधु आकर्षण [illegible] ? खरी प्रीति–भक्ति एवी आकर्षणवाळी अने दंभ वगरनीज होवी जोइए अने एवी अकृत्रिम उल्लसती प्रीति-भक्तिज भक्त जनोने बहु लाभप्रद थाय छे

ली पवित्रशासनरुचि मुनि कर्पूरविजय

अनुक्रमणिका.





सूचना

आ पुस्तक रुपी जनोने भेट तरिके आपवानु छे माटे पोष्ट खर्चनी एक आनानी टीकीट मोकलीने प्रसिद्धकर्ता पासेथी अगर नीचेने सीरनामेथी मगावी लेवु

शा शिवनाथ लुंबाजी जैन पुस्तकालय.
ठे वेतालपेठ न ४९. पुना सीटी



श्री शत्रुंजय महातीर्थ यात्रा विधि.

श्री शत्रुंजय माहात्म्य

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवानना आदेशथी तेमना प्रथम गणधर श्री पुण्डरीक महाराजाए जगतना कल्याण माटे सर्वतत्त्वयुक्त अने अनेक आश्चर्यथी भरेलु 'श्री शत्रुंजय महातीर्थनु माहात्म्य' सवालाख श्लोकोथी प्रगट कर्यु हतु. त्यारबाद श्री महावीर स्वामीना शासनमां तेमना गणधर श्री सुधर्मास्वामीए भावी मनुष्योना आयुष्य अति अल्प जाणी तेमना उपकार माटे उक्त माहात्म्यने संक्षेपी २४ हजार श्लोक प्रमाण कर्यु त्यार पछी श्री सौराष्ट्र देशना महाराजा 'शिलादित्य'ना आग्रहथी तेमना समर्थ गुरु "श्री धनेश्वरसूरिए" तेमांथी सार सार ग्रही लक्ष्मीपुरमां लगभग १० हजार श्लोक प्रमाण सुखबोधक शत्रुंजय माहात्म्य बनाव्यु आ सुखबोधक श्री शत्रुंजय माहात्म्य उपरांत एक शत्रुंजय लघुकल्प अने बीजो शत्रुंजय महातीर्थकल्प ए

पण पूर्वे महापुरुष प्रणीत होवाथी प्रमाणभूत छे तेमां पण बहु अगत्यनी बाबतनो समावेश करेलो छे ज्ञातासूत्र तथा अतगड दशांग सूत्र पण आ पवित्र तीर्थराजनी उत्तम साक्षी आपे छे

तीर्थराजनां उत्तम २१ नाम.

१ शत्रुंजय, २ बाहुबली, ३ मरुदेव, ४ पुंडरीकगिरि, ५ रैवतगिरि, ६ विमलाचल, ७ सिद्धराज, ८ भगीरथ, ९ सिद्धक्षेत्र, १० सहस्रकमल, ११ मुक्तिनिलय, १२ सिद्धाचल, १३ शतकूटगिरि, १४ ढंक, १५ कोडी निवास, १६ कदंबगिरि, १७ लौहित्य, १८ तालध्वज, १९ पुण्यराशि, २० महाबल अने २१ दृढ शक्ति एमनां सुप्रसिद्ध उत्तम २१ नाम छे शत्रुंजय महातीर्थ कल्पमां कइ पाठांतरे जुदां नाम पण कह्यां छे उक्त बधां नाम सुर नर अने मुनिजनोए तेना उत्तम गुणने अनुसरी पाडेलां छे, वळी तेना १०८ नाम पण संभळाय छे, जेमांना ९९ नाम तो नवाणु प्रकारनी पूजामां ज आवेलां छे ते नवाणु नाम उपरांत बीजां पण नाम श्री शत्रुंजय माहात्म्य प्रमुखमां देखाय छे ए बधाए नाम कहेवानुं उत्तम हेतुथी ज प्रसिद्ध थयेलां छे तेमां पण ढंक, कदंब, कोडीनिवास, लौहित्य अने तालध्वज ए पांच कूट तो देवताधिष्ठित रत्नखाणो, गुफाओ, औषधी अने रसकुंपिका युक्त छे ते पांच कूट सजीवन कहेलां छे.

तीर्थराजनुं मान--प्रमाण

दरेक अवसर्पिणी कालना प्रथमादिक छ आरामां तेनुं मान अनुक्रमे ८०, ७०, ६०, ५०, १२ योजन अने ७ हाथनुं घटतुं कहेलुं

छे. तेवीज रीते उत्सर्पिणी काळना चढता छ आरामा तेनु मान अनुक्रमे ७ हाथथी वधतु जतु छेवटे ८० योजन प्रमाण थइ जाय छे ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर)ना समये तेनु मान उंचपणे ८ योजन, मूळमा विस्तार ५० योजन, अने उपर शिखर तळे १० योजन हतु प बीजा आगना छेडे रहेलु गिरिनु मान जणाव्यु तेवीज रीते चोथा आगना छेडे मूळ घेरावमा १२ योजननु मान समजी लेवु

सिद्धाचळ उपर तीर्थंकरोनु अवारनवार आगमन

भतीत काळमा ऋषभसेन प्रमुख असंख्य तीर्थंकरोए गिरिराज उपर समवसरी अनेक जीवोने उद्धरी पोते सिद्धिपदने पाम्या छे भविष्यकाळमा पद्मनाभ प्रमुख तीर्थंकरो अहीं आवी समवसरशे, तेमज वर्तमान चोवीशीमा श्री नेमिनाथ वगर २३ तीर्थंकरो आवी समवसर्या छे केवळज्ञान-दर्शनवडे अनंत लाभ जाणीने, तीर्थंकर भगवानो अत्र अवारनवार आवी समवसर्या छे तेमा पण वर्तमान चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान तो पूर्व ९९ वार अत्र आवी समवसर्या छे

प्रथम तीर्थंकर भगवानना प्रथम गणधर श्रीपुंडरीक महाराज अत्र एक मासनु अणसण पाळी चैत्री पूर्णिमाना दिवसे पाच क्रोड मुनिओ साथे मोक्षपद पाम्या छे, ते दिवसथी आ गिरिराज "पुंडरीक" नामथी प्रसिद्धि पाम्यो छे

ऋषभदेव भगवान पहेला १८ कोडाकोड सागरोपम जेटलो काळ धर्म [१]व्यवधान पडेलु तेथी ते वखते भावी जनोना कल्याण अर्थे सौधर्म

[१] अंतर

इंद्रना आदेशथी प्रभुना पुत्र भरत चक्रवर्तीए प्रभुना मुखथी राजना गुण सांभळी श्रीसंघपति तीलक करावी चक्रवर्ती स समृद्धि साथे लइ श्रीनाभ गणधरने आगळ करी श्रीतीर्थराजने त्यां वर्धकी रत्ननी पासे २२ जिनालय युक्त उत्तम प्रासाद बनाव्यो २२ जिनालय साथे श्रीऋषभदेव प्रभुनो प्रासाद बनाववानो हेतु ए जणाय छे के नेमिनाथ शिवाय २१ तीर्थंकरो अत्र समवसरेला छे

संघपति थइ संघ साथे यात्रा करवा आवनारनो विवेक

प्रथम उत्तम गुरुमहाराज पासे अक्षत वासक्षेप कराववो त्यार-बाद महर्धिक श्रेष्ठी प्रमुखे संघपतिने तेमज संघपणने उत्तम पुष्पमाला पहेराववी पछी संघपति सर्व स्थानकथी श्री संघने आमंत्रण करी बोलावे अने स्वनगर चैत्योमा प्रथम महोत्सव करे पछी ज्ञानी जनोने भक्तिथी पोताना घरे तेडावी सर्व विघ्नोनो नाश करवा प्रथम शांतिकर्म कराने, जेथी मंत्रोवडे प्रत्यक्ष थयेला देवताओ निर्विघ्न यात्रा पूर्ण करावे संघपति साथे एक मनोहर चैत्य श्री आदीश्वरप्रभुनी प्रतिमा युक्त राखे शुभदिवसे शुभमुहूर्ते शुभशुकनयोगे त्यांथी प्रयाण करे गुरु महाराजने आगळ करी, मार्गमां जिनशासननी प्रभावना करता, जीर्ण चैत्यादिकनो उद्धार करतां, दीन दु:खीने योग्य [1]आलंबन देता अने सर्व सार्धमिक जनोनी यथायोग्य भक्ति करता अनुक्रमे

[1] सहाय

तीर्थराज नजदीक आवे अहींथी तीर्थराजना दर्शन थाय छे एवी वधामणी आपनारने अति उदारताथी 'तुष्टिदान' आपे. अने गिरिराजना साक्षात् दर्शन करी वाहननो त्याग करी विकस्वर लोचनवडे तीर्थाधिराजने निरखी पंचांग प्रणाम करी प्रभुना चरणनी पेरे गिरिराजनी सेवा करे. गिरिराज नजर देख्या पण श्री संघनी भक्ति करवाथी बहु लाभ थाय छे. तो पछी गिरिराजने साक्षात् नजरे जोया बाद श्री संघनी भक्ति करवाना फळनुं कहेवुंज शुं? गिरिराजना दर्शन थया बाद त्यांज निवास करी संघपतिए महाशयोनी साथे उपवास करवो अने शुद्ध थइ उत्तम वस्त्र अलंकार धारी पत्नी सहीत देवालयमां आवी प्रभुनी स्नात्र पूजा करवी. पछी उत्तम धूप दहन करी मंगळ ध्वनि सहित मंगळ गीत गातां श्री गिरिराज तरफ थोडां पगलां जइ उत्तम यक्ष कर्दमवडे भूमि उपर विलेपन करी श्री संघने स्वस्तिकल्याणकारी एवो अक्षतनो के मोतीनो एक स्वस्तिक (साथीओ) करवो. पछी थयो कोलाहल शांत करावी गुरु महाराजने आगळ करी संघपतिए विविध द्रव्योथी पूजनोत्सव करवो, अने संघ पूजा साधर्मिवात्सल्य तथा देवाग्यणा संगीत भक्तिभावथी करवा. ते समये महाधरोए तेमज अन्य महाशयोए पण पत्नी सहित संघपतिनो वस्त्रालंकार तथा पुष्पमाळाथी बहु मानपूर्वक पूजा करवी. ते दिवस देवगुरुनी भक्ति करता सहुए त्यांज रहेवुं अने भरत महाराजनी पेरे श्री तीर्थराजनी स्तुति करवी. जे भव्यजनो भक्तिभावथी गिरिराजनी स्तुति करे छे ते स्वस्थाने रह्या छतां तीर्थयात्रानुं उत्तम फळ पामे छे.

बीजा दीवसे प्रभाते सघ सहित जिनालयमा जइ तीर्थंकर भगवतने तथा गुरु महाराजने वदना करी सघपति विगेरे पारणुं करे. त्यार बाद गुरु महाराजने आगळ करी सघपति सघ सहित श्री तीर्थराजने वंदना आतुरता धारी आगळ चाले, मगळ ध्वनि सहित श्री गिरिराज उपर चढता वाटमा गिरिराजनी अद्भुत शोभा जोइ दीलमा अति आल्हाद पामे.

गिरिराजनो अद्भुत महिमा

अन्य स्थळे अति उग्रतप अने ब्रह्मचर्यथी जे फळ मळे ते अत्र शुद्धभावथी निवसवावडे ज प्राप्त थइ शके छे

कोटि गमे मनुष्योने इच्छित भोजन कराववाथी जे फल प्राप्त थाय ते अत्र एक उपवास मात्रथी प्राप्त थइ शके छे

स्वर्ग मृत्यु अने पातालमा जे जे तीर्थो छे, तेमना दर्शननु फळ पुंडरीक गिरिराजने भावथी भेटवा वडे प्राप्त थइ शके छे

श्री शत्रुजयना मार्गमा यात्रार्थे जता साधु सघनी भक्ति, प्रभावना, वैयावच प्रमुख करता गिरिराज दूर होय त्या सुधी क्रोड गणु फळ अने साक्षात नजर पडता अनतगणु फळ प्राप्त थइ शके छे

जे जे महानुभाव मुनिओने अत्र केवळज्ञान उत्पन्न थयु छे, तेमज निर्वाण प्राप्त थयु छे, ते सर्वने वदन करवानु फळ श्री पुडरीक गिरिराजने भावसहित वदन करता प्राप्त थइ शके छे अष्टापद,

समेतशिखर, पावापुरी, चंपापुरी अने गिरनारजीने वंदन करतां जे पुण्य फळ थाय तेथी सोगणुं फळ आ गिरिराजने शुद्धभावथी वंदन करवा वडे मळी शके छे

अत्र प्रभु पूजा (शुद्ध द्रव्यथी) करनारने जे फळ मळे तेथी सोगणुं फळ शास्त्र रीति मुजब निर्माण थयेली जिनपडिमा भरावनारथी प्राप्त थाय छे. हजार गणुं फळ शास्त्र रीतिथी जिनभुवन करावतां मळे छे परंतु आ तीर्थनुं यथार्थ रक्षण करनारने तो अनंत गुणुं पुण्य हासल थइ शके छे प्रभु आज्ञानुं रहस्य जाणी ते प्रमाणे परमार्थ दाने वर्तनारनीज बलिहारी छे श्रेष्ठ फळ तेज मेळवी शके छे आ गिरिराजने मन, वचन अने कायानी शुद्धिथी स्मरण करतो जे कोइ भव्यात्मा अत्र गिरिराज उपर शुभ निष्ठा राखी मोक्षफळनी इच्छाथी नवकारशी, पोरसी, पुरिमड्ढ, एकासणुं, आयंबिल अने उपवास करे छे. ते अनुक्रमे छट्ठ, अट्ठम, दसम (चार उपवास), दुवालस (पांच उपवास) अर्धमास अने एक मास उपवासनुं फळ मेळवी शके छे

जे भव्यात्मा अन्न पाणी रहित (चोविहारो) छट्ठ करीने सात यात्रा (जयणा पूर्वक) करे छे ते त्रीजे भवे मोक्षपद पामी शके छे

आज पण आ गिरिवरना पसायथी गमे तेवा आचार वगरना जीव पण अनशन आराधी सुखे स्वर्गे जइ शके छे

आ गिरिराज उपर प्रभुभक्ति योग्य पूजोपगरण देवावडे भविष्यमां ते दाता उत्तम समृद्धि पामी शके छे

आ तीर्थराज उपर ताजा अने उत्तम सुगंधि पुष्पोनी जडणाथी गुंथेली माळाओ चढाववा वडे मोटु पुण्य थाय छे (सोयवडे विंधेला फुलोनी माळा करता छुटा सारा सारा फुल चढाववा वधारे श्रेयकारी छे साथ घोचवाथी फुलना जीवोने केटली किलामना थती हशे ते आपणा पोताना ज दाखलाथी सहज समजी शकाय तेवु छे. वधारे शक्ति होय तो श्रेष्ठ सुगंधि फुलोना पगर पण भरावी शकाय. आ बाबत चालतो आवेलि दोष टाळवा दरेक भव्यजने खास ध्यान देवानी जरुर छे)

आ गिरिराज उपर कृष्णागरु प्रमुखना धूप करवाथी १८ उपवासनु फळ मळे छे अने उत्तम कर्पूरमिश्रित धूप करवाथी एक मास उपवासनु फळ मळी शके छे वळी साधु—मुनिराजने शुद्ध आहार पाणी वस्त्र पात्र औषध भेषज अने रहेवा स्थान विगेरे आपवाथी केटलाक मासना उपवासनु फळ मळे छे

अन्य तीर्थोमा सुवर्ण भूमि अने भूषणोनु दान देवाथी जे पुन्य प्राप्त थाय ते आ गिरिराज उपर प्रभुनी पूजा अने स्नात्र मात्रथी प्राप्त थइ शके छे

जे भव्यात्माओ श्री शत्रुंजय गिरिराजने सदाय पोताना हृदय कमळमा ध्याया करे छे तेओ सकळ महाभयोथी मुक्त थाय छे जो के संख्या रहित तीर्थंकरादिकना चरण स्पर्शवडे तथा अनंत कोटी योगी जनो अत्र सिद्ध (सर्वथा कर्म मुक्त) थवा वडे आ महातीर्थ सदाय पूजनीय छे तोपण भव्य जनोने विशेषे आलंबनभूत थाय एवा हेतुथी

इन्द्र महाराजनी प्रेरणा वडे भरत चक्रवर्तीए अत्र एक ऋषभ प्रभुनो प्रासाद चोवीस जिनालय युक्त बनाव्यो. ते प्रथम उद्धार

बीजो उद्धार सगर चक्रवर्तीए श्री अजितनाथ प्रभुना समये कराव्यो ते वखते भरतनी रत्नमय प्रतिमा तेमणे पडतो काळ जाणी सुवर्ण गुफामा पधरावी दीधी

ते सुवर्ण गुफामा बिराजमान करेली रत्नमयी श्री ऋषभ प्रतिमाने वंदन पूजन कृतपुण्य भव्य आत्माज जोइ शके छे तेने माटे शत्रुंजय कल्पमा आवो अधिकार करेलो छे के-चंदन तलावडी समीपे रहेली (छायाभिगुप्त) गुफामा पधरावेली भरत महाराजाए करावेली प्रभु प्रतिमाने भेटनार-नमन करनार महापुरुष एकावतारी थाय छे. कवि-फळ (कोठा) ना वृक्ष समीपे अगाव देवडीनी नजदीकना मार्गमा पोसना द्वार जेवु ते सुवर्ण गुफानु द्वार उघाडीने अट्ठम तपना आराधनथी तुष्टमान थयेलो कपर्दी यक्ष ते गुफामा पधरावेली भरते भरावेली प्रभु प्रतिमाना दर्शन करावे छे (ते महानुभाव भवि आत्मा एकावतारी थई मोक्ष पामे छे) महाविदेह क्षेत्रमा विचरता (विहरमान) सीमंधर प्रभु पण त्यां रहेला भव्यजनो आगळ (द्वादश पर्षदा मध्ये) श्री शत्रुंजय महातीर्थना गुण गाय छे एवु एनु अद्भुत माहात्म्य छे

आ गिरिराज उपर असंख्य उद्धार, असंख्य जिनमंदिरो, अने असंख्य प्रतिमाओ पुनरुद्धार जीर्णोद्धार करावेल छे तेमां मोटा १६ उद्धारनी वात ९९ प्रकारनी पूजा विगेरेमा सुप्रसिद्ध छे.

तीर्थयात्रा करतां पाळवी जोइती छ री

१ सचित परिहारी—काचु पाणी, काचां धान्य, काची वनस्पति (फळ फुल वगेरे) ते ज्यां अपरिपक्व होय, सचेत होय, त्यांसुधी तेना खानपाननो त्याग.

२ एकलआहारी—एक स्थाने बेसीने नियमीत एकज वखत निरवद्य-निर्दोष अन्न पाननुज सेवन करवु

३ गुरु साथे पदचारी—गुरु महाराजने आगळ करी तेमनी पछवाडे विनयपूर्वक उघाडा पगे वाहन वगर चालवु

४ भूमिसंथारी—माचा, पलंग तजी केवळ भूमि उपर संथारवु

५ ब्रह्मचर्यधारी—यात्राना दिवसोमां स्त्री पुरुषोए विषय क्रिडानो संतोषपूर्वकथी त्याग करी निर्मळ शील पाळवु

६ आवश्यक दोषधारी—उभय टंक देवसी अने राइ प्रतिक्रमण करी लागेलां सद पण दूषण टाळवा सज्जी थवु, अन्य स्थळे "आवश्यक दोषधारीना बदले शुद्ध सम्यक्त्वधारी" एम कहेलु छे एटले कोइ प्रकारना लौकिक के लोकोत्तर मिथ्यात्व सेवनथी सदतर अळगा रहेवा प्रयत्नशील थावु

नवाणु यात्रा करनारे उक्त छरी उपरांत करवानी करणी

१ एक लाख नवकार—महामंत्रनो जाप पुरो करवो उक्त जाप स्थिर चित्तथी (मन वचन अने कायानी शुद्धिथी) गणवो उचित छे जाप गणतां कोइ साथे वार्तालाप नज करवो मार्गमां चालतां

गणवा करता स्थिर मुकामे गणवो सारो छे केमके चालतां जीव जयणा पाळवानो खास ख्याल करवो जोइए. जो दर हमेश (बांधी) १० नवकारवाळी गणी शकाय तो ९९ दिवसे ते जाप पुरो थइ शके. कारणसर कदाच न गणी शकाय तो ते आगळ पाछळ गणीने पण छेवटे पुरो लक्ष जाप गणी देवो

२ प्रतिदिन तीर्थ जळादिकथी शुद्ध थइ शुद्ध वस्त्र अलंकार धारण करी जयणा सहित, बनी शके त्या सुधी निरंतर एक एकज यात्रा आशातना टाळीने करवी

३ दररोज बनी शके त्या सुधी अष्ट प्रकारी पूजा करवी तेमा वापरवाना द्रव्य पोताना घरना शुद्ध निर्दोष वापरवा

४ जोके दरेक जिनमंदिरमा प्रभुना दर्शन करता 'नमो जिणाण' अथवा एकाद नमस्कार श्लोक प्रमुखथी सामान्य चैत्यवंदन तो करवुज, परंतु मनहर पाचक स्थळे विशेष चैत्यवंदन प्रमुख करी भावनी वृद्धि थाय तेम करवु

५ मूळनायक श्री आदीश्वर भगवानना देरासर फरती त्रण प्रदक्षिणा (बनता सुधी बीजा बधा चैत्योना दर्शन साथे साथेज थई जाय तेम) दरेक यात्रा वखते देवी.

६ श्री तीर्थराज आराधन अर्थे तेमना उत्तम गुणनु स्मरण करीने प्रतिदिन ९ खमासमण देवां. तेमज नव लोगस्सनो काउस्सग विगेरे यथायोग्य करवु.

७ ९९ यात्रानी पूर्णाहुति थतां एकी साथे मूळनायकजीना चैत्यफ-

रती ०० प्रदक्षिणा तेमज १०८ खमासमण देवां तेवीज रीते यथाशक्ति विशेष प्रकारे प्रभुनी पूजा (०० प्रकारी विगेरे) भणाववी अने तेवे प्रसगे यथाशक्ति द्रव्य भाववी भक्तिनी वृद्धि थाय तेम लक्ष राखवु

८ वधी पागोनी फरसना करवा उपरात गिरिराजनी ६ गाउनी, १२ गाउनी विगेरे प्रदक्षिणा फरवा बनतो खप करवो तेवे प्रसगे अनता मुखी खुल्ला पगे चाली जयणापूर्वक पूर्वोक्त मर्यादा सहित गिरिराजनी सेवा भक्ति करवी

९ प्रतिदिन यात्रार्थे जता मार्गमा प्रभुनी पादुकाओ तेमज सिद्ध थयेला महाशयोनी प्रतिमाओ आवे तेमने भाव सहित नमन पूजन विगेरे करवा लक्ष राखवु पासे थईने अनादर करी चाल्या जवु नहि.

सात छठ्ठ अने बे अठ्ठमनो तप करी श्री गिरिराजनु ध्यान करता यात्रादिकनो प्रमाद रहित लाभ लेवो

साते छठ्ठमां अनुक्रमे आवी रीते जाप जपता २० नव कारवाळी गणवी तेमज २१ लोगस्सनो काउस्सग तथा २१ खमासमणा (गिरिराजना उत्तम २१ गुण गर्भित नामना दुहा बोलीने) देवा अने अठ्ठममा	१ श्री आदीश्वर परमेष्ठिने नम २ श्री आदीश्वर अर्हते नम ३ श्री आदीश्वर नाथाय नम ४ श्री आदीश्वर सर्वज्ञाय नम ५ श्री आदीश्वर पारगताय नम ६ श्रीशत्रुजयसिद्धक्षेत्रपुडरीकाय नम ७ श्री सिद्धक्षेत्र पुडरीक विमल-गिरिश्वराय नम ८-९ श्री सिद्धाद्रि शत्रुजय सिद्धगिरिवराय नम

खास अगत्यनी सूचना (लक्षमा राखवा योग्य)

१. जयणा पूर्वक साते शुद्धि साचवीने यात्रार्थे जता विकथा-दिक प्रमाद सेववो नहि विकथाथी पोतानु तथा परनु पण बगडे छे. तेथी हृदयमां श्री गिरिराजना गुणनु स्मरण करता करतां वधता शुभ परिणामे उपर चढवु

२. धर्मनु मूळ विनय होवाथी नम्रता राखी चालनु यात्रार्थे जता देहनु दमन करवु. खास मोटी मांदगी विगेरे कारण वगर ' डोळी ' करी तेमा बेसी जवा करता खुल्ला पगे चालीनज बीजा कोईने तक-लीफ आप्या शिवाय यात्रा करवी. प्रभु पूजा चैत्यवंदनादिक वखते पण विनयगुण विसरी जवो नहि सद्गुणी साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका विगेरेनु यथायोग्य मान साचववा भूलनु नहि

३ तीर्थजळ पवित्र होवाथी तेने उष्ण करी के करावी स्नान क रवा करता ते शुद्ध जळथीज जयणा पूर्वक स्नान करी प्रभु पूजनमा प्रवृत्त थवु युक्त छे

४. यात्रा पूजादिकमा भाईओए तेमज व्हेनोए बरोबर पोतपोता नी मर्यादा साचववा सभाळ राखवी एकज स्थळे पूजन विगेरे क-रता मर्यादा जळवाय नहि तो बीजा स्थळे भाव सहित प्रभुभक्ति करी लेवी.

५ डुगर पूजा करवा जता मार्गमाज पगथीया उपर पुष्पादिक चढाववा करतां खास नियमित स्थळोए के डुगरमांनी कोई अलायदी शीला उपर पुष्पादिक चढाववा युक्त छे. तेवे प्रसंगे नजरे पडती

अशुचि विगेरे आशातना दूर करवा कराववा पूरतुं लक्ष राखवा चुकवुं नहि.

६ स्नान करती वखते पहेरवानुं वस्त्र पोतपोतानुं अलायदुंज राखवुं दुरस्त छे, तेमज तेम करवाथी मीनुं अंग नहि लुछता अलायदा अंगुछा विगेरेथीज शरीर साफ करवुं युक्त छे. एम करवाथी शरीरनी आरोग्यता जळवाशे अने अन्यथा थती आशातना पण दूर थइ शकशे. आ बाबत उपेक्षा करवी नहि

७ प्रभु पासे धरवा माटे फळ, फूल विगेरे जे उत्तम द्रव्य लइ जवाना होय ते जेम तेम अनादरथी नहि लइ जता आदर पूर्वक लइ जवां मार्गमां जतां केटलाक मुग्ध यात्राळुओ श्रीफळने चोटीथी झाली लइ जता देखाय छे ते अनुचित छे श्रीफळ आदिक आदर सहित बे हाथमां अथवा स्थाळ प्रमुखमां राखीनेज लइ जवुं उचित छे

८ यात्रार्थे जतां उपर मार्गमां पण कोई पण प्रकारे अशुचि प्रमुख आशातना न थाय एवी संभाळ राखता रहेवुं

९ यथाशक्ति पोरसी प्रमुखनुं पच्चखाण करीनेज उपर चढवुं केमके अत्र करेलुं थोडुं पण पच्चखाण महान् लाभ आपे छे

१० आ क्षेत्रमां दरेक रीते सीदाता साधर्मी भाईओने विवेक सहित सहाय आपी धर्ममार्गमां जोडवा प्रयत्न करवो.

११ देह उपरनी माया ओछी करी सुखशीलपणुं तजीने अत्र स्वशक्ति अनुसारे दान, शील, तप अने भावरूप धर्मनुं सारी रीते

सेवन करवु. आ पुण्यक्षेत्रमां विवेकथी करेली धर्मकरणी महालाभकारी थाय छे.

१२. प्रतिदिन यथाशक्ति सुधी जयणापूर्वक (जीवनी विराधना न थाय तेम) एकज यात्रा करवी मोटा पर्व दिवसे बीजी यात्रा करवा खास इच्छा थाय तो ते बहु स्थिरता साथे जयणा पूर्वक विधि युक्त करवी.

१३ केटलाक अणसमजु भाइओ देरासर के देरी विगेरेनी भींतो उपर पेनसील के कोयला वती पोताना नाम लखी के लखे तेना चित्र काढीने भींतोने काळी करी आशातना करे छे, आवी रीते पोतानु नाम अमर करवाने इच्छता मूढ जनो पोताना नाम उपर तीर्थनी आशातनारूप मशीनो कुचो दे छे माटे तेम समजु माणसोए जाते नहि करता अन्यने समजाववा, वारवार प्रयत्न करवो.

१४ केटलाक यात्रालुओ बहु अजवाळामां यात्राए जाय छे, तेम नहीं जता सारी रीते अजवाळु थया बाद जयणा सहित पगे चाली यात्रा करवी युक्त छे

१५ केटलाक यात्रालुओ खास कारण वगर डोळी करी यात्राओ करे छे तेथी तेमना निमित्ते डोळीवाळा उपर केटली जातनी आशातना करे छे ते संबंधी विचार करी समजु माणसोए तेवी अविधि आशातना वर्जीने ज बनता सुधी यात्रानो लाभ लेवो जोइए

१६ यात्राए आवेला भाइ बहेनोए प्रभुपूजा, गुरुवंदन, सत्त्वानुकंपा (प्राणी-दया), सुपात्रदान, गुणानुराग अने आत्मश्रवणरूप पो-

ताना नित्यकृत्य विसारी नहि देतां ते नियमसर सेववा जोइए.

१७ अत्र सदा साधर्मिक जनोनी बनी शके तेटली सेवा भक्ति वडे आराधना करवी परंतु तेनी कोई रीते विराधना तो करवी नहिज

१८ तीर्थभक्ति माटे जेटलु तन, मन, धनथी कराय ते ओछुज छ एम समजी जे कंई यथाशक्ति करवामा आवे तेनो गर्व तो करवोज नहि, पण पूर्व पुरुषोनु दृष्टांत लई स्वलघुताज भाववी

१९ अत्र माय. कोईपण जातना पापमां प्रवृत्ति न थाय तेवी काळजी राखवी कोई पण जातनी सगतिथी अळगा रहेवु सर्व जीवने आत्मा समान लेखी दयानी लागणी वधारवी अने परिणामनी शुद्धि करवी

२० कोइने कर्कश—कठोर के मर्म वचन कहेवु नहि, मिष्ट प्रिय वचनज वदवु गमे तेवा प्रसंगमा पण असत्य अने कटुक वचन नज कहेवुं

२१ आपणी वृत्ति देखी बीजा तेनी अनुमोदना करे अने तेनु अनुकरण पण करे तेवी शांत-निर्मळ-प्रमाणिक-निष्कपट वृत्ति अत्र विशेषे राखवी शासननी प्रभावनानो ए सरल रस्तो छे

२२ कोइ प्रकारना दुर्व्यसनथी अत्र सदंतर दूर रहेवाज प्रयत्न करवो आवा पवित्र स्थळे तो केवळ धर्म सेवननुज व्यसन राखवु

२३ तीर्थ भक्तने छाजे तेवीज रहेणी कहेणी अत्र राखी रहेवु

२४ कोइ रीते अनीति के अन्यायने उत्तेजन मळे तेम नहि करता, न्याय नीतिनेज उत्तेजन मळे तेम जाते करवु, अने बीजा पासे कराववु

२५ आवा उत्तम तीर्थे आववानो शो हेतु छे? ते पार पडे छे के नहिं? तेमां कसुर थती होय तो तेने सुधारी लेवानी कायम काळजी राखी पोतामां जोता रहेवुं.

२६ तीर्थंकर भगवान समान पवित्र आ तीर्थराजनी सेवा भक्तिनो लाभ आपणने अनेकवार मळे तेवी चीवट राखी प्रसंग पामी तेवो लाभ लेवा प्रमाद न करवो

२७ कोइ पण प्रकारना कदाग्रहथी अत्र सदन्तर दूरज रहेवुं.

श्री सिद्धगिरिना आश्रयथी उद्धार पामेला कडुराजा

पूर्वे कडु नामे चंद्रपुरीनो राजा हतो ते अनेक रोगो व्यसनोमां ग्रस्त महापापी अने घणा अधर्मी हता अनेक अन्यायाचरणथी प्रजाने पीडता तने क्षयरोग उत्पन्न थयो, तेथी तेनो देह क्षीण थवा माड्यो, पछी तेने चित्तमां जेम धर्मनुं स्मरण थयुं मूढबुद्धिवाळा जीवो ज्यां सुधी सर्व रीते सुखी होय छे त्यांसुधी धर्मने किंचित् मात्र संभारता पण नथी परंतु ज्यारे मृत्युनो भय लागे छे त्यारेज तेओ धर्मने याद करे छे.

एकदा ते कडुराजा पोते करेला अन्यायाचरणने संभारतां खिन्न चित्ते सभामां बेठो हतो, एटलामां कल्पवृक्षना पत्र उपर लखेलो एक दिव्य श्लोक कोइए आकाशमांथी मूक्यो तेनी पासे आवी पड्यो ते श्लोक तेना पुन्यशाळी पूर्वजोना पुन्यथी वश थयेलो तेनी गोत्रदेवी

"अविकार" तेने जाग्रत करवा नीकळेलो हतो तेनो भावार्थ ए हतो के "पूर्व भवमां करेला सुकृतथी सघळी संपत्तिने पाम्या छतां जे महात्मा आ भवमां धर्मनेज विसारी देछे ते स्व स्वामीद्रोह करनार महा पातकीनुं श्रेय शी रीते थइ शके ?" उक्त श्लोकनो भावार्थ मनमां विचारी पोते करेला अनेक अन्यायाचरणने संभारी बहु खेद पामतो चिंतातुर थयेलो ते राजा रात्रीना वखते एकलो राज्य छोडी मरवाने माटे निश्चय करी चाल्यो नीकळ्यो जेवो ते नगर बहार नीकळ्यो के तरतज एक सुंदर गाय तेना जोवामां आवी ते गाय राजानी सामे धसी आवी तेने प्रहार करवा लागी ते जोइ राजाए पण रीसथी खड्ग उगामीने ते गायना बे टकडा करी नाख्या तेमांथी एक हाथमां कातो लइने भयंकर स्त्री नीकळी ते स्त्रीए आक्रोश करी तेने युद्ध करवा कह्युं जेथी ते स्त्रीना गर्वयुक्त वचन सांभळी जेवो तेनी सामे खड्ग उगामवा जाय छे तेवामां ते स्त्रीनी कातीवडे पोताने घाथाइ गयेलो अने रुधिर झरतो जोइ कइगजा रहुन खेद पाम्यो, पछी ते स्त्रीए तेने पुनः युद्ध करवा जणाव्युं तेथी ते शोकसागरमां डुबी गया छतो विचारवा लाग्यो के—अहो ! दैव ज्यारे विपरीत थयु त्यारे हुं एक स्त्रीथी पण पराभव पाम्यो अहो ! हुं मरवा माटेज नीकळ्यो हतो ते भूली जइ आ गौहत्यानुं महापाप कर्युं हवे मारी शी गति थशे? हवे आपत्तिमां आवी पडेलो हुं शुं करुं ? अथवा "दव बळे त्यारे कुवो खोदवो शा कामनो ?"

आवी रीते ते शोकग्रस्त बनी विचार करतो हतो तेवामां तेने ते सुंदर युवती, जे अंबिका हती, तेणे कह्युं के हे मूढ ! हजी तारा चि-

तारामां धर्म बुद्धि प्रगटी नथी फक्त तुं दुःखाविष्ट थवाथी हरणा तेने
संभारे छे जोके मदांधपणे तें अनेक कुकृत्यो कर्यां छे, तोपण हवे तुं
धर्मनो आश्रय ले कारण के तेना जेवो कोइ उपकारी नथी. छेवटे पण
जे तेना आश्रय ले छे, तेने ते तारे छे हुं "अंबिका" नामे तारी गोत्रदेवी
छुं. तारी परीक्षा करवा माटे में आ रीते प्रवृत्ति करी छे. हजु तारामां
धर्मनी योग्यता नथी, तेथी तुं देशाटन अने तीर्थाटन कर क्षमायुक्त
सर्व दुःख सहन कर पछी ज्यारे तारामां योग्यता जोइश त्यारे फरी
प्रगट थइ तने उचित मार्ग जणावीश एम कही देवी अंतर्धान थइ
गइ. कडगराजा विचारे छे के हजु मारुं भाग्य जागतुं छे, के मारी गोत्र
देवीए हित बुद्धिथी मने दर्शन दीधुं हवे हुं प्रमादरहित एवो उद्यम
करुं के जेथी थोडाज वखतमां धर्मने योग्य थइ आत्महित साधी शकुं एम
विचारी प्रभाते ते त्यांथी कोइ दिशा तरफ चाली नीकळ्यो. प्रसन्न
चित्त थवाथी ते दुःख भूली गयो पछी ते कोइएक गिरि उपर आवी
रात्री वास रह्यो, पाछले प्रहरे कोइक वैरी यक्षे प्रगट थइ क्रोध युक्त
वचनथी कह्युं के हे दुष्ट! तें पूर्वे मने मारी, मारी स्त्रीनुं हरण कर्युं छे
ते तने सांभरे छे? हवे तारुं मरण नजदीक आव्युं छे माटे तारा इष्ट
नुं स्मरण कर एम कही तेणे तेनी बहु परे कदर्थना करी. छेवटे तेने
कोइ एक गुफामां जीवतो मूकीने यक्ष अंतर्धान थइ गयो. आ वखते
ते राजा पोते पूर्व करेलां अन्यायाचरणने संभारी संभारी मनमां चिंतवे
छे के आ दुःख ते शुं मात्र छे? शुं जाणे तेनां केवां कडुक फल आगळ
भोगववां पडशे?

एवी रीते पोताना दुष्कृत्योनी निंदा करतो ते पापना क्षय माटे अहीं तहीं भमवा लाग्यो एवामा तेनी गोत्रदेवी अंबिका प्रगट थइ बोली के हे वत्स ! हवे ज्यां त्यां फरवानी तने जरुर नथी फक्त शत्रुंजयगिरिनुज तु सेवन कर तें पूर्व एवा दुष्कृत्यो कर्या छे के ते गिरिराजनु सेवन करवाथीज सर्व पापनो क्षय थइ शकशे ते वगर तेनो क्षय थइ शकशे नहि. एवी रीते गोत्रदेवीए कहेला हितकारी वचनो सांभळी अने तेनाज मुखे ते गिरिराजनो मोटो महिमा श्रवण करी, अति उत्साहपूर्वक ते तीर्थराज तरफ चाली नीकळ्यो अने तेना दर्शन थाय त्यांसुधी तेणे खानपाननो त्याग कर्यो अनुक्रमे गिरिराजना अने एक शांत मुनिना तेने दर्शन थया मुनिना सदुपदेशथी तेणे तेमनी पासे चारित्र अंगीकार कर्युं चारित्र अंगीकार करी अनुक्रमे श्री तीर्थराजने शुद्ध भावथी भेटी, तीर्थाधिपति श्री आदिनाथनां वारंवार अनिमेषपणे दर्शन करी, ते महादुष्कर तप करवा लाग्यो तेथी तेना सकळ कर्म क्षीण थइ गया अने शुद्ध ध्यान योगे ते शिव रमणीनो भोक्ता थयो एवी रीते एक निराशी जे भव्यजनो श्रीशत्रुंजय तीर्थनु तेमज श्री आदीश्वर प्रभुनु सेवन करशे, ते पण कडू नरपतिनी पेरे सर्व दुःखनो अंत करी अनुक्रमे परमपद पामशे जितारी राजा पण ए तीर्थाधिराजना सेवनथी सर्व रीते सुखी थयो शातनु राजा पण पोताना पुत्रो सहित शत्रुंजय तीर्थ तथा श्री शत्रुंजयी नदीनु सेवन करी पोताना दुःखनो अंत करी सुख समृद्धि पाम्यो पूर्व कर्मना योगथी कोढ रोगादिक थयेलो महीपाळ कुमार फक्त सूर्यकुंडना जळना स्पर्श मात्रथी रोग मुक्त थइ कांचन जेवी कायावाळो थयो

एवी रीते तीर्थपतिना सेवनथी कइक जीवोना कल्याण थया छे, थाय छे, अने भाविकाळे पण थशे

जो के ए गिरिराज उपर काळनी अनंतताथी अनंत कोटि जीवो सिद्धिपद पाम्या छे, तोपण वर्तमान चोवीशी विगेरेमा सिद्धिपद वरेल जीवोनी अत्र टुक नोंध आपवामा आवे छे

कोण	केटली संख्या
श्री ऋषभदेव प्रभुना असंख्यराजाओ	असंख्याता.
श्री पुंडरीक गणधर (ऋषभदेव स्वामीना प्रथम गणधर)	पांचक्रोडसाथे.
द्राविड वारिखिल्ल (ऋषभदेव प्रभुना पौत्रो)	दश क्रोड साथे.
आदित्ययशा (आदिनाथना पौत्रो)	एक लाख साथे.
सोमयशा (आदिनाथना पुत्र)	तेर क्रोड साथे.
बाहुबलिना पुत्र	एक हजार ने आठ
नमि विद्याधरनी पुत्री चर्चा प्रमुख	चोसठ.
नमि विनमि विद्याधरो	बे क्रोड साथे
सागरमुनि	एक क्रोड साथे,
भरतमुनि	पांच क्रोड साथे.
अजितसेन	सत्तर क्रोड साथे.
अजितनाथ प्रभुना साधुओ	दश हजार.
श्री सार मुनि	एक क्रोड साथे.
श्री शांतिनाथ प्रभुसाथे चतुर्मास रहेल	१५२५५७७७मुनिओ.
राम भरत (दशरथ पुत्रो)	त्रण क्रोड साथे.

पाच पाडवो	वीश क्रोड मुनिओ साथे
वसुदेवनी स्त्रीओ	पाचीश हजार
वैदर्भी	चुमाळीशसे (४४००)साथे
नारद ऋषि	एकाणु लाख (साथे)
शांब प्रद्युम्न	साडाआठ क्रोड साथे,
दमितारि मुनि	चौद हजार साथे.
थावच्चा पुत्र	एक हजार साथे
शुक परिव्राजक (शुकाचार्य)	एक हजार साथे
सेलगाचार्य	पाचसे साधु साथे
सुभद्रमुनि	सातसो साधु साथे
कालिक मुनि	एक हजार साथे
कदंब गणधर (गत चोविशीमा)	एक क्रोड साथे
संप्रति जिनना थावच्चागणधर	एक हजार साथे

आ शिवाय ऋषभसेनजिन प्रमुख असंख्याता, देवकीजीना छ पुत्रो, जाळी मयाळी ने उवयाळी (जादव), सुव्रत शेठ, मंडकमुनि, सुकोसलमुनि, तेमज अयमत्तामुनि विगेरे संख्या रहित महात्माओ अत्र सिद्धि पद वर्या छे

अत्र थयेला १६ मोटा उद्धारोनी टुंक नोंध

१ भरतचक्रवर्तीए श्रीनाभ गणधरनी साथे यात्रा कराव्यो
२ भरतचक्रवर्तीनी आठमी पाटे थयला दंडवीर्य भूपाले कराव्यो.
३ सीमंधर स्वामीनो उपदेश श्रवण करी इशानेन्द्रे कराव्यो

४ चोथा देवलोकना इन्द्र माहेन्द्रे कराव्यो
५ पांचमा देवलोकना स्वामी ब्रह्मेन्द्रे कराव्यो
६ भुवनपतिना इन्द्र चमरेन्द्रे कराव्यो
७ अजितनाथ स्वामीना वखतमां सगर चक्रवर्तीए कराव्यो
८ अभिनन्दन स्वामीना उपदेशथी व्यंतरेन्द्रोए कराव्यो
९ चन्द्रप्रभुना शासनमां चन्द्रशेखर मुनिना उपदेशथी तेमना पुत्र चन्द्रयशाए कराव्यो
१० श्री शांतिनाथजीना पुत्र चक्रायुधजीए देशना सांभळीने कराव्यो.
११ श्री मुनिसुव्रत स्वामीना शासनमां रामचन्द्रजीए कराव्यो
१२ श्री नेमिनाथजीना उपदेशथी पांडवोए देव सहायथी कराव्यो
१३ जावडशा शेठे वज्रस्वामीनी सहायथी संवत् १०८मां कराव्यो
१४ श्री कुमारपाळ राजाना वखतमां बाहडमंत्रीए १२१३मां कराव्यो
१५ समराशा ओसवाळे संवत् १३७१ मां कराव्यो
१६ करमाशा शेठ संवत् १५८३ मां कराव्यो

आ मुख्य उद्धारोनीज वात छे ते शिवाय शत्रुंजय कल्पमां कह्या मुजब अत्र असंख्य उद्धारो, असंख्य चैत्यो अने असंख्य प्रतिमाओ थएल छे. आ उपरथी आ उत्तम गिरिराजनो ज प्रभाव जाणवो

"प्रतिदिन जाप (स्मरण) करवा योग्य आ तीर्थराजना अनेक उत्तम नामोनी यादी"

१ शत्रुंजय, २ बाहुबली, ३ मरुदेव, ४ पुंडरीकगिरि, ५ रैवतगिरि, ६ विमलाचल, ७ सिद्धराज, ८ भगीरथ, ९ सिद्धक्षेत्र, १० सहस्रकमल, ११ मुक्तिनिलय, १२ सिद्धाचल, १३ शतकूटगिरि, १४ ढंक, १५ कोडी निवास, १६ कदंबगिरि, १७ लोहित्य १८ तालध्वज, १९ पुण्यराशि, २० महाबल अने २१ दृढ शक्ति, २२ शतपत्र, २३ विजयानंद, २४ भद्रंकर, २५ महापीठ २६ सुरगिरि, २७ महागिरि, २८ महानंद, २९ कर्मसूदन, ३० कैलास, ३१ पुष्पदंत, ३२ जयंत, ३३ आनंद, ३४ श्रीपद, ३५ हस्तगिरि, ३६ शाश्वतगिरि, ३७ भव्यगिरि, ३८ सिद्धशेखर, ३९ महायश, ४० माल्यवंत, ४१ पृथ्वीपीठ, ४२ दुःखहर, ४३ मुक्तिराज, ४४ मणिकंत, ४५ मेरुमहीधर, ४६ कंचनगिरि, ४७ आनंदघर, ४८ पुण्यकंद, ४९ जयानंद, ५० पातालमूल, ५१ विभास, ५२ विशाल, ५३ जगतारण, ५४ अकलंक, ५५ अकर्मक, ५६ महातीर्थ, ५७ हेमगिरि, ५८ अनंतशक्ति, ५९ पुरुषोत्तम, ६० पर्वतराजा, ६१ ज्योतिरूप, ६२ विलासभद्र, ६३ सुभद्र, ६४ अजरामर, ६५ क्षेमंकर, ६६ अमरकेतु, ६७ गुणकंद, ६८ सहस्रपत्र, ६९ शिवंकर, ७० कर्मक्षय, ७१ तमोकंद, ७२ राजराजेश्वर, ७३ भवतारण, ७४ गजचंद्र, ७५ महोदय, ७६ सुरकांत, ७७ अचल, ७८ अभिनंद, ७९ सुमति, ८० श्रेष्ठ, ८१ अभयकंद, ८२ उज्ज्वलगिरि, ८३ महापद्म, ८४ विश्वानंद, ८५ वि

मयभद्र, ८६ इन्द्रप्रकाश ८७ कपर्दीवास, ८८ मुक्तिनिकेतन, ८९ केवल-दायक, ९० चर्चगिरि, ९१ अष्टोत्तर शतकूट, ९२ सौंदर्य, ९३ यशोधर, ९४ प्रीतिमंडन, ९५ कामुक काम 'कामदायी' ९६ सहजानंद, ९७ महेन्द्र ध्वज, ९८ सर्वार्थसिद्ध, ९९ प्रियंकर.

आ नामो सिवाय श्री शत्रुंजय माहात्म्यमां ब्रह्मगिरि, नान्दिगिरि, श्रेयःपद, प्रभो पद, सर्वकामद, क्षितिमंडळमंडन, सहस्राख्य, तापसगिरि, स्वर्गगिरि, उमाशंभुगिरि, स्वर्णगिरि उदयगिरि अने अर्बुदगिरि, विगेरे नामो पण जणाय छे

श्रीशत्रुंजय तीर्थ संबंधी एकवीश नामना गुण गर्भित एकवीश खमासमण आपवाना दोहा

१ सिद्धाचल समरुं सदा, सोरठ देश मोझार, मनुष्य जन्म पामी करी, वंदुं वार हजार १ [१]अंग [२]वसन [३]मन [४]भूमिका, [५]पूजोपगरण सार, [६]न्यायद्रव्य [७]विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार २. कार्तिक शुदि पुनम दिने, दश कोटी परिवार, द्राविड वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार ३. तिणे कारण कार्तिक दिने, संघ सयल परिवार, आदि जिन सन्मुख रही, खमासमण बहुवार ४ एकवीश नामे वर्णव्यो, तिहां पहेलुं अभिधान, शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहुमान ५. (अहींयां "सिद्धाचल समरुं सदा" ए दुहो प्रत्येक खमासमण दीठ कहेवो) १.

---

[१] शरीर शुद्धि २ वस्त्र शुद्धि ३ चित्त शुद्धि, ४ भूमि शुद्धि, ५ उपगरण शुद्धि, ६ द्रव्य शुद्धि, ७ यथार्थ विधिशुद्धि

१६ शिवरहु विशाल उतसे, मडप रचियो सार, मुनिवर वर चेठक भर्णी, पृथ्वीपीठ मनोहार ३० सि० १६.

१७ श्री सुभद्रगिरि नमो, भद्र ते मगल रूप, जगतरज गिरिवर भर्णी, शिस चढावे भुप ३१ सि० १७

१८ विद्याधर सुर अपच्छरा, नदी सनुजी विलास, करता दरता पापने, भजीये भवि कैलास ३२ सि० १८

१९ बीजा निरवाणी प्रभु, गइ चोवीशी मोझार, तस गणधर मुनियां वडा, नामे कदब अणगार ३३. प्रभु वचने अणसण करी, मुक्तिपुरिमा वास, नामे कदंबगिरि नमो, तो होय लील विलास ३४ सि० १९

२० पाताले जस मूल छे, उज्वल गिरिनु सार, त्रीकरण योगे वदता, अल्प होये ससार ३५ सि० २०

२१ तन मन धन सुत वल्लभा, स्वर्गादिक सुख भोग; जे वछे ते सपजे, शिवरमणी सयोग ३६ विमलाचल परमेष्टीनु, ध्यान धरे खट मास, तेज अपूरव विस्तरे, पुरे सघळी आश ३७ त्रीजे भव सिद्धि लेहे, ए पण प्रायिक वाच, उत्कृष्टा परिणामथी,अतर मुहूर्त साच ३८ सर्व कामदायक नमो, नाम करी ओळखाण, श्री शुभवीरविजय प्रभु, नमता कोड कल्याण ३९ सिद्धा० २१

शत्रुंजय तीर्थना उत्तम २१ नाम गर्भित चैत्यवंदन.

सिद्धाचळ शिखरे चढी, ध्यान धरो जगदीश,
मन वच काय एकाग्र शु० नाम जपो एकवीश. १
१ शत्रुंजय गिरि वंदिये, २ बाहुबलि गुणधाम,
३ मरुदेव ने ४ पुंडरीकगिरि, ५ रैवतगिरि विश्राम २
६ विमलाचळ ७ सिद्धराजजी, नाम ८ भगीरथ सार,
९ सिद्धक्षेत्र ने १० सहस्र कमल, ११ मुक्ति निलय जयकार ३
१२ सिद्धाचल १३ शतकूट गिरि, १४ ढंक ने १५ कोडिनिवास,
१६ कदंबगिरि, १७ लोहित्य नमो, १८ तालध्वज १९ पुण्यराश ४
२० महाबल ने २१ दृढ शक्ति सही, एम एकवीश नाम,
साते शुद्धि समाचरी, करिये नित्य प्रणाम. ५
[1]दग्ध [2]शून्य ने [3]अविधि दोष, अति [4]प्रवृत्ति जेह,
चार दोष छंडी भजो, भक्ति भाव गुणगेह. ६
मनुष्य जन्म पामी करी, सद्गुरु तीरथ योग,
श्री शुभवीरने शासने, शिव रमणी संयोग ७

---

१ धर्मकरणी करता अन्य ध्यानमां मनना क्षेप विक्षेप करवो
२ उपयोग शून्य जड्यम् संमुर्छिमनी पेरे करणी करवी
३ जे करणी जेम करवी कही होय ते उलटसुलट स्वमतिथी करवी
४ स्वशक्ति तपस्या विना तेमज शास्त्र मर्यादा उल्लंघीने करणी करवी

योगीश्वर जस दर्शने, ध्यान समाधि लीन,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, हुआ अनुभव रस लीन २०
मानु गगने सूर्य शशी, दिये प्रदक्षिणा नित्य,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महिमा देखण चित्त २१
सुर असुर नर किन्नरा, रहे छे जेहनी पास,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पामे लीलविलास २२
मंगलकारी जेहने, मृत्तिका हरिभेट,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कुमति कदाग्रह मेट. २३
कुमाने [1]कौशिक जेहने, देखी झाखा थाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, साचि तस महिमा गाय. २४
सूरज कुडना नीरथी, आधि व्याधि पलाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जस महिमा न कहाय २५
सुंदर टुक सोहामणी, मेरुसम प्रासाद,
ते तीरथेश्वर प्रणमीय, दूर टले विखवाद. २६
द्रव्य भाव वैरी तणा, जिहां आवे हाय शाल,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जाये भवनी भ्रात २७
जगहितकारी जिनवरा, आव्या एणे ठाम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जस महिमा उद्दाम २८
नदी शेत्रुजी स्नानथी, मिथ्या मल धोवाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सवि जनने सुखदाय २९
आठ कर्म जे सिद्धगिरि, न दीये ताव विपाक,

---

१ घूडो

ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जिहा नवि आवे वाक. ३०
सिद्धशिला [1] तपनीयमय, रत्नस्फाटिक खाण,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या केवल नाण ३१
सोवन रुपा रत्ननी, ओषधि जात अनेक,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, न रहे पातक एक ३२
सयमधारी सयमे, पावन होय जिण खेत्र,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, देखा निर्मल नेत्र ३३
श्रावक जिहा शुभ द्रव्यथी, उत्सव पूजा स्नात,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पोषे पात्र सुपात्र ३४
साहामिवत्सल्ल पुण्य जिहा, अनतगुणु कहेवाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सोवन फुल वधाय ३५
सुदर जात्रा जेहनी, देखी हरखे चित्त,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, त्रीभुवनमांहे विदित [2] ३६
पालीताणु पुर भलु, सरोवर सुदर पाल,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जाये सकल जजाल ३७
मनमोहन पागे चडे, पग पग कर्म खपाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, गुण गुणिभाव लखाय. ३८
जेणे गिरि रुख सोहामणा, कुडे निर्मल नीर,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, उतारे भवतीर [3] ३९

---

१ सुवर्णमय २ प्रसिद्ध–प्रख्यात ३ भवपार

मुक्तिमंदिर सोपान सम, सुंदर गिरिवर पाज,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, लहिये शिवपुर राज ४०
कर्मकोटि अरु विकटभट, देखी ध्रुजे अंग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दिन दिन चढते रंग ४१
गौरी गिरिवर उपरे, गावे जिनवर गीत,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सुखें शासनरीत ४२
कवड यक्ष रखवाल जस, अहोनिश रहे हजुर,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, असुरा राखे दुर ४३
चित्त चातुरी चक्केसरी, विघ्न विनासणहार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, संघ तणी करे सार ४४
सुरवरमां मघवा* यथा, ग्रहगणमां जिम चंद,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तिम सवि तीरथ इंद ४५
दीठे दुर्गति वारणो, समर्यो सारे काज,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सवि तीरथ शिरताज ४६
पुंडरीक पंच कोडीशुं, पाम्या केवल नाण,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कर्म तणी होय हाण ४७
मुनिवर कोडी दश सहित, द्राविड अने वारिखेण,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चढिया शिव निश्रेण. ४८
नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडी मुनि सार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिवपुर आथ ४९

---

*इंद्र

ऋषभवंशीय नरपति घणा, ईण गिरि पहोता मोक्ष,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, टाल्या घातिक दोष ९०
राम भरत त्रिहु बांधवा, त्रण कोडी मुनियुक्त,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ईणेगिरि शिव संपत्त ९१
नारद मुनिवर निर्मलो, साधु एकाणु लाख,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, प्रवचन प्रगट ए भाख. ९२
सांब प्रद्युम्न ऋषि कह्या, साडी आठे कोडि,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पूर्वकर्म विछोडि ९३
थावच्चासुत सहसशु, अणसण रंगे कीध,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, वेगे शिवपद लीध ९४
शुक परमाचारज वली, एक सहस अणगार;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिवपुर द्वार ९५
शैलग सूरि मुनि पांचसे, सहित हुआ शिवनार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अंग धरी उत्साह ९६
ईम बहु सिध्या ईणे गिरि, कहेता नावे पार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शास्त्रमांहि अधिकार ९७
बीज ईहां समकित तणुं रोपे आतम भोम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, टाले पातक स्तोम.[१] ९८
ब्रह्म स्त्री भ्रूण[२] गोहत्या, पापे भारित जेह,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पहोता शिवपुर गेह ९९

---

१ नाथ २ समुदाय (समूह). ३ गर्भ.

जग जोतां तीरथ सवे, ए सम अवर न दीठ,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तीर्थमांहे उत्तिठ[१] ६०
धन धन सोरठ देश जिहां, तीरथमांहे सार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, [२]जनपदमां शिरदार ६१
अहोनिश आवत ढुकडा, ते पण जेहने संग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिव वधु रंग ६२
विराधक जिनआणना, ते पण हुआ विशुद्ध,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाम्या निर्मल बुद्ध ६३
महाम्लेच्छ शासन रिपु, ते पण हुआ उपसंत,[३]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महिमा देखी अनंत ६४
मंत्र योग अंजन सवे, सिद्ध हुवे जिण ठाम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पातकहारी नाम ६५
सुमति सुधारस वरसते, कर्मदावानल संत,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, उपशम तस उल्लसंत ६६
श्रुतधर नित नित उपदिशे, तत्वातत्व विचार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ग्रहे गुणयुत श्रोतार.[४] ६७
प्रियमेलक गुणगण तणु, कीरतिकमला सिंधु,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, कलिकाले जगबंधु ६८
श्री शांति तारण तरण, जेहनी भक्ति विशाल,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दिन दिन मंगलमाल ६९

१ उत्कृष्ट २ देश ३ उपशांत ४ सांभळनार

श्वेत ध्वजा जस लहकतो, भांखे भविने एम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, भ्रमण करो छो केम ? ७०
साधक सिद्धदशा भणी, आराधे एक चित्त,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, साधन परम पवित्त. ७१
संघपति थई एहनी, जे करे भाव यात्र,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, तस होय निरमल गात्र. ७२
शुद्धातम गुण रमणता, प्रगटे जेहने संग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, जेहनो जस अभंग ७३
रायणवृक्ष सोहामणो जिहां जिनेश्वर पाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सेवे सुरनरराय ७४
पगलां पूजी ऋषभना, उपशम जेहने चंग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, समता पावन अंग. ७५
विद्याधरज मले बहु, विचरे गिरिवर शृंग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चढते नवरस रंग. ७६
मालती मोगर केतकी, परिमल मोहे भृंग,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पूजो भावि एकंग ७७
अजित जिनेसर जिहां रह्या, चोमासु गुणगेह,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, आणी अविहड नेह. ७८
शांति जिनेसर सोलमा, सोल कषाय करी अंत,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, चउर मास रहंत ७९

नेमि विना जिनवर सवे, आव्या छे जिण ठाम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शुद्ध करे परिणाम. ८०

नमि नेमि जिन अंतरे, अजितशांतिस्तव कीध,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नांदिषेण प्रसिद्ध ८१

गणधर मुनि उवज्झाय तिम, लाभ लह्या केई लाख,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, ज्ञानअमृत रस चाख ८२
नित्य घंटा टंकारवे, रणझणे झल्लरी नाद,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, दुंदुभि मादल नाद. ८३
जेणे गिरि भरत नरेश्वरे, कीधो प्रथम उद्धार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, मणिमय मूरति सार ८४
चौमुख चउगति दुःख हरे, सोवनमय सुविहार[1]
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अक्षय सुख दातार ८५
ईत्यादिक महोटा कह्या, सोल उद्धार सफार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, लघु असंख्य विचार ८६
द्रव्यभाव वैरी तणो, जेहथी थाये अंत,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शत्रुंजय समरंत ८७
पुंडरीक गणधर हुआ, प्रथम सिद्ध ईणे ठाम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पुंडरीक गिरि नाम ८८
कांकरे कांकरे ईणे गिरि, सिद्ध हुआ सुपवित्र,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सिद्धक्षेत्र समचित्त ८९

१ उत्तम प्रासाद

मल द्रव्यभाव विशेषथी, जेहथी जाये दूर,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, विपलाचल सुखपूर. ९०

सुरवरा बहु जे गिरे, निवसे निरमल ठाण,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सुरगिरि नाम प्रमाण ९१

परवत सहुमाहे वडो, महागिरि तणे कहत,
रथेश्वर प्रणमीये, दरशन लहे पुण्यवंत ९२

पुण्य अनर्गल जेहथी, थाये पाप विनाश,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नाम भलु पुण्यराश. ९३

लक्ष्मीदेवी जे प्रण्यो, कुंडे कमल निवास,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पद्मनाम सुवास ९४

सवि गिरिमा सुरपति समो, पातक पंक विलात,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पर्वत इंद्र विख्यात ९५

त्रिभुवनमा तीरथ सवे, तेमा मोटो एह,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महातीरथ जस रेह ९६

आदि अंत नहि जेहनी, कोइ काल न विलाय,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, शाश्वतगिरि कहेवाय ९७

भद्र भला जे गिरिवरे, आव्या होय अपार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नाम सुभद्र संभार ९८

वीर्य वधे शुभ साधुने, पामी तीरथ भक्ति,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, नामे जे दृढशक्ति ९९

शिवगति साधे जे गिरि, ते माटे अभिधान;
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, मुक्तिनिलय गुणखाण १००

चंद सूरज समकित धरी, सेव करे शुभ चित्त,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पुष्पदंत विदित, १०१

भिन्न रहे भवजल थकी, जे गिरि ल्हे निवास,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, महापद्म सुविलास १०२

भूमि धरी जे गिरिवरे, उदधि न लोपे लीह¹
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पृथिवीपीठ अनीह १०३

मंगल सवि मल्वा तणुं, पीठ एह अभिराम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, भद्रपीठ जस नाम १०४

मूल जस पातालमे, रत्नमय मनोहार,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, पाताल मूल विचार, १०५

कर्म क्षय होये जिहां, होय सिद्ध सुखकेल,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, अकर्मक मन मेल १०६

कामित सवि पूरण होये, जेहनुं दरिसण पाम,
ते तीरथेश्वर प्रणमीये, सर्वकाम मन ठाम १०७

इत्यादिक एकवीश भला, निरुपम नाम उदार;
जे समर्या पातक हरे, आतम शक्ति अनुसार १०८

---

१ मर्यादा

कळश

इम तीर्थ नायक, स्तवन लायक, सथुण्यो श्रीसिद्धगिरि, अठोतरसय गाह स्तवने, प्रेमभक्ते मनधरी, श्रीकल्याणसागर सूरि शिष्ये, शुभ जगीशे सुख करी, पुण्यमहोदय सकळ मंगल, वेलि सुजसे जयसिरी इति सिद्धगिरी स्तुति.



उक्त तीर्थना संबधे केटलीक पवित्र वस्तुओनी ओळखाण अने तेनो अद्भूत महिमा

राजादनी (रायण वृक्ष) अने तेनी नीचे रहेल प्रभुनां चरण

आ रायणनु वृक्ष श्री ऋषभदेव भगवानना पादुकावडे पवित्र गणाय छे श्री ऋषभदेव भगवान अनेक वखत आवी ए रायण नीचे समवसर्या छे, तेथी ते पवित्र तीर्थना पेरे वंदनिक छे तेना पत्र, फळ तथा शाखा उपर देवताओना वास होवाथी प्रमादवडे ते तोडवा के छेदवा नहिं ज्यारे कोइ सघपति पूर्ण भक्तिभावथी तेनी प्रदक्षिणा दे छे त्यारे जो ते रायण तेना उपर हर्षथी दूध वर्षावे छे तो ते उभय लोकमा सुखी थाय छे जो तेनी शुद्ध द्रव्यथी आदर

सहित पूजा करवामा आवे तो ते स्वमना आवी सर्व शुभाशुभ कही दे छे वळी तेनी आदर सहित पूजा करवाथी भूत, वेताळ, शाकिनी, राक्षस, प्रमुखनो वळगाड होय ते पण जतो रहे छे अने बीजा विकार पण थइ शकता नथी ए उत्तम वृक्षना पत्र, पुष्प के शाखादिक सहेजे पडेला होय तो तेने आदर सहित लइ आवी औषनी जेम साचववां एनी जळनु सिंचन करवाथी सर्व विघ्ननी शांति थाय छे ए पवित्र वृक्षने साक्षी राखी जे दोस्ती बांधे छे ते अत्र अत्यंत सुख अनुभवी छेवटे परम पद प्राप्त करे छे ए रायणवृक्षथी पश्चिम दिशा तरफ एक दुर्लभ रसकुपिका छे, जे आस्था सहित अहम तपनु आराधन करे तेवो कोइक भाग्यवान् पुरुष तेना प्रभावथी ते रसकुपिका नो रस मेळवी शके छे ते रसना गंध मात्रथी लोढु सुवर्ण थइ जाय छे एक राजादनीज जो प्रसन्न होय तो बीजी शानी जरुर छे ?

शत्रुंजया नदी

सौराष्ट्र (सोरठ) देशमा अनंत महिमाथी पूर्ण अने अनंत सुकृतनु स्थान एवु शत्रुंजय नामे महातीर्थ छे तेना दर्शन, स्पर्शन, श्रवण अने स्तवनथी पण पापनो लोप थई जाय छे ते क्षणवारमा प्राणीओने स्वर्गना अने मोक्षना सुख आपे छे तेना जेवु अन्य लोकने पावन करनारु कोई पण बीजु तीर्थ नथी ते शत्रुंजय महातीर्थनी दक्षिण बाजुए प्रभाविक जळथी पूर्ण एक शत्रुंजया नामनी नदी छे शत्रुंजय महातीर्थने स्पर्शी रहेली होवाथी ते नदी महा पवित्र छे अने गंगा सिंधुना दिव्य जळथी पण अधिक फळदाता छे तेमां (विवेक

थी) स्नान करनारनुं सकळ पाप धोवाई जाय छे शत्रुंजय महातीर्थनी ते जाणे वेणी होय तेवी शोभे छे वळी ते गंगा नदीनी पेरे पूर्व दिशा तरफ वहेनारी, अपूर्व सुकृतनां स्थान रुप, अनेक उत्तम द्रहोवडे प्रभाववाळी अने अत्यंत आश्चर्य उत्पन्न करती छती शत्रुंजया, जान्हवी, पुंडरिकिणी, पापंकषा, तीर्थभूमि अने हंसा एवां अनेक नामथी प्रख्यात छे तेमा कदंबगिरि अने पुंडरिकगिरि नामना शिखरनी मध्यमां ' कमळ ' नामनो एक महा प्रभाविक द्रह छे तेना जळवडे अने मृत्तिका (माटी) नो पिंड करी जो नेत्र उपर बांधवामां आवे तो ' रताधळापणुं ' विगेरे अनेक प्रकारना नेत्र विकारनो नाश थई जाय छे वळी ते जळना प्रभावथी शाकिनी पण भूत वेताळादिक अन्य दोषो दूर जाय छे अने तेमां जीवनी उत्पत्ति थती नथी

श्री आदीश्वर भगवाननुं भव्य मंदिर

जेमा हाल मूळ नायक श्री आदीश्वर भगवान बिराजमान छे ते भव्य मंदिर संबंधी कुमारपाळ प्रबंधमां आवी हकीकत छे के एकदा कुमारपाळ राजाना 'उदयन' मंत्री सौराष्ट्र देशमां युद्ध प्रसंगे गया हता, ते वखते श्री आदीश्वर भगवानना दर्शन करवानी ईच्छा थी पोते शत्रुंजय गिरि उपर चढ्या त्यां शुद्ध श्रद्धा सहित प्रभुनी पूजा आरति प्रमुख कृत्य करीने ज्यारे चैत्यवंदन करवा बेठा त्यारे कोई एक उंदर दीवानी वाट लइ काष्टमय मंदिरनी फाटमां पेसतो हतो तेने पूजारीओए वारतां जोयो. ते जोई काष्टमय प्रासादनो नाश थई जवानी संभावना विगेरेथी खेद पामी मंत्रीश्वर मनमा विचार क-

खा लागया के मारी पासे सारी समृद्धि तथा अधिकार छतां आ
उत्तम तीर्थ उपरनो देरासरनो उद्धार कर्यो नथी त्यां सुधी मारी
सघळी संपत्ति निरर्थकज छे एम विचारी अभिग्रह लीधो के ज्यां
सुधी आ जिनमंदिरनो जीर्णोद्धार न थाय त्यां सुधी मारे ब्रह्मचर्य
पाळवु, एकज वखत भोजन करवु, भूमि उपर सूई रहेवु अने तांबु-
लनो त्यागज करवो. आवी रीतनो अभिग्रह धारीने पाटण तरफ पाछा
आवतां मार्गमाज मंत्रीश्वरनु मरण थयु ते वखते पोते ग्रहण करेलो
अभिग्रह सामंतोने जणावी कयु के आ मारो मनोरथ पूरो करवा
मारा पुत्रने कहेवु मंत्रीश्वरे ग्रहण करेला अभिग्रह मुजब सामंतोना
कहेवाथी तेना पुत्र वाग्भट (बाहड) मंत्रीए शुभ मुहूर्ते शत्रुंजय उपरना
मुख्य देरासरना जीर्णोद्धारनु काम आरंभ्यु लगभग बे वर्षे जीर्ण-
काष्टमय चैत्यना स्थाने नवीन आरंभेलु चैत्य तैयार थयु तेनी वधा-
मणी लावनारने मंत्रीए सुवर्णनी बत्रीस जीभो बक्षीस आपी. एवामां
बीजा कोई पुरुषे आवी ते चैत्यमां फाट पडयानु जणाव्यु, तेने मंत्रीए
सुवर्णनी चोसठ जीभो आपी कोईए तेनु कारण पूछवाथी मंत्रीए
जणाव्यु के अमारा जीवता तेम थयु ते ठीकज थयु केमके अमे
जातेज तेनो फरी उद्धार करावीशु पछी ते फाट पडवानु कारण
शोधी कढावीने माहे गरबारामां आवेली भमती भजबूत पाषाणो
वडे पूरावी नाखी त्रण वर्षे जीर्णोद्धारनु काम पुर्ण थयु ए
शुभ कार्यमां मंत्रीए लगभग त्रण क्रोड द्रव्यनो व्यय कर्यो विक्रम
संवत १२११ (क्वचित् १२१३) श्री हेमचंद्र आचार्ये

समस्त महोत्सव सहित उक्त चैत्य उपर सुवर्णमय दंड, कळश, अने ध्वज चढाव्या त्यारबाद बीजा उद्धार करनाराओए मूळ देवळ फरीने बधाव्युं जणातुं नथी, ए उपरथी मूळ नायकजीनुं वर्तमान भव्य देरासर बाहड मंत्रीश्वरनुं करावेलुं सिद्ध थाय छे देरासरनो आसार जोता पण प्रथम रांगेली भमती पूरी नाखेली होय एम अनुमान थइ शके छे

सुर्योद्यान तथा तेमा आवेलो सूर्यावर्त अथवा सूर्यकुंड

श्री शत्रुंजय गिरिनी पूर्व दिशामा सूर्योद्यान नामनुं अति अद्भुत नंदन वन सरखु उद्यान छे. आ उद्यानमा सर्व कार्यमा उपयोगी एवी अनेक दिव्य औषधीओ थाय छे तेमा सूर्यावर्त नामनो कुंड निर्मळ जळथी भरेलो छे, ते सर्व रोग सबंधी पीडानो नाश करे छे ए सूर्यकुंडना जळना एक बिंदु मात्रथी अढार प्रकारना कोढ दूर थइ जाय छे. चंद्रचूड नामना विद्याधर पोतानी प्रिया साथे चैत्री पूर्णिमानी यात्रा करीने विमानमा बेसी जतो हतो, त्या शत्रुंजय गिरिनी नजदीकमा आ मनोहर उद्यान जोइ पोतानी प्रियानी प्रेरणाथी विमान नीचे उतारी उद्यानमा तथा तेमा आवेला सूर्यावर्त कुंडमा यथेच्छ क्रीडा करी पाछा निवर्तता ते कुंडनु स्वभाविक निर्मळ जळ साथे लइ विमानमा बेसी चाल्या. मार्गमा चालता नीचे दृष्टि

नाखता महीपाळ राजानी चतुरंगी सेना तेमना जोवामा आवी. चारे तरफ घणा माणसोथी वींटायेला रोगार्त महीपाळ कुमारने जोइ करुणा लावी विद्याधर मत्ये तेनी प्रियाए कह्यु के–आपनी आज्ञा होय तो आपणी साथे राखेलु सूर्यावर्त कुंडनु जळ आ अति रोगार्त उपर सिंचु. विद्याधरनी अनुमतिथी तेणीए महीपाळ कुमार उपर ते प्रभाविक जळना बिंदुओ सेपच्या के तरतज तेनु शरीर रोगरहित–निरोगी बनी गयु जेम तापथी करमाइ गयेलु वृक्ष वर्षायोगे नवपल्लव थइ जाय छे तेम ते प्रभाविक जळना प्रयोगथी महीपाळनु शरीर पण नवपल्लव थयु. कुष्टादिक रोग मात्र दूर थवाथी तेनुं शरीर दिव्य कांतिवाळु बन्यु अद्यापि पण तेनो महिमा सुप्रसिद्ध छे

चिल्लण तलावडी

ज्यारे सत्पाते श्री भरतेश्वर श्री संघ साहेत श्रीनाभ गणधरने आगळ करीन श्री शत्रुंजय महातीर्थनी यात्राथ उपर चढ्या त्यारे भरत महाराजा उत्तर तरफना मार्ग चढता हता अने बीजा सर्वे पोतपोतानी शक्ति मुजब जुदे जुदे रस्ते कौतक वडे चढता हता. श्री सुधर्मा गणधरना शिष्य श्री चिल्लण नामना तपस्वी मुनि अनेक यात्रिक लोकोथी विंटाइने पश्चिम मार्ग तरफथी चढता हता. उपर चढता रस्ता आगळ जता यात्रिक लोकोने अत्यत तृषा लागवाथी तेमणे चिल्लण मुनिने प्रार्थना करी के महाराज ! तृषावडे अमारा प्राण चाल्या जाय छे आ वात सांभळवाथी चिल्लण मुनिए कृपावडे तेमने पोतानु जळपात्र बताव्यु. त्यारे तेमणे कह्यु के आटला जळ-

पात्रेभी अमारा सहुनी तृपा शात थइ शकशे नहि माटे आप अमारी उपर कृपा करी गिरिवरडे एटलु जळ बतावो के सहुने तृप्ति थइ शके सघना लोकोनी एप्रकारनी विनतिथी चिल्लण मुनिए पोतानी पासेना प्रासुक [अचेत] जळनु सेचन करवाथी तपोलब्धिवडे एक सुदर सरोवर बनाव्यु ने जळथी सघळोको पोतानी तृपा शात करीने स्वस्थ थया अने चिल्लण मुनिए तेनु निर्माण कर्याथी तेनु चिल्लण सरोवर एवु नाम मरयात थयु ते सरोवरनु जळ घणु पवित्र गणाय छे

तालध्वज गिरि उपर साचा देव

प्रथम शत्रुजय महातीर्थ यात्राविधिना प्रसगे जणावेला ढकादिक पाच टूको पैकी तालध्वज, तलाजा बदरनी नजदीकमा आवेल छे आ गिरिवरमा अनेक विशाळ गुफाओ आवेली छे, तेमा पण केटलीक गुफाओ तो बहुज भव्य देखाववाळी अने जेमा सख्याबध माणसो समाइ शके तेवी छे प्रथम तेमा महात्मा पुरुषो ध्यानारुढ थइ रहेला हशे एम अनुमान थाय छे गुफाओना मुख भागमा निर्मळ जळवाळा टाका रहेला छे, अत्यारे ते वधारे वपराशमा आवता नथी. आ गिरिराजना परिसरमा तालध्वजी नामनी मोटी नदी आवेली छे. तेनो थोडेक दूर शत्रुजयी नदी साथे सगम थाय छे अने ते बन्ने नदीओ पूर्व दिशामा समुद्रने जइ मळे छे आ गिरिराज उचाणमा बहु वधारे नथी थोडक उचे चडता साचादेवनी टूक आवे छे. लोको तेमने सुमतिनाथना नामथी ओळखे छे परतु प्रभुनु लछन जोता ते कुथुनाथजी सभवे छे. मूळ नायकना देरासर फरती केटलीक दिव्य

प्रतिमा युक्त देरीयो आवेली छे थोडाक वर्ष पहेला नीचे गाममांथी पार्श्वनाथभगवाननी मोटी प्रतिमा नीकळी आवेल छे ते हालमा गामना मन्दिरमा बिराजे छे भरत महाराजा पण अत्र पधार्या हता, तेमणे अहीं प्रभुप्रासाद निपजाव्यो हतो अने तालध्वज यक्षने अहींनो अधिष्ठायक स्थाप्यो हतो आ स्थळ खरेखर रमणिक छे अने गिरिराजनी छेक उपर आवेला चउमुखना देरासर पासेथी कुदरती देखाव अत्यंत भव्य जणाय छे, जे देखतार्थी आत्मार्थी जनोने कइक सद्विचारो स्फुरे छे अने वैराग्यनी वृद्धि थायछे तेथी शत्रुंजय तीर्थनी नजदीकमां आवेल आ तीर्थ पण भावथी भेटवा लायक छे निष्ट तिना अर्थी जनोने ते घणीज माफक आवे एम छे वळी गाममा उतरवा विगेरेनी पण सोइ सारी छे

महुवा (मधुमति नगरी)मां महावीर स्वामी

श्री शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करी केटलाक भाविक जात्रिक भाइ व्हेनो तालध्वज गिरिने भेटी पछी महुवामा विराजमान महावीर-स्वामीनी जात्रा करवा जाय छे लोकोमा आ ' जीवित स्वामी 'नी प्रतिमा तरीके ओळखाय छे जेमणे शत्रुंजय तीर्थ उपर तेरमो उद्धार श्री वज्रस्वामीनी सहायथी वि स १०८ मां कराव्यो छे ते जावडशा शेठने आ मधुमती नगरी इनाममा मळेली हती पछी मास थयेला अनर्गल धननो व्यय करीने पोते तेरमो उद्धार कराव्यो हतो हालमा भावनगरना मोटा देरासरमां बिराजमान मूळ नायक श्री ऋषभदेव भगवाननी प्रतिमा तेरमा उद्धारनी छे एम एक स्तवन उपरथी जणाय छे आकृति उपरथी पण आ प्रभु प्रतिमा पुरातनी समजाय छे

रैवताचळ (गिरिनार) उपर नेमिनाथ भगवान

पहेलां गिरनारजी उपर श्रीनेमिनाथ भगवाननी लेपमयी मतिमा हती परंतु 'रतनो' नामे संघपति संघ साथे यात्रार्थ आवेलो हतो संघसहित श्रीनेमिनाथनो अभिषेक करता ते लेपमयी प्रतिमा गळी गई, तेथी संघपति 'रतनो' बहुज दिलगीर थया आवी रीते थयेली आशातना टाळवा पूर्वक तीर्थ भक्तिनो लाभ भव्य जनो कायम लइ शके एवी मनस्थथी संघपति शासन देवी श्री अंबिकानु स्मरण करी (एकाग्र चित्तथी) आहार पाणानो त्याग करी बेठा तेना दृढ निश्चयथी छेवटे अंबिकाए तुष्टमान थई तेने कंचन गुफामां लई जई वज्ररत्नमयी श्री नेमिनाथ भगवाननी मतिमा मूळ नायक तरीके स्थापवा माटे आपी ते प्रभु मतिमा प्रथम अनेक इंद्रोए पूजेली छे अने कालादिदोषथी तेनी कोई हल्का लोको आशातना न करे एवी बुद्धिथी ते रत्नमयी प्रतिमानु मूळ तेज देवमायाथी संहर्यु लीधु छे तोपण तेनो प्रभाव तो जेवो ने तेवोज वर्ते छे, तेमज भाविष्यकाळमा पण वर्तशे, तेथी ते प्रभुनी प्राचीन प्रतिमा अति आदरथी पूजवा भेटवा लायक छे. रतन शेठ श्री नेमिनाथ भगवानना शासनमा थयेला समजवा अने आ प्रभु प्रतिमा, पहेला ब्रह्मेन्द्रे पोतानु भावि कल्याण श्रीनेमिनाथ महाराजनाज सानिध्यथी थवानु गई चोविशीना त्रीजा सागर नामना तीर्थंकर महाराजना अमोघ वचनथी जाणीने अत्यंत हर्ष सहित बनावी छे. त्यार बाद ते अनेक इंद्रादिक वडे आदर सहित पूजाई छे, अने वळी भविष्यकाळमा पण सारी रीते पूजा-

ती रहेशे हालमां विद्यमान विशाळ मंदिर सिद्धराज जयसिंहना वखतमा तेना मंत्रीश्वरे करावेलु गणाय छे.

चंद्रप्रभास तीर्थ (प्रभासपाटण)

श्री नेमिनाथ भगवाननी यात्रा करी भाविक यात्रालुओ प्रभासपाटण यात्रार्थे जाय छे. आ पण प्राचीन तीर्थ छे पहेला अहीं चंद्रप्रभुजी पधारी काउस्सग्ग मुद्राए रहेला, त्यारे समुद्रना अधिष्ठायक देवे प्रभुनी अद्भूत भक्ति करी हती आ स्थळ चंद्रप्रभुना पवित्र चरण त्यासथी वधारे प्रसिद्धिने पामेलु छे. प्रथम अहीं धरणेन्द्रे चंद्रप्रभुनो महा निर्मळ प्रासाद कराव्यो हतो, तेमज सीता (रामपत्नी) ए पण नवीन प्रासाद करावी तेमां चंद्रप्रभुने स्थापित कर्या हता

अजारापार्श्वनाथ (अजयपुर मंडन)

'रत्नसागर' नामे एक महान् श्रेष्ठि विविध किरियाणाथी वहाण भरीने जतो हतो, त्या एकाएक भारे तोफान लाग्यु प्राण पण बचवा मुश्केल जणाया तेवामां तेणे आकाशवाणी साभळी, के "हे भद्र ' तु मुझाईश नहीं आ ऋतु मे थयु छे हु पधारती छु. आ समुद्रमा कल्पवृक्षना संपुटमां रहेली भावी भगवान श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्ति छे ते प्रभाविक प्रतिमाने धरणेंद्रादिके घणो वखत पूजेली छे, हमणा अजयराजाना पुन्यथी ते प्रतिमा अहीं आवेली छे. तेने समुद्रमाथी बहार काढीने अजय राजा (जे रघुपुत्र हमणां दिग्विजय करीने दीवबंदरमा आवी रहेलो छे ते) ने अर्पण करजे ते प्रभाविक प्रभु प्रतिमाना दर्शन करतांज तेना १०७ रोग तत्काळ नाश

पामी जशे " आ प्रमाणे आकाश वाणी सांभळीने तेणे तत्काळ नाविकोने समुद्रमा उतारी ते उत्तम प्रतिमा कढावी लीधी. एटले सघळु तोफान शांत थई गयु अने वहाण अनुकूळ पवने दीव बंदरे आवी पहोंच्यु राजाने तत्काळ वधेंइए जई वधामणी आपी एटले ते अश्वारूढ थईने सामो आव्यो प्रतिमा युक्त संपुटने किनारे उतार्या मोटा आडंबरथी तेने नगर प्रवेश करावी, राजाए रमणिक सिंहासन उपर स्थापित करी तेने आदर सहित पूजा करी उघाड्यो, तो तेमा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी अद्भुत प्रतिमा जोवामा आवी जोता वेंतज हर्षभर राजाए प्रभुने पंचांग प्रणाम कर्या एटले आनंद अमृत शरीरमा संचरता तेनो रोग तत्काळ दूर थइ गयो पछी राजा रत्नसागरनी साथे भक्तिथी प्रभुनी पूजा करी सुखे राज्य भोगववा लाग्यो. पछी अजय नामनु नवु नगर वसावी तेमा पार्श्वनाथनो एक उत्तम प्रासाद करावी प्रभुने विराजमान कर्या अने पोते त्या जइ त्रिकाल पूजा करवा लाग्यो तेमज तेना कायम निर्वाहाथ तेणे दश गाम सहित ते नगर अर्पण कर्यु ते पवित्र बिंब अत्यारे अजारा पार्श्वनाथना नामथी ओळखाय छे ए अति प्राचीन प्रभुप्रतिमाना दर्शननो अद्भुत लाभ लेवा इच्छनार भारे तो थोडा प्रयासे लइ शके एम छे आ पवित्र अने पुरातन तीर्थ स्थळनी पासे उन्नतपुर (उना) अने दीव बंदरमा पण दर्शन करवा लायक जूनां जिन बिंबो छे. ते स्थळे सुप्रसिद्ध आचार्य श्री हीरसूरिजी पधारेला छे तेमनो स्वर्गवास पण उनामा थयेलो होवाथी त्या बगीचामा तेमनो स्तूभ पण बनेलो छे. विशाळ बगीचो जिन मंदिरोना

निर्वाहार्थे बादशाह तरफथी इनाम मळेलो गणाय छे ते खूब पण दर्शनीय छे भव्यात्माओने प्रसगोपात जणाववानी उपरनी सघळी हकीकत लक्षमां राखी जेम स्वपरना हितमां अभिवृद्धि थाय तेम भवता स्वमानव भवनी सफळता करी लेवी उचित छे

अर्बुदाचळ (आबुगढ) उपर श्री आदिनाथ तथा नेमिनाथ भगवान

श्री आबु (देलवाडा) गढ उपर विमलशा मन्त्रीश्वरे तथा वस्तुपाळे अने तेजपाळे क्रोडो गमे द्रव्यनो व्यय करीने भव्य देरासरो बनाव्यां छे तेमा एवा प्रकारनी उत्तम कोरणी करवामा आवेली छे के दुनीयामा अत्यारे कोइ पण तेनी होड करी शके तेम नथी पाश्चिमात्य लोको पण एके अवाजे तेनी तारीफ करे छे, उक्त स्थळ द्रव्यथी अने भावथी निवृत्तिजनक छे

तारगा (तारण गिरि) उपर श्री अजितनाथ स्वामी

आ गिरि उपर श्री कुमारपाळ भूपाळनो बनावेलो अति उत्तम अने अद्भूत प्रासाद छे तेमा एवा प्रकारनु काष्ट वापरवामा आवेलु कहेवाय छे के ते अग्नि सयोगे बळवाने बदल तेमाथी पाणी छूटे छे तेमां श्री अजितनाथ प्रभुनी अति मनोहर शात मुद्रा बिराजे छे आ उत्तम प्रासादनी आसपास चोमेर घणा उचा अने महिमावाळा पहाडो छे तेमां एक स्थळे कोटि शिला छे, ज्या एक क्रोड मुनिवरोए अनशन आराधेलु कहेवाय छे यात्राळुओने उतरवा वगेरेनी सोइ अहीं बहु सारी छे

श्री पचासरा पार्श्वनाथ (अणहिलपुर पाटणमां विराजमान)

श्रीशीलगुणसूरि पासे केळवायेला वनराज चावडानी राजधानीनुं शहेर पचासर हतुं तेमां जिनप्रासाद रचावी विराजमान करेला पार्श्वनाथ भगवान पचासरा कहेवाय छे काळ दोषथी पचासर हाल पडी भांग्युं छे अने पचासराजीने कुमारपाळ राजाना वायतख्त शहेर पाटणमां विराजमान करवामां आव्या छे त्यां साथे वनराजनी पण मूर्ति छे ए उपरांत सकळ कल्याणक भूमिओ तथा गई चोविशीमां थयेला दामोदर नामना तीर्थंकर भगवानना समयमां अषाढी श्रावके भरावेली श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ स्वामीनी अति अद्भूत प्रतिमा तथा प्रतिवासुदेव रावणना वखतमां भरावेली अंतरिक्ष पार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा तथा जेना स्नात्राभिषेक जळथी श्रीपाळ प्रमुखनो कोढ रोग नष्ट थयो हतो, ते श्री ऋषभदेव (केशरीयाजी) तथा स्वभान शहेरना श्री पार्श्वनाथ प्रमुखनी प्राचीन अने प्रभाविक प्रतिमाओ प्रेम सहित वंदन-पूजन करवा लायक छे.

सात प्रकारनी शुद्धि साचववानी जरूर

अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार,
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार.

१ अंग शुद्धि, २ वस्त्र शुद्धि, ३ चित्त शुद्धि, ४ भूमिकाशुद्धि, ५ पूजा उपगरण शुद्धि, ६ द्रव्यशुद्धि अने ७ विधि विधान शुद्धि,

ए सात प्रकारनी शुद्धि आत्मार्थी जनोए पवित्र यात्रा प्रसंगे पण अवश्य आचरवा योग्य छे वळी कहयु छे के " साते शुद्धि समाचरी, करीये नित्य प्रणाम " मतलब के उक्त साते शुद्धिनु यथायोग्य सेवन करीनेज श्री तीर्थराजने प्रतिदिन प्रणाम करवो घटे छे

प्रथम अंगशुद्धि–संसारीक कार्यमा रच्या पच्या रहेनार भली नारभी गृहस्थ जनोए परमपूज्य श्रीतीर्थपतिनी पूजा सेवामा प्रवर्तता देह शुद्धि विवेक पूर्वक करवी युक्त छे श्रीमान हरिभद्र सूरियेरे अष्टकमा कहयुज छे के " आय जळ व्यतिरिक्त जीवोनी विराधना न थाय तेम जयणा सहित देवाधिदेव तीर्थंकर भगवाननी तेमज निस्पृही मुनिजनोनी सेवा भक्ति करवा निमित्ते गृहस्थ जनोने द्रव्य स्नान करवानी अनुमति छे अने तेम करता गृहस्थ जनोनो उद्देश उच्च होवाथी ते तेमने पापबंधनी नहिं, परतु पुण्यपुष्टि निमित्ते थाय छे सामान्य रीते तो शास्त्रमा वडक उष्ण जळवडेज शरीर-शुद्धि करवा सूचव्यु छे परतु तीर्थजळ प्रस्तावे उष्ण जळनोज आग्रह करतो नथी, स्वभाविक तीर्थजळना रजकणोनोज विशेष महिमा ठेकाणे ठेकाणे शास्त्रमा तेमज लोकमा पण प्रसिद्ध छे तेवा प्रभाविक तीर्थजळोने तपावी–उष्ण करी के करावीने तेवडे स्नान करवानी रूढि सुखशीलपणानेज पुष्टि आपनारी जणाय छे, ते बाबत पुरतो विचार करी हितकर मार्गज आदरवो युक्त छे पवित्र जळथी देह शुद्धि थया बाद भींजेला मलीन वस्त्रथी शरीरने लुछवाथी पुन अंग अशुद्ध थइ जाय छे, माटे तेवे प्रसंगे अलायदा शुद्ध वस्त्रनोज उपयोग

करवो घटित छे. बनता सुधी स्नान करती वखत पहेरवानुं वस्त्र पण मेलुं–दुर्गंधवाळुं नहि वापरता ते पण अल्पायतुज राखवु जोइए. एम करवाथी शरीरनुं आरोग्य पण सचवाइ शके छे. तेवे प्रसंगे नाहक अन्य एकेन्द्रिय प्रमुख जीवोनी विराधना थवा न पामे तेनी सावचेती राखवानी पण जरूरीयात छे. जळने सारी रीते गाळ्या बादज वापरवामां लेवाथी तेमज सूकी अने निर्जीव भूमिनुं यथायोग्य शोधन करीने स्नान करवाथी तेवी जीवयतना सुखे पळी शके छे. प्रभुआज्ञामांज धर्म रहेलो होवाथी अने आज्ञा विरुद्ध करेली के करावामां आवती धर्म करणी निष्फळप्राय थती होवाथी सद्गृहस्थोए जीव जयणा माटे अवश्य काळजी राखवी घटे छे अने एमज वर्तता अनुक्रमे आत्मकल्याण साधी शकाय छे. माटे विवेकथी शरीरशुद्धि करवी घटे छे. वळी वायुप्रकोप, विशूचिका (अजीर्ण) प्रमुख रोग पेदा न थाय अने शरीर समाधान बन्युं रहे तेवो शुद्ध सात्विक खोराक मितसर लेवाथीज स्वधर्म–कर्म सुखे साधी शकाय छे अने एथी उलटा चालवाथी शरीरनी अस्वस्थता थइ जतां धर्म करणी करवामां अंतराय पडे छे अने वखते देव गुरुनी के तीर्थनी सेवा भक्ति करवा जतां आशातना लागवानो पण प्रसंग आवी पडे छे, ते माटे जेम शरीर शुद्धि सारी रीते जळवाइ रहे तेम वखतोवखत खानपानादिक प्रसंगे पण बहुज काळजी राखवानी जरूर छे. एम करवाथी स्वहित साधनमां अधिक सरलता थइ शकशे. वळी वस्त्र संबंधी शुद्धि राखवानी पण जरूर छे.

बीजी वस्त्र शुद्धि–उत्तम देव गुरुनु पूजन–अर्चन करता प्रसंगे

तेमज पवित्र तीर्थराजनी सेवा भक्तिना प्रसंगे पण अंग शुद्धिनी पेरे वस्त्र शुद्धिनी तेटलीज जरुर छे तेवा उत्तम प्रसंगे पहेरवा ओढवाना वस्त्र मेला के फाटेला तूटेलां नहिं राखतां ते सारा साफ करेला अखंड राखवा जोइए अने ते पण देव पूजामां छाजे एवा उमदा राखवा जोइए

एक शाटक उत्तरासंग-देव गुरुने वंदन करवा जतां साधारणथी कर्यां वगरनुं सळंग अखंड उत्तरासंग राखवानुं गृहस्थ-श्रावकने कहेलुं छे तेम अन्य उचित वस्त्र आश्री पण स्वतः समजी लेवानुं छे जेम शरीर शुद्धिथी चित्तनी प्रसन्नता वधी रहे छे, तेम वस्त्र शुद्धिथी पण मन उपर सारी असर थइ शके छे, तेथी तेवी बाबतमां केवळ उपेक्षा के खोटी कसर नहिं करतां पोत पोताना गजा प्रमाणे तेवा उत्तम प्रसंगे तो जरुर वस्त्र शुद्धि माटे पण काळजी राखवी उचितज छे जेओ साधन संपन्न होय (सारी स्थितिमां होय) तेमणे तो संसारिक कार्यमां वपराता वस्त्रोथी जुदां जूदां धार्मिक कार्य माटे खास करीने सारा शुद्ध वस्त्रो अलायदाज राखी ममतारहित तेनो यथायोग्य उपयोग करवोज जोइए जेओ वस्त्र शुद्धिना नियमनो भंग करी जेवा तेवा मलीन वस्त्रो वडेज सर्व व्यवहार चलावे छे तेमने तेमनी गंभीर भूलने लीधे शरीरादिकना आरोग्य माटे पण वधारे सहन करवुं पडे छे एम विचारी शाणा माणसो वस्त्रशुद्धि माटे पण वधारे काळजी राखे छे

त्रीजी चित्त शुद्धि—प्रबळ राग द्वेष रुप कषाय, मिथ्यात्व अने अज्ञानता रुप मळने दूर करी देवाथी चित्त शुद्धि थइ शके छे अथवा

भय, द्वेष अने खेदरूप दोषने दूर करवाथी पण चित्त शुद्धि थइ शके छे परिणामनी चचळता एज भय, सद्गुण के सद्गुणवाळी वस्तु उपर अरुचि आववी ते द्वेष अने कल्याणकारी क्रिया करता थाकी जइए ते खेद, मतलब के जे जे अतर विकारोवडे चित्तशुद्धि थती अटके छे, ते ते विकारोने विवेकवडे समजी दूर करवाथी चित्त शुद्धि सहेजे सपजे छे राग द्वेष अने मोह प्रमुख महाविकारोथी सर्वथा मुक्त थयेला वीतराग परमात्माए बतावेला सघळा आत्म साधननो मूळ हेतु अतर शुद्धि करवानो ज छे ते वात सहु कोइ आत्मार्थी भाइ बहेनोए खास करीने लक्षमा राखवा योग्य छे जो ए मुद्दानी वात लक्षमा राखी गमे ते आत्मसाधनना मार्गमा यथाशक्ति प्रवर्ते तो तेथी अज्ञान, मिथ्यात्व, कषाय प्रमुख अतर विकारो उपशम्या वगर रहेता नथी परतु उपर जणावेली प्रभुआज्ञा तरफ दुर्लक्ष राखी, जो आपमतिथी के गतानुगतिकताथी क्रिया करवामा आवे तो तेथी अज्ञान क्रियाथी राग द्वेषादिक अतर विकारो दूर थवाने बदले उलटा वधवानोज सभव वधारे रहे छे जेम लाभनो अर्थी व्यापारी गमे ते व्यापार करता परिणामे पोताने नुकशान नहि थता थोडो घणो पण चोख्खो लाभज थाय तेवोज व्यापार करे छे तेम आत्मार्थी जनोए पण हरेक धर्म करणी करता पोताना राग द्वेष मोह मिथ्यात्वादिक अतर विकारो दूर थता जाय अने चित्त शुद्धि प्रमुख उत्तम लाभ मळतो जाय तेवीज रीते प्रवर्तवु उचित छे कोइ प्रकारे विकारनी वृद्धि तो थवा न ज पामे तेवी पूरती काळजी दरेक प्रसगे राखवी जोइए

चोथी भूमिका शुद्धि—बे प्रकारनी भूमिका शुद्धि कहेवाय छे एक द्रव्य भूमिकाशुद्धि अने बीजी भाव भूमिकाशुद्धि देव गुरुने जुहारवा जता जयणा सहित विधि पूर्वक चैत्यद्वारमां के उपाश्रयमां पेसी दूरथी पण देव गुरुनु दर्शन थताज अजलिबद्ध नमन करी प्रदक्षिणा दइ नजरे पडती आशातना टाळी देव गुरु सन्मुख अति नम्रपणे आवी पचाग प्रणाम करती वखते उत्तरासग प्रमुख वडे यथायोग्य भूमि प्रमार्जन करीनेज शुद्ध देव गुरुनी पूजा भक्ति ने स्तुति करवी उचित छे आ प्रमाणे विधि साचववानो हेतु पोतानी भाव भूमिका–हृदयशुद्धि करवी एज छे पूर्वोक्त भय, द्वेष अने खेद दोषने दूर करवाथी भाव भूमिकानी शुद्धि थइ शके छे जेम जिन चैत्यादिकनु निर्माण करतां भूमिका शुद्धि करवा माटे भूमिमां रहेला शल्यादिक दूर करी देवामां आवे छे, तेम हृदय भूमिमा रहेला राग द्वेषादिक (कषाय) शल्य, मिथ्यात्व शल्य, तेमज पूर्वोक्त भयादिक शल्यो अवश्य दूर करवा ज जोइए त्यारेज यथार्थ अतर शुद्धि थयेली गणाय छे जेम शल्य रहित शुद्ध भूमिका उपर चणावेला प्रासादमा सुख निवास करी शकाय छे तेम जेमा अतर शल्य दूर थया छे एवी हृदय शुद्धिवाळा सज्जनोज सहजानदमा निमग्न रही शके छे खरे-खर सुख हृदय शुद्धिमाज छे तेथी जेम सारु हृदय शुद्धि थाय तेम पवित्र लक्ष सहितज दरेक प्रसगे आत्मार्थी जनोए प्रवर्तवानु छे गाडरिया प्रवाहे प्रवर्तवाथी कशु आत्महित सधातु नथी तेथी जेवी रीते हृदय शुद्धि थवा पामे तेवा अतर लक्ष–उपयोग सहितज सकळ धर्म करणी करवी हितकर छे बाकी लोक रजनार्थे के अध परपराए

वर्तवामां थइ पण अधिक हित नथीज

पांचमी पूजा उपगरण शुद्धि—श्री तीर्थराजने भेटती वखते शुद्ध देवगुरुनी सेवा भक्तिना प्रसंगे जे कंई उपगरणो-पूजा सामग्री-नी जरूर पडे, ते अति उदार दीलथी सारी संभाळपूर्वक उत्तम प्रकारनी मनोहर द्रव्यो वडे निपजावेल होय तो चित्तनी प्रसन्नता साथे भाव उल्लासना वृद्धि निमित्ते बने छे पूर्व महा पुरुषोए प्रभु भक्ति प्रसंगे जे मर्यादा अविच्छिन्न बतावेली छे तेने अनुसरी यथाशक्ति प्रमाद रहित आपणे पण आत्म कल्याणार्थे लाभ लेवा उचित छे

स्वस्व शक्ति-भावना प्रमाणे अनेक प्रकारे प्रभु पूजा थई शके छ. तेमां अष्ट प्रकारी पूजा प्रतिदिन लक्ष पूर्वक करवा दरेक श्रद्धालु भाई व्हेनोए उजमाळ रहेवु जोईए

अष्ट प्रकारी पूजा जेम अंतर लक्ष सहित करवामां आवे तेमज अधिक आत्महित रूप होवाथी ते बाबत अत्र प्रसंगोपात संक्षेपथी ध्यान करीए छीए

१ जळपूजा—शुद्ध करेला पवित्र कुंभादिकथी जयणा सहित गाळीने आणेलां तीर्थजळादिकवडे स्नात्र अभिषेक (प्रक्षाल) करतां हृदयमां भाववुं के प्रभु अभिषेकना प्रभावे अमारा अनादि कर्म-कलमल दूर थई जाय. शुचि-पवित्र जळथी जयणासहित स्नान करी इन्द्रनी पेरे उत्तम वस्त्रालंकार धारण करी निर्मळ नीरनी धाराथी अंतर लक्षपूर्वक श्री जिनेश्वर प्रभुने न्हवरावतां उत्तम भावना योगे पोतेज पोताना आत्माने कर्म मळ रहित करी शके छे

ल्याणकारी स्वस्तिक रचनार आत्मा उत्तम भावना योगे रत्नत्रयी-रूप प्रभुना मार्गने पामी चार गतिने छेदी, अने सिद्धि गतिने पामी शके छे स्वस्तिक (साथियो) रचतां प्रभु समीपे उपर जणावेलीज प्रार्थना शुभ भावना सहित करवी जोईए.

७ नैवेद्य–अनादि देहाध्यास (देह ममता) योगे जीवने जातजातनां खान पानमां रति लागेली छे तेथी विरक्त थवाने प्रभु समीपे विध विध जातना पक्वान्न, रसोई ढोवी एवीज प्रभु प्रार्थना करवानी छे के हे प्रभु! अनादि पुद्गलानंदीपणु तजावी अमने अणाहारी पद प्राप्त करावो

८ फळ–सरस उत्तम जातिनां विध विध फळ प्रभु पासे ढोवी एवी प्रार्थना करवानी छे के हे जगदीश ! आप अमारां अनादि जन्म जरा मरण सबंधी अनंता दुःख निवारी अमने अक्षय सुखमय मोक्ष सुखनी बक्षीस आपो ! आवी रीते संक्षेपथी हेतु सहित समजावेली अष्ट प्रकारी पूजा हरेक श्रद्धालु भाई बहेनोए प्रतिदिन करवा खेप करवो जोईए उक्त द्रव्य पूजा कर्या बाद चैत्यवंदन प्रमुख वडे प्रभुना गुणग्राम करी आत्माने तद्रूप करवो युक्त छे

छठी द्रव्य शुद्धि—प्रभु पूजादिक निमित्ते जोईता बधा पजो पगरण न्याय युक्त द्रव्यथी मेळववा प्रयत्न करवो जोईए मतलब के श्रद्धावंत गृहस्थे प्रथम तो अनीति के अन्यायनो मार्ग तजी नीति–न्यायना धोरणनेज अनुसरी रहेवु जोईए. नीतिथी व्यापारादिक करता द्रव्य न मळे एवी मान्यता केवळ मुर्खोए भरेलीज जाणवी

शास्त्रकार तो द्रव्य उपार्जन माटे खरो उपायज नीतिनो वतावे छे, नीतिथी द्रव्य मळे छे एटलुज नहि पण मळेलु द्रव्य सुखे भोगवी शकाय छे अने स्थिर थवी रहेवाथी वंश परंपरा सुधी चाल्या करे छे वळी नीतिना द्रव्यथी सद्बुद्धि सुझे छे, तेनो सद्व्यय थाय छे अने परिणामे ते महा लाभदायी नीवडे छे वळी अनीतिना मार्ग उपार्जेला धनना भोगवटाथी बुद्धि बगडे छे, ते भोगवता कइक विघ्नो आवे छे, अने थोडा वखतमा तेनो नाश पण थई जाय छे सळेला धान्यनी पेरे अनीतिनु द्रव्य फळदायी थई शकतु नथी तेथीज ज्ञानी पुरुषो पोकारी पोकारी नीतिनोज मार्ग आदरवा आग्रह करे छे ते मार्ग चालनार प्रभुनी आज्ञानु पालन करनार लेखाय छे अने ते सद्गतिनो भागी थइ अंते परम पद–मोक्ष सुखनो भोक्ता थइ शके छे

सातमी यथायोग्य विधि शुद्धि–तीर्थ यात्रा करवा जता आपणा आत्मानु एकात हित सधाय तेवी रीते जयणा सहित जावु, मार्गमा कोइ प्रकारनी विकथा करवी नहि कोइ साथे क्लेशमा उतरवु नहि कोइने अप्रिय लागे अने अहितरूप थाय तेवु वचन नज कहेवु शात वृत्तिथी चित्तमा शुभ भावना भावता भावता अळवाणा(उघाडे)पगे सभाळ राखी राखीने चालवु विना कारण कोइने बोजारूप न थावु, पवित्र तीर्थराजनो योग पामी सुखशीलपणु ओछु करवु पोताना मन वचन कायाने वनी शके तेटला नियममा राखवा कोइना वचन उपर खीजवाइ जइ पोताना मननी शाति खोइ देवी नहि एवी रीते काळजी राखीने विधि सहित तीर्थ स्पर्शना करवी तेवा प्रसगे कृप-

णनादिक दोषो दूर करी उदार वृत्ति आचरवी तीर्थपति श्री-अरिहंत महाराजने भेटी भाव सहित, चढता परिणामे प्रभुनी पूजा अर्चा (सेवा—भक्ति) करवी. आपणी समज प्रमाणे प्रभुनी स्तुति करवी सामान्य रीते सघळा चैत्यो आदरपूर्वक जुहारवा. अति नम्र-पणे प्रभु मुद्राओने निहाळी निहाळी नमन करता जवु अने विशिष्ट स्थळोए स्थिरताथी चैत्यवंदन प्रमुख करवा पण लक्ष राखवु. प्रद क्षिणा देता क्याय कोइ प्रकारनी आशातना थती के थयेली नजरे पडे तो ते निवारवा-दूर करवा खास चीवट राखवी पोतानाथी जे थइ शके एवु होय ते करवा अन्य योग्य जनने भलामण करी देवी पण तेवी बाबतमां ऊक उपेक्षा तो न ज करवी आशातना टाळवी ते पण भक्तिनुज अंग गणाय छे मार्गमा चालता के तीर्थ उपर चढतां प्रभु आज्ञाना रूपी मल्ले पवित्र शासन रागी जे कोइ साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मळे तेमनो उचित विनय साचववो बनी शके तेटली तेमनी सेवा भक्तिवडे आराधना करवी, परतु विराधना तो कदापि पण करवीज नहिं. उपर के नीचे जिन चैत्या दिकमां चैत्यवंदन करतां आपणाथी जे ज्ञानादिक गुणमां अधिक होय तेवा वडील जनोनो अधिक विनय साचववो तेओ चैत्यवंदना दिक करता होय तो आपणे ते नम्र वृत्तिथी श्रवण करवु परतु तेमनाथी जुदु करीने सामु डोळी नाखवु नहिं तेम छता जुदु करवा जेवोज प्रसंग होय, तोपण एवा मंद स्वरथी करवु के जेथी बीजानी भक्तिमां कोइ पण प्रकारे व्याघात पडे नहिं जिन मंदिरमां पेसतां के नीकळता घटादिक वगाडता पण एवो ख्याल अवश्य राखवो.

मतलब के जे कइ करणी आपणे करीये ते एवा अंतर लक्षथी करवी के तेथी आपणु एकांत हित थवा उपरांत बीजा पण आत्मार्थी जनो तेनु अनुमोदन तेमज अनुकरण करे. स्थिर चित्तथी करेली धर्म करणी लेखे थाय छे, तेथी आपणी स्थिरता टकी रहे तेवी अने तेटली करणी प्रसन्नचित्तथी करवी दुनियाना सर्व जीवो साथे तेमा पण आपणा साधर्मी भाइओ तथा व्हेनो साथे विशेष करीने मैत्री भाव राखवो. धर्मचुस्त सद्‌गुणी जनोमां प्रगट नीकळेला सद्‌गुणो निहाळी निहाळीने दीलमां सहज राजी थावु तेमनामांथी बनी शके तेटला सद्‌गुण ग्रहण करीनेज कृतार्थ थावु द्वेष इर्षा अदेखाइ प्रमुख दुर्गुणोने तो देशवटोज देवो दोष दृष्टिथी गुण ग्रहण करी शकातुज नथी परंतु उलटा आपणामां दोषनीज वृद्धि थाय छे जे बापडा नवीन—शिखाउ होय एटले धर्म अभ्यासमां पश्चात् होय तेमना उपर अनुकंपा लावी जेम तेओ पण अभ्यासमां आगळ वधी आपणी बरोबर थाय तेम इच्छवु अने करवु, पण नाहक तेमनी उपेक्षा के अवगणना करवी नहिज गमे तेवा पापी तथा देव गुरुना निंदक होय तोपण तेमनी उपर द्वेष करवामां पोताने तेमज तेमने कशो फायदो थतो नथी, तेथी द्वेष तो नज करवो तेमज तेवा निर्दय प्राणीओ साथे राग पण करवामां कशु स्वहित के परहित सधातु नथी तेथी राग पण न करवो. तेमनाथी तो वदन उदासीनज रहेवु हितकारी छे उपर संक्षेप मात्रथी कहेली मैत्री, मुदिता, करुणा अने माध्यस्थ्य भावनाथी सदाय आपणा आत्माने सुवासित राखवो. वळी विधिना प्रस्तावे शास्त्रकारे कहेलु छे के:—

" दग्ध शून्य ने अविधि दोष, अति प्रवृत्ति जेह,
चार दोष छडी भजो, भक्ति भाव गुण गेह "

मतलब के विधि रसिक जनोए दग्धदोष, शून्यतादोष, अविधि दोष अने अतिप्रवृत्तिदोष, ए चार दोषोने अवश्य तजवा जोइए उक्त चार दोष रहितपणे देव गुरु के तीर्थ संबंधी सेवा भक्ति बहु गुणकारी–अत्यंत लाभदायी थई शके छे, माटे ते चारे दोषनु स्वरूप समजवा अने समजीने निर्दोष करणी करवा प्रयत्न करवो घटे छे

१ दग्धदोष–कोइएक धर्मकरणी करता बीजी बीजी करणी करवा मन दोराय, मन मुकामे नहि रहेता, चालती क्रियानो लाभ नहि लेता अन्य अन्य स्थाने भटके, तेथी चालु करणी निष्फलप्राय थई जाय चालु क्रियामां अंगारानी दृष्टिवत् लखी शकाय

२ शून्यतादोष–जे कंई धर्मकरणी करवामा आवे ते समूछिमनी पेरे उपयोग शून्यपणे समज वगर अथवा शब्द, अर्थ के तदुभयना लक्ष वगरज कराय अथवा तो हु शु करु छु? में शु कर्यु? तेमज हवे मारे शु करवानु छे? तेनु जेमां कशुज भान न होय, एवी शून्य करणीथी शो लाभ थई शके? कशोज नहि. भाव वगरनी करणीमा शो रस?

३ अविधि दोष–जे धर्मकरणीनो जेवो क्रम (मर्यादा) जणावेल होय तेथी विपरीत–उलटपालट आपमतिथी करे के ज्ञानीने पूछी यथार्थ समज मेळव्या वगरज जेम फावे तेम गाडरीया प्रवाहे करे या तो अधिक ओछी करे अथवा आगळ पाछळ करे तेथी स्वहित भाग्येज थाय, अविधिथी तो पण उलटु अहित पण थाय.

४ अति प्रवृत्ति दोष–दिगंबरनी पेरे देश, काळ, भावने तपास्या

वगर गम्रा उपरान्तनी क्रिया करवानो खोटो आग्रह करो के कदाग्रह करे तेथी पण लाभने बदले हानिज थाय.

उक्त चारे दोषोनुं स्वरूप गुरु गम्यथी विशेषे जाणी जेम बने तेम निर्दोष-दोषरहित धर्मकरणी-करवा स्वप-करवो तेमज जेओ विधि रसिक होई सेवतामां आवती धर्मकरणीनुं रहस्य गुरुगम्य मेळवी ते प्रमाणे आदर सहित आचरण करता होय तेवा उत्तम पुरुषोनो समागम मेळवी तेमनी शुद्ध निर्दोष धर्मकरणी निहाळी पोतानी धर्म करणीमा चलावी देवाती भूलो सुधारवाना खपी थवुं बहु जरुरनुं छे

जे भाग्यवंत जनो यथार्थ विधि युक्त धर्मकरणी करे छे, तेओ धन्य कृत पुन्य छे तेमज जेओ पोते यथाशक्ति निर्दोष धर्मकरणी करवा उपरांत अन्य योग्य जनोने तेमा सहाय करे छे, निर्दोष करणीनी अनुमोदना करे छे-तेनी मुक्त कंठथी प्रशसा करे छे, यावत् तेनी प्राणाते निंदा तो कदापि करताज नथी, तेओ पण धन्य छे निर्दोष धर्मकरणीनी तेमज निर्दोष करणी करनारनी निंदा करनारने निकाचित कर्म बंध थाय छे जेथी तेने बहुज ससार परिभ्रमण करवु पडे छे, तेथी तेवी निंदा तो सर्वथा वर्जवा योग्यज छे

जेमने शुभ भावनथी धर्मकरणी करता सहज स्वल्पमात्र अविधि दोष लागे छे, परन्तु तेनो यथार्थ विधि जाणवा अने आदरवा जे खप करे छे तेओ पण शुभ भावना योगे सारो लाभ मेळवी शके छे. जेओ कहे छे के अविधिथी करवा करता नहिज करवु सारुं, ते तेमनुं कहेवुं विपरीत-शास्त्र विरुद्धज छे. आ मार्या भाई बहेनोए प्रमाद तजी विधिना खपी तो थवुज जोइए



" श्री अष्टापद कल्प-साराश "

श्रेष्ठ धर्म कीर्ति युक्त, सत् ज्ञान अने आनन्दे करी सहित तथा देवेन्द्रोथी वंदित एवा श्री आदिनाथ प्रभुए जेने पावन करेल छे, ते अष्टापद गिरिराज जयवंत वर्ते छे १

जे अष्टापद पर्वतपर द्यूत (जुगार) प्रमुख लाखो गमे दोषोने हरनार तथा सुवर्ण सदृश कांतिवाला श्री ऋषभदेव भगवान थया छे (निर्वाण पाम्या छे) ते अष्टापद गिरिराज जयवंत वर्ते छे २

मुनिओने विषे श्रेष्ठ एवा श्री ऋषभदेव प्रभुना बाहुबलि प्रमुख ९० पुत्रो ज्यां अक्षय सुखने पाम्या छे ते श्री अष्टापद गिरिराज० ३

१ अष्टापदादिक मूळ कल्प प्रशमरति साथे तेमज धनपाळ पंचाशिका साथे प्रसिद्ध थयेला छे त्याथी जोई लेवा

२ आ कल्पना प्रथम श्लोकमा दर्शावेला गर्भित नामोलेख परथी एना कर्ता श्रीमद्देवेन्द्रसूरि शिष्य श्रीमद् धर्मघोषसूरि छे एम चोक्कस जणाय छे धर्मघोषसूरिने प्रथम गणिपद मळ्यु ते वखते तेमनु नाम धर्मकीर्ति हतु अने विद्यानंद मुनि तेमना वडील गुरु भाई हता। तेथी पहेला पादमा धर्मकीर्ति बीजा पादमा विद्यानंद अने त्रीजा पादमा देवेन्द्रसूरि एम त्रण नाम सूचव्या छे धर्मकीर्ति नाम दर्शाव्यु छे तेथी आ कल्प तेमणे गणि अवस्थामा रच्यो छे एम निर्णय थाय छे।

जाणे प्रभुना वियोगथी भय पाम्या होय तेम प्रभुनी साथे दशहजार मुनिवरो ज्या मोक्षपदने पाम्या छे, ते अष्टापद गिरि० ४

ज्या ऋषभदेव प्रभुनी साथे एकज समये तेमना नवाणु पुत्रो अने आठ पौत्रो प्रमुखे शिवसुखने पाम्या छे, ते अष्टापद० ५

तीर्थंकरनी, गणधरनी अने शेष मुनिजनोनी—एम त्रण चिताने स्थाने जाणे साक्षात रत्नत्रयीज होय तेवा त्रण स्तूपो ज्या इन्द्रे स्थापन कर्या (रच्या) छे, ते अष्टापद० ६

शाश्वत जिन मंदिर (सिद्धायतन) जेवु सिंहनिषद्या (सिंह बेठा होय तेवा आकारनु) नामनु सुशोभित चार द्वारवाळु जिन चैत्य ज्यां भरते निर्माण कराव्यु, ते श्री अष्टापद० ७

एक योजन लांबु, तेथी अर्द्ध (बे कोस) पहोळु अने त्रण कोस उंचु एवु जिनचैत्य ज्या उंचे प्रकारे (झगझगाट करतु) बिराजे छे, ते श्री अष्टापद० ८

ज्या भरतचक्रीए पोतानी प्रतिमा सहित पोताना नवाणु भाईओनी प्रतिमाओ अने चोवीश तीर्थंकरनी प्रतिमाओ निर्माण करी, ते श्री अष्टापद० ९

पोत पोतानी आकृति (शरीर) प्रमाण, वर्ण अने लांछन संयुक्त वर्तमान २४ जिनेश्वरोना बिंबो ज्या (सिंहनिषद्या चैत्यमां) भरत चक्रीए पधराव्या, ते श्री अष्टापद० १०

ज्या प्रतिमा सहित नवाणु बन्धुओना नवाणु स्तूपो तथा एक प्रभुनो स्तूप भरत चक्रीए निर्माण कर्यो, ते श्री अष्टापद० ११

मोहरुप सिंहने हणवाने समर्थ अष्टापद (आठ पगवाळा जानचर) जेवा जेना (योजन प्रमाण) आठ पगथीया भरते कराव्यां, तथा ते जेथी आठ योजन उंचो शोभे छे, ते श्री अष्टापद० १२

भरतचक्री प्रमुख अनेक कोटी मुनिवरो ज्या सिद्धिपदने वर्या, ते श्री अष्टापद० १३

ज्या अनशन करी सर्वार्थसिद्ध विमानमा अने मोक्षमा गयेला भरतरक्षना (असत्य) राजपिओनी वात सुबुद्धि प्रधाने सगरचक्रीना पुत्रोने कही, ते श्री अष्टापद० १४

(तेथी) सागर जेवा गभीर आशयवाळा ते सगरचक्रीना पुत्रोए जे गिरिनी चोमेर (फरती) रक्षा करवा माटे सागरना जेवी (ऊंडी अने विशाळ) खाइ खोदी–नीपजावी, ते श्री अष्टापद० १५

सदा उंचा प्रकारे नाचता चपळ तरंगो रुपी पोताना सुशोभित हस्तोवडे जाणे पोतानु पाप क्षालन करवा इच्छती होय तेवी गगानदीए श्री जिनेश्वर सबधी जे गिरिराजनो चोमेरथी आश्रय कर्यो, ते श्री अष्टापद० १६

ज्या (चोवीशे) जिनेश्वरने (मणिमय) तिलक चढाववाथी दमयती तेना यथार्थ फळ तरीके पोतानाज ललाटमा अकृत्रिम एटले स्वाभाविक तिलकने पामी मतलब के तेणीनु कपाळ ज सूर्य जेवु प्रकाशमान थयु, ते श्री अष्टापद० १७

जे गिरिने कोपथी समुद्रमा फेंकी देवा इच्छता रावणने वाली नामना मुनिए पोताना पादवडे (पर्वतसाथे) दबावीने तत्काळ रोवराव्यो, ते श्री अष्टापद० १८

भुजानी नसथी, त्रुटेगी तात सांधी लीधेली वीणावडे प्रभुनी भक्ति करतो रावण ज्यां धरणेन्द्र पासेथी विजय आपनारी अमोघ विजया शक्तिने पाम्यो, ते श्री अष्टापद० १०

वसुदेवनी जेम जे तीर्थउपर वसता शत्रुने प्रहार करतो विद्याधर पण विद्याहीन थई जाय छे, ते श्री अष्टापद० २०

स्वशक्तिवड आ गिरिवर उपर आवीने जे जिनोने वांदे, ते अवश्य अचळ उदय (मोक्षने) पाम, एवी रीते श्री वीरे जेने वखाण्यो छे, ते श्री अष्टापद० २१

दक्षिणादिक चारे दिशाओमां स्थापेला ४, ८, १० अने २ म ळीने चोवीशे जिनबिंबोने चतुर गणधर श्री गौतमस्वामीए ज्यां वंद ना करी छे, ते श्री अष्टापद० २२

जे पर्वत उपर गौतमस्वामीए उपदेशेल पुंडरीक अध्ययनतु पठन करवाथी (सांभळवाथी) तिर्यग्जृंभकदेव दशपूर्वधरमां प्रधान एवा वनमा पञ्जर (वजस्वामी) थया, ते श्री अष्टापद० २३

जेमणे जिनेश्वर प्रभुने स्तव्या छे, एवा श्री गौतम गणधरे ज्यां पन्दरसो तापसोने दीक्षा आपी, ते श्री अष्टापद० २४

आठ पगथीयावाळा अने चिरकाळस्थायी रहेवावाळा श्रीअष्टापद पर्वतनी जेवा सुवर्णमय अने निश्चल वृत्तिवाळा जे सर्वज्ञ प्रभुए आ महातीर्थनु वर्णन कर्यु छे, ते श्री अष्टापदगिरि अथवा अष्टापदगिरिना नायक श्री आदिदेवप्रभु जयवन्त वर्ते छे २५

। इति श्री अष्टापदकल्पसारांश ।

नेमीश्वर प्रभुनी लेप्यमयी प्रतिमा ज्यां छ हजार वर्षसुधी (टकी) रही, ते गिरनार० १७

लेप्यमय मूर्त्तिनो नाश थये सते अम्बादेवीना आदेशथी रत्न नामना श्रावके ज्यां पश्चिम सामु (नवु) चैत्य स्थाप्यु, ते गिरनार० १८

कांचन बलानकमां अद्रना समवसरणमांथी रत्न श्रावके काचा सूतना तातणावडे खेंचीने आ (आज वाटे विद्यमान) बिंब अहीं आण्यु, ते गिरनार० १९

ज्यां नेमिनाथ प्रभुने नमस्कार करवामां (यात्रा करवामां) बौद्धवड निषेध करायेला श्री संघे (सहायने माटे) मंत्रबळथी आकाश मार्ग गमन करी शकनार जयचंद्र मुनिने ज्यां आदरथी फरमाव्यु, ते गिरनार० २०

तारा देवीने वश करीने बौद्धोने परास्त करी, जयचंद्र मुनिए ज्यां श्री संघने प्रभुना दर्शन कराव्या(प्रभु भेटाव्या), ते गिर०२१

राजा समस्त कुमारीना मुखमांथी नीकळेली गाथावडे (सिद्ध करी आपीने) अंबादेवीए दिगंबरीओ पासेथी जे तीर्थ (श्वेतांबर) संघने सदाने माटे सोंपाव्यु, ते गिरनार० २२,

त्यारथी मांडी निरंतर समस्त संघ नित्य अनुष्ठानमां जे १गाथा नो हमेशा पाठ करे छे, ते गिरनार० २३

दीक्षा, ज्ञान, ध्यान, व्याख्यान (उपदेश) अने मोक्षावलोकनने

१ उज्जितसेलसिहरे दीक्खानाणंनिसिहीआ जस्स । तं धम्मचक्क वट्टिं अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥

(निर्वाणने) स्थाने जे प्रभुचैत्यथी पवित्र छे, ते गिरनार० २४

राजीमतिनी गुफा, चद्र गुफा, गजेंद्रपद कुंड अने नागझरी प्रमुख स्थळे जे प्रभुप्रतिमाथी युक्त छे, ते गिरनार० २५.

ज्या मनोहर अने कल्याणकारक उज्जाक्षर, घर्माजनबिंदु अने शिवशिलादिक (पवित्र स्थळो) रहेला छे, ते गिरनार० २६

बाकुडी अमात्य अने सज्जन दंडेश प्रमुख अनेक उत्तम जनोए ज्या नेमीश्वर प्रभुना चैत्यनो उद्धार कर्यो छे, ते श्री गिरनार० २७

जेनी मेखला (कटोरा) ने स्थाने तेजपाळ मंत्रीश्वरे त्रण कल्याणक सबंधी चैत्य कराव्यु, ते गिरनार० २८

अने वस्तुपाळे शत्रुंजय, समेतशिखर अने अष्टापद तीर्थोनी ज्या रचना करी, ते श्री गिरनार० २९

(अवसर्पिणी काळना) छ आरामां जे अनुक्रमे छवीश, वीश, सोळ, दश अने ब योजन तथा सो धनु ((धनुष) प्रमाण उचो वर्त छे, ते गिरनार० ३०

अद्यापि ज्या गीत नृत्यादिकने करता सावधान देवो संभळाय छे ते गिरनार० ३१

विद्या प्राभृत (शास्त्र) थकी उद्धरेला पादलिप्तसूरिकृत उज्जयन कल्प विगेरे उपरथी आ प्रमाणे जेनु में वर्णन कर्यु छे, ते श्री गिरनार गिरीश्वर जयवत वर्ते छे ३२.

॥ इति श्रीगिरनारकल्पसाराश. ॥

---

२ सिद्धि शिलादिक.

अथ श्रीसंमेतशिखरकल्प साराश

आ भरत भूमिरूपी स्त्रीना विशाळ ललाट स्थळना तिलक तुल्य समेतशिखर तीर्थ के जे ससार समुद्रना तीर्थ एटले किनारा समान छे, तेने हु स्तवु छु १

जिनेश्वर अने मुनिजनोना चरण कमलने लागेली रजना समूह वडे जेनो सुदर प्रदेश शोभी रह्यो छे, अने किन्नर गणो जेनो यश गाइ रह्या छे, ते समेतशिखर गिरिराज जयवत वर्त छे २

ज्यां अजितादिक वीश जिनो अनेक मुनिओ साथे पधारी कर्ममळ रहित थइ मोक्ष प्रत्ये पाम्या छे, ते समेत० ३

आने तीर्थ जाणीने शीलसन्नाह नामे मुनींद्र ज्या अनशन करी कर्म रहित थइने मोक्ष पदने पाम्या, ते समेत० ४

बीजा पण बहु मुनिओए ज्या आवीने सुखे मोक्षपद साध्यु, एवो जेनो अपार महिमा छे, ते समेत० ५

ज्या अनेक अरिहत अने मुनिओनो मनोहर मोक्ष महिमा इद्राए करेलो छे, एवो जगतजनोने आनदित करनार श्री समेत० ६

उत्तम ध्यानने अचळपणे गवेषता मुनिवरोए अचळपणानेज करीने ध्यानना मित्ररूप जे गिरिवरनो आश्रय लीधेलो छे, त समेत० ७

ज्यां जिनेश्वरो निर्वाण पाम्या, ते स्थाने देवोए कीर्तिस्तभ जेवो (अचळ) उत्तम मणिमय स्तूपसमूह निर्माण करेलो छे, ते समेत ८

स्तूपगत चैत्योमां अजितादिक जिनपतिनी रमणिक प्रतिमाओ ज्यां सुर अने असुरोवडे पूजाय छे, ते समेत० ९.

अजितनाथथी पहेलां पण त्यां आवेला आदीश्वर प्रभु जेने ते मना शिष्योवडे जेना शिखर पावन थयेला होवाथी जे तीर्थपणे प्रसिद्ध थयेल छे, ते समेत० १०.

अद्यापि जे भव्यजनोने पृथ्वीपरथी स्वर्ग अने मोक्षे चढवाना सोपान (पगथीया)नी समानताने धारण करतो जणाय छे, ते समेत० ११

कुण्डना जळमां प्रतिबिंबित थती चैत्यश्रेणीने ज्यां सुर समूह पुष्प प्रक्षेपवावडे पूजे छे, ते समेत० १२

अत्र जिन समवसरण अत्र जिन देशना अने अत्र जिन मुक्ति थयेल छे एवी रीते जिनेश्वरना चरणथी पवित्र थयेला ज्यांना प्रदेशो रमणीय लागे छे, ते समेत० १३

साधु संगथी उत्पन्न थता प्रबल संवेग रसथी रंगायेला हरिणादिक पशुओ पण ज्यां देवगतिने पाम्या छे, ते समेत० १४

ज्यां अल्प मात्र करेल तप, जिनपूजा अने अनशनादि तीर्थना प्रभावथी अनल्प (विशाळ) फळने आपे छे, ते समेत० १५

देवेंद्रो अने मुनीन्द्रोवडे वंदित अने प्रसिद्ध एवा समेतशिखर तीर्थने जे भक्तिथी स्तवे छे, ते सकळ आपदा रहित अविचळ मोक्ष पदने पामे छे १६.

॥ इति श्रीसमेतशिखरकल्पसारांश. ॥

अथ चैत्यवंदनानि

श्री तीर्थवंदनाख्य चैत्यवंदन [१]

सद् भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने,
पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरण ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥१॥

वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते,
वक्षारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते,
चित्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥श्रीमत्तीर्थं॥२॥

श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा,
सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले,
सह्याद्रौ वैजयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥श्रीमत्तीर्थं॥३॥

आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे,
लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे देवकूटे विराटे,
कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥श्रीमत्तीर्थं॥४॥

श्री माले मालवे वा मलय निखिले मेखले पीच्छले वा,
नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा,
डाहाले कौशले वा विगलितसलिले जंगले वा तमाले ॥श्रीमत्तीर्थं॥५

अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलिंगे,
गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उड्डीयाणे च पुंड्रे,
आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे ॥श्रीमत्तीर्थां॥६॥
चंपाया चंद्रमुख्या गजपुर मथुरापत्तने चोज्जयिन्या,
कौशाम्या कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्या,
नाशिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥श्रीमत्तीर्थां॥७॥
स्वर्गे मर्त्येंतरिक्षे गिरि शिखर हृदे स्वर्नदीनीरतीरे,
शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने भूरुहाणा निकुंजे,
ग्रामेऽरण्ये वने वा जलस्थलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्ये ॥श्रीमत्तीर्थां॥८
श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रजतगिरिवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,
वृक्षाग्रे चैत्यवृक्षे रतिकरुचके कुंडले मानुषांगे,
इषुकारे जिनाद्रौ दधिमुखगिरिके व्यंतरे स्वर्गलोके ॥श्रीमत्तीर्थां॥९॥
इत्थ श्री जैनचैत्यस्तवमिममनिशं भक्ति भाजस्त्रिसंध्य,
मोद्यत् कल्याणहेतु कलिमलहरणं ये पठंति विशिष्टाः,
तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां,
कार्ये सिद्धिस्तथोच्चैः प्रभवति सततं चित्तमानंदकारि ॥१०॥

इति श्रीतीर्थवंदनाख्य चैत्यवंदन समाप्त

अथ श्री सिद्धाचल चैत्यवंदनानि

[२]

[1] विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकर,
सुरराज सस्तुत चरण पकज, नमो आदि जिनेश्वर १
विमल गिरिवर शृंग मडण प्रवर गुण गण भूधर,
सुर असुर किन्नर कोडी सवित, नमो आदि जिनेश्वर २
करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिन गुण मनहर,
निर्जरावली नमे अहनिश, नमो आदि जिनेश्वर ३
पुडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहर,
श्री विमल गिरिवर शृंग सिध्या, नमो आदि जिनेश्वर ४
निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनत प गिरिवर
मुक्ति रमणी वर्या रगे, नमो आदि जिनेश्वर ५
पाताल नर सुरलोक मांहि, विमल गिरिवरतो पर,
नहीं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो आदि जिनेश्वर ६
इम विमल गिरिवर शिखर मडण, दु ख विहडण ध्याईए,
निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योति निपाईए ७
जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पदस्थिति जयकर,
गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकर ८

---

१ निमल, २ पाव, ३ शिखर, ४ अनत क्रोडो, ५ स्त्री, ६ गिरिराजथी अधिक

[३]

आदीश्वर जिनरायना, गणधर गुणवन्त,
प्रगटनाम पुण्डरीक जास, महीमांहे महंत १
पचक्रोड मुणिंद साथ, अणसण जीहां कीध,
शुक्ल ध्यान ध्याता अमूल, कवल तीहां लीध. २
चैत्री पूनमने दिने ए, पाम्या पद महानंद,
ते दिनथी पुंडरीकगिरि, नाम दान सुखकंद ३

[४]

श्री शत्रुंजय माहात्म्यनी, रचना कीधी सार,
पुंडरगिरिना स्थापनार, प्रथम जिन गणधार १
एक दिन वाणी जिननी श्रवणी थयो आनंद,
आव्या शत्रुंजयगिरि पचक्रोड सह रंग २
चैत्री पूनमने दिने ए, शिव सुख कीधो वास,
नमिए गिरिने गणधर, आधार नहीं त्रिलोक

[५]

आदि देव अरिहंत नमु, धनुष पांचशें काया,
नहीं काम नहि क्रोध मान, तृष्णा नहीं माया १
नहीं राग नहीं द्वेष नाम निरंजन ताहरु,
वदन दीठे विशाल तीहां, सवि पाप गयु माहरु २

नामे हु निर्मल थयो, जपु जाप जिनवर तणो;
कवि ऋषभ एम उचरे, आदि देव महिमा घणो ३

[६]

जय जय नाभिनरिंदनंद, सिद्धाचल मंडण,
जय जय प्रथम जिणंदचंद भवदु:खविहंडण १
जय जय साधु सुरिंद वृंद, वंदिअ परमेसर,
जय जय जगदानंदकंद, श्री ऋषभ जिणेसर २
अमृतसम जिनधर्मनो ए दायक जगमां जाण,
तुजपदपंकज प्रीत धर निशदिन नमत कल्याण ३

[७]

परमेश्वर परमातमा, पावन परमिट्ठ,
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे मैं दिट्ठ १
अचल अकल अविकार सार, करुणा रस सिंधु,
जगति जन आधार एक, निष्कारण बंधु २
गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमहि कह्या न जाय,
राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. ३

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनानि ॥

(१)

जी आयारे विमलाचलके मेदान,
ति भायारे समवसरण महाण, , ए आंकणी
ना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम,
वर्या आठ उपर सो नाम तेहमा मान्युं पुंडरगिरि अभिधान,
इम इंद्रे तब पूछे अनुमान, किम थयु स्वामीरे,
माखो तास निदान. वीरजी० १
भुजी भाखे साभळो इंद्र, प्रथम जे हुवा ऋषभ जिणंद,
तेहना पुत्र ते भरत नरिंद भरतना हुआरे ऋषभसेन पुंडरीक,
ऋषभजी पासेरे देशना सुणी तहकीक,
दीक्षा लीधीरे निपनी ज्ञान अधिक वीरजी. २
गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादशांगी गुंथी अभिराम,
विचरे महीयलमा गुण धाम अनुक्रमे आव्यारे श्री सिद्धाचल सार,
मुनिवर कोटिरे पंचने परिवार, अनशन कीधुरे. निज आतमने
उद्धार वीरजी० ३
चैत्री पुनम दिवसे एह पाम्या केवळज्ञान अछेह,
शिवसुख वरिया अमर अदेह, पूर्णानंदीरे अगुरु लघु अवगाह,
अज अविनाशीरे निज गुणभोगी अथाह,
निज गुण करतारे पर पुद्गल नहि चाह. वीरजी० ४
तेणे प्रगट्यु पुंडरिक गिरि नाम, साभळो सोहम देवलोक स्वाम,

एहनो महिमा अतिहि उत्ताम, इणे दिन कीजेरे तप जप प्रजाने दान,
मत वळी पोसोरे जेह करे अनिदान, फल तस पामेरे, पचकोडी गुणुं
मान वीरजी ५

भक्ते भव्य जीव जे होय, पञ्चम भव मुक्ति लहे सोय,
तेहमा वाधक छे नहि कोय, व्यवहार केरीरे, म यप फलनी ए वात-
उत्कृष्ट योगरे अतरमुहूर्त जिन्यान, निरगुन साधेरे, निज आतम
अवदात वीरजी ६

चैत्री पुनम महिमा देख, पूजा पच प्रकारी विशेष,
तेहमां नहि उणिम काई रेख, ईणीपेरे भाखेरे, जिनवर उत्तम वाण,
सांभळी सुख्पारे, केइक भविक सुजाण, इणीपरे गायेरे,
पद्मविजय सुप्रमाण वीरजी ७

---

(२)

प्रणमो भेमे पुडरीक गिरि राजीयो, गाजीयो जगमा र एह सोभागी
यात्राए जाता पगे पगे निर्जरे, बहु भवसंचित रोह सोभागी प्र १
पाप होय वज्रलेप समोवडे, ते पण जायेरे दूरे सोभागी,
जो एहने गिरिनु दरशन कीजीए, भावभक्ति भरपूर सोभागी प्र० २
गौहत्यादिक हत्या पच छे, कारक तेहनो जे होय सोभागी,
ते पण ए गिरि दरशन जो करे, पामे शिवगति सोय सोभागी. प्र० ३
श्रीशुकराज नृपति पण इणगिरि, करतो जीनवर ध्यान सोभागी,
षण्मासे रिपु विलय गया सवे, वाध्यो अधिक तस वान सोभागी. प्र ४

चट्टेशगर निज भगिनी भोगवी, कीधुं पाप महन सोभागी,
ते पण ए तीरथ आराधता, पाम्यो शुभगति सन सोभागी. प्र० ५
मोर सर्प वाघण प्रमुख बहु, जीव छे जे तिर्यग्ग सोभागी
ते पण ए गिरि दरशन पुण्यथी, पामे सुगति विशाल सोभागी प्र० ६
एवा महिमा ए तीरथ तणो, कीर्ति पुनम विशेष सोभागी,
श्री विजयराज सूरीश्वर शिष्यने, दान गमा दुःखरेश सोभागी प्र० ७

---

(३)

बापल्डां पातीकडां, तमे शुं करशो हवे रहीने रे ॥
श्री सिद्धाचल नयणे निरख्यो, दूर जाओ तुमे वहीने रे ॥१॥
॥ बापल्डां रे० ॥
काल अनादि लगे तुम साथे, प्रीत करी निरवहीने रे ॥
आज थकी प्रभु चरणे रहीशुं, एम शिखवीशु मनने रे ॥ २ ॥
॥ बापल्डां रे० ॥
दुष्मकाले पण भरने, मुक्ति नहीं सज्जनने रे ॥
पण तुज भक्ति मुक्तिने खेंचे, चमक उपल जेम लोहने रे ॥३॥
॥ बापल्डां रे० ॥
शुद्ध सुवासन पूरण आव्यु, मिथ्या पंक शोषनने रे ॥
आतम भाव थयो मन निरमल, आणंदघन तुज भजने रे ॥४॥
॥ बापल्डां रे० ॥

अखय निधान तुम समकित पार्यो, कोण वछे चल धननेरे ॥
शांतसुधारस कनककचोले, मीचो सेवक तननेरे ॥ ५ ॥
॥ वापल्डा रे० ॥

बाह्य अभ्यतर शत्रु फेरो, भय न होवे मुज मननेरे ॥
सेवक सुरीयो सुजस विलासी, से महिमा प्रभु तुजनेरे ॥६॥
॥ वापल्डा रे० ॥

नाम भत्र तुमारो साध्यों, ते थया जग मोहननेरे ॥
तुज मुख मुद्रा देखी हरखु, जीम चातक जलधरनेरे ॥ ७ ॥
॥ वापल्डा रे० ॥

तुम विण अवर देव नहा जाचु, ध्यानु फरि फरि आ मननेरे ॥
ज्ञानविमल कहे भवजल तारो, सेवक नाथ ग्रहीनेरे ॥ ८ ॥
॥ वापल्डा रे० ॥

---

(८)

नीलुडी[1] रायण तर तळे, सुण सुदरी ॥
पीलुडा[2] प्रभुना पायरे, गुणमजरी ॥
उज्वल ध्याने ध्याईए ॥ सुण० ॥ परीज मुक्ति उपायरे ॥ गुण० ॥ १
शितळ छायाए बेशीए ॥ सुण० ॥ रातडो[3] करी मनरगरे ॥ गुण० ॥
पूजीए सोवन फूल्डे ॥ सुण० ॥ जेम होय पावन अगरे ॥ गुण० ॥ २
खीर झरे जेह उपरे ॥ सुण० ॥ नेह धरीन एहरे ॥ सुण० ॥
त्रीजे भवे ते शिव लहे ॥ सुण० ॥ थाये निरमळ देहरे ॥ गुण० ॥ ३

१ नीलवर्णा० २ पीळा—सुवर्णवर्णा ३ चोलमजीठ जेवो

मौन धरी मदासिणा॥ सुण० ॥ नीद एहने जे सारेरे ॥ गुण० ॥
अभग प्रीति होय जेहने ॥सुण०॥ भव भव तुम आधारेरे ॥गुण०॥४
कुसुम पत्र फल मजरे[1] ॥ सुण०॥ शाखा थड ने मूळरे ॥गुण०॥
देव तणा वासाअ छे ॥ सुण० ॥ तीरथने अनुकूळरे[2] ॥गुण॥ ५
तीरथ ध्यान धरी मुदा[3] ॥सुण०॥ सेवो एहनी छायरे ॥ गुण० ॥
ज्ञान विमळ गुण भाखियो ॥सुण०॥ शत्रुंजय माहातम मांयरे ॥गुण०॥६
॥ इति ॥

(५)

सुरपति आगळ एम जंपे श्री वीर जिनेश्वर, गिरिराज.
ए तो सकळ तीरथमाहि सार शत्रुंजय सुखकर, गिरिराज ॥१॥
सिध्या इहा साधु अनंत, अनंत केवळ धरा, गिरिराज
जिनवर इहां आव्या अनेक जाणीने पावनधरा, गिरिराज ॥२॥
रायण तळे ऋषभ जिणंद गुणाकर गेहगु, गिरिराज
पूर्वार्ध पुर्व नवाणु वार पधार्या प्रेम शु, गिरिराज ॥३॥
एनो मोटो महिमा वरवानी पीठ वखाणिये, गिरिराज
त्रिभुवन तारण एह तीरथ जगमाहि जाणिये, गिरिराज ॥४॥
दीठे करे दुरगति दूर ए दुषम काळमां, गिरिराज
धारीनेरे जडए सिद्धक्षेत्र रहिये एनी चालमां, गिरिराज ॥५॥

[1] मांजर डाळ. [2] तीर्थ भक्त देवनामानो वासा छे [3] हर्षथीर

(६)

सिद्धाचल गिरि भेट्यारे, धन्य भाग्य हमारा,
विमगाचल गिरि भेट्यारे, धन्य भाग्य हमारा
ए गिरिवरनो महिमा मोटा, कहेता नावे पार;
रायण रूख समोसर्या स्वामी, पुरव नवाणु वार रे, ध १
मुल नायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार,
अष्टद्रव्यशु पूजो भावे, समकित मुल आधार रे ध २
भाव भक्तिशु प्रभु गुण गावे, आपणा जनम सुधार्यो,
यात्रा करी भविजन शुभ भावे, निरय तिर्यच गति वार्या रे ध ३
दुर देशांतरथी हु आव्यो, श्रवण सुणी गुण तारा,
पतित उद्धारण बिरुद तुमारु, ए तीरथ जग सारा रे. ध ४
सवत अढार त्याशी मास अषाढे, वदि आठम भोमवारा,
प्रभुजीके चरण प्रतापके सघमें क्षमारतन प्रभु प्यारा रे. ध ५

---

(७)

मनना मनोरथ सवि फल्याए, सिध्या वछीत काज,
पुजो गिरिराजने ए, भावे ए गिरि शाश्वतो ए
भवजळ तरवा श्राज, पूजो गिरिराजने ए,
मणि माणेक मुगताफळेए, रजत कनकना फुल प२
केशर चदन घसी घणाए, बीजी वस्तु अमुल्य प२

१ पाच मोड

उंढे अगे दाखवीयोए, आठमे अंगे भाख. पू०
स्थिरावत्री पचने चरणव्योए, ए आगमनी शाख पू०
विमळ करे भवि लोकने ए, तेणे विमळाचळ जाण पू०
शुक राजाथी विस्तर्यो ए, शत्रुंजय गुण खाण पू०
पुंडरीक गणधरथी थयोए, पुंडरीक गिरि गुण धाम. पू०
सुरनर कृत एम जाणीएए, उत्तम एकवीस नाम पू०
ए गिरिवरना गुण घणाए, नाणीए नवी कहेवाय. पू०
जाणे पण कही नवि शके ए, सुगद घृतने न्याय. पू०
गिरिवर फरशन नवि कर्यो ए, ते रह्यो गरभावास पू०
नमन दरशन फरशन कर्यो ए, पुरे मननी आश पू०
आज महोदय में लह्यो ए, पाम्यो प्रमोद रसाळ. पू०
मणी उद्योत गिरि सेवता ए, घेर घेर मंगळ माळ पू०

---

(८)

चालो चालो विमळगिरि जइएरे, भवजळ तरवाने;
तुमे जयणाए धरजो पायरे, पार उतरवाने ए आंकणी,
माळ काळनी वेष्टा टाळी, हु तो धर्म योवन हवे पायोरे भव०
मूल अनादिनी दूर निवारी, हु तो अनुभव मनमा लायोरे
पार० चालो० १
भव नरवा सवी दूर निवारी, मारी जिनचरणे लय लागीरे, भव०
सुरर भावना दिल हवे उलीसु, मारी भवनी भावठ भागीरे
पार० चालो० २

सचित सरवनो त्याग करीने, नित्य एकासणा तपकारीरे भव०
पडिक्कमणां दोय टकना करशुं, भली अमृतक्रिया दिल धारीरे
पार० चालो० ३

व्रत उच्चरशुं गुरुनी पासे, हुं तो यथाशक्ति अनुसारे भव०
गुरुसाथे चडशुं गिरि पाजे, जे भवोदधि बुडता तारे
पार० चालो० ४

भव तारक ए तीरथ फरसी, हुं तो सूरज कुंडमा नावीरे भव०
अष्टप्रकारी ऋषभजिणंदनी, हुं तो पूजा करीश लय लावीरे,
पार० चालो० ५

तीर्थपतिने तीर्थसेवा, ए तो साचा मोक्षना मेवारे भव०
सात छठ दोय अठ्ठम करीने, मने स्वामी वच्छलनी हेवारे,
पार० चालो० ६

प्रभुपदपद्म रायणतळे पूजी, हुं तो पामीश हरख अपाररे भव०
रूपविजय प्रभु ध्यान पसाए, ए तो पामे सुख श्रीकाररे,
पार० चालो० ७

---

(९)

सिद्धाचल वंदोरे नर नारी २
नाभिराया मरुदेवा नंदन, ऋषभदेव सुखकारी सिद्धा० ॥१॥
पुंडरीक प्रमुख मुनिवर सिद्धा, आतम तत्त्व विचारी, सिद्धा० ॥२॥
शिव सुख कारण भवदुःखवारण, त्रिभुवन जन हितकारी सि० ॥३॥

समकित शुद्ध करण ए तीरथ, मोह मिथ्यात्व निवारी सिद्धा०॥४॥
ज्ञान उद्योत प्रभु केरा धारी, भक्ति करु एकतारी सिद्धा० ॥५॥

---

(१०)

प्रभु तुरि तुहि तुहि तुहि तुहि धन्ना यानेरे ए देशी
विमल गिरिवर शिखर सुन्दर, सकल तीरथ सारुरे,
नाभि नंदन त्रिजग वंदन, ऋषभ जिन सुखकाररे विमल० १
चैत्यतले वर रम्य रायण, सोहे अति मनोहाररे,
नाभि नन्दन तणां पगलां, भेटता भव पाररे विमल० २
समवसरिया आदि जिनवर, जाणी लाभ अनंतरे,
अजित शांति चउमास रहिया, इम अनेक महंतरे विमल० ३
साधु सिध्या जिहां अनंता, पुंडरीक गणधाररे,
शाम्ब ने प्रद्युम्न पांडव, प्रमुख बहु अणगाररे विमल० ४
नेमि जिनना शिष्य थावच्चा, सहस्स परिवाररे,
अंतगडजी सूत्रमांही, ज्ञातासूत्र मझाररे विमल० ५
भाव सहित भवी जे फरसे, सिद्धक्षेत्र सुठामरे,
नरक तिर्यग् दो निवारे, जपे नाम जिन नामरे विमल० ६
रयणमय जे ऋषभ प्रतिमा, परसय धनु मानरे,
नित्य भरते जिहां इंद्र पूजे, दुषम समय प्रमाणरे विमल० ७
त्रीजे भवे जे मुक्ति पहोंचे, भविक भेटे तेहरे,
दान शांति ए सकल वंछित, पुरवे ससनेहरे विमल० ८

इणी परे अमनो सकळ महिमा, कहो जाय कहां के?
ज्ञानविमल गिरिराजनी भावो, भवोभवना निवारे सिद्ध० ७

---

(११)

श्री सिद्धाचल भेट्या, मुज मन अधिक उमाहो,
ऋषभदेव पूजा करी, लीजे भवतणो लाहो श्री०
मणिमय मूरत श्री ऋषभनी, निपाइ अभिराम,
भुवन कराव्यो कनकमय, राख्यो भरते नाम श्री०
नेम विना त्रेवीश जिन, आव्या सिद्धगिरि ठाम,
भरतना थया तीरथ नहीं, बोल्या सिद्धगिरि वाणी श्री०
पूरव नवाणुं समोसर्या, स्वामी ऋषभ जिणंद,
राम पांडव शिवे सुख लह्या, पाम्या परमानंद. श्री०
पूरव पुण्य पसायथी, पुंडरिक गिरि पाया,
कांति विजय हरखे करी, श्रीसिद्धाचल गाया श्री०

अथ स्तुतय

(१)

श्री शत्रुंजय तीरथ सार, गिरिवरमां जेम मेरु उदार,
ठाकोर रामापार
मंत्र मांही नवकार ज जाणुं, तारामां जेम चंद्र वखाणुं,
जलधर जलमां जाणु

पर्वीमा उत्तम जेम हस, कुळमाही जेम ऋषभनो वंश,
नाभि तणो ए अंश
क्षमावंतमा श्री अरिहंत, तपशूरा मुनिवर महंत,
शत्रुंजय गिरि गुणवंत ॥१॥

(२)

श्री सिद्धाचल मंडण, ऋषभ जिणंद दयाल,
मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण काल
ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणुं वार,
आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥ १ ॥

(३)

पुंडरीक मंडण पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिन चंदाजी,
नेमि विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढिया आणंदाजी
आगममांहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी,
चैत्री पूनम दिन देवी चक्केसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥१॥

(४)

पुंडर गिरि महिमा आगममां प्रसिद्ध,
विमलाचल भेटी लहिए अविचल ऋद्ध,

पंचम गति पहोंच्या मुनिवर कोडा कोड,
एवो तीरथ आणी कर्म विपाक निछोड

(५)

आदि जिनवर राया जास सोवन काया,
मरुदेवी माया धोरी लंछन पाया,
जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरि राया मोक्ष नगरे सिधाया

तपनो प्रभाव तथा तपकरवानी आवश्यकता.

" समता सहित करवामां आवता तपथी निकाचित कर्मनो पण क्षय थइ जाय छे " तो पछी बीजा कर्मानु कहेवुज शु ?

" प्रदीप्त करेला तप–अग्निवडे अशुद्ध एवु जीव–सुवर्ण विशुद्ध थइ शके छे. " मतलब के तीव्र तप सेववाथी आत्मा उज्वल थाय छे

" तीर्थंकरोए पोते पण तप सेव्यो छे अने तेथी अद्भुत लाभ जाणी भव्य जनोना हितमाटे तीर्थंकरोएज तपनु सेवन करवा फरमान करेलु छे तपथी द्रव्य भाव लक्ष्मीनी प्राप्ति थाय छे, भव भ्रमतिनो क्षय थाय छ, रोगनु निर्मूलन थाय छे, कर्मनो अत थाय छे, विघ्नो विसराल थइ जाय छे, इंद्रियोनु दमन थाय छे, मंगलमाळा विस्तरे छे, इष्ट अर्थ सिद्ध थाय छे, देवनानुं आकर्षण

थाय छे, तेमज तेथी कामविकार नष्ट थाय छे, माटे मोक्षना अर्थी जनोए तपनुं सेवन अवश्य करवुं जोइए."

१ ऋषभदेव भगवान एक वर्ष पर्यंत अने वर्धमान स्वामी [illegible] मास पर्यंत अशनादिक आहार रहित उपोषितपणे विचर्या अने प्रमाद रहित संयम मार्गने पाळता ध्यानमां झकझोळ रह्या हता एम उपदेशमाळादिक शास्त्रथकी जाणी आत्मार्थी जनोए ए रीते तपनुं यथाशक्ति सेवन करवामां अधिक आदर राखवो युक्त छे

२ दुष्कर तपवडे सघळा घनघातिक कर्मोनो क्षय करी निर्मळ केवळ ज्ञान प्राप्त करी तीर्थंकरोए भव्य जीवोना हित माटे द्वादश विध (बार प्रकारना) तपनुं प्रतिपादन कर्युं तेमां १ अनशन २ ऊणोदरी ३ वृत्तिसंक्षेप, ४ रसत्याग ५ कायक्लेश (देह दमन) अने ६ अंगसंलीनता,[1] ए छ प्रकारना बाह्यतप अने १ प्रायश्चित्त, २ विनय, ३ वैयावच्च, ४ स्वाध्याय, ५ ध्यान अने ६ कायोत्सर्ग, ए छ प्रकारनो अभ्यंतर तप कर्यो प्रकाशेल छे. बाह्यतप सेवन करवानुं अभ्यंतर तपनी पुष्टिमाटे भगवाने कहेलुं छे तेथी जेम विनयादिक तपोगुणनी वृद्धि थवा पामे तेम लक्ष पूर्वक ते बाह्यतपनुं सेवन करवुं घटे छे अने त्यारे ज तेनी सार्थकता छे. अभ्यंतर तपथी एकांत हित संपजे छे.

३ तपवडे सुवर्ण पुरुषादिक सिद्धियो प्राप्त थाय छे, तेमज

---

१ काचबानी पेठे शरीरना अंगोपांग संकोचीने राखवा.

नगरादि शिलातिपुष्पादिकनी देव 'प्रभावतिनी दश भय थाय छे तुभो' शिलातिपुष्पे उपाय, हिंस अने करा व प्रगट दर्शना धरण, दमन अने सिद्धिपामनाग भवतदे पादर्पणनु विद्याग करी पोताना आत्मानो उद्धार कया छ्न्न पर्धी भवांतरमां रहेला प्रना हाल करी मोल रसमाला ५ण बने, पांच मीह ज वस्तु ले के ' ज नई ज, दुगागर व अने दवाओन पण दुर्लभ छे ने नगर्ष्ठ नगरादि माण थाय छे गगनो प्रभाव मनस्वर अभिनव छे ' "

८ श्री सिद्धाचलनु आगमन करनो आचरित नगरदे श्रीपाल राजानो कुष्ठरोग (कोढ) नाश थयो अने तेनी राणी कमल वर्णी थई व राते पीजा मारणी कुष्टीओना रोग पण दूर गया

■ प्रभु-श्री चार-नीतम्यादिक दूरथी वरनार ब्रह्मचारी मर रह कल्प करीना हाल करी तत्काल पाम्या

६ द्वारिकानगरीमां द्वैपायनऋषिक उपसर्गो आचरित नगरना प्रभावथी द्वादश वर्ष पर्यंत भगी गरमा नगरे कोरा लय करवा मा भद्र-निधिन परिणामी थया त्यारेज उपसर्गो प्रगट थया

७ " इन्द्रिया रूप विकारदि चाण्डालप परनतु भरण करी निगरपी कर्डीयाना स्थिति नरनाग रागादिक मोहरूप सुभंगो

१ जन्म मरणनी परंपरा

२ श्री तीर्थंकर पदवी प्राप्त करवा पहेलाना श्रीजा भवमां अरि हंतादिक वीशस्थानक पैकी एक बे यावत् वीशे स्थानकोनु यथा विधि आराधन करतेसे कोई विरल महात्माओ श्री तीर्थंकर नाम कर्मो निकाचे छे अेवा परिणाम तमो त्रिगुणरो पुण्यना साधक बनेछे

अति भयंकर बने छे परंतु जो तेमने सर्वथा भूख्या राखवामा आवे छे तो खरेखर थोडाज वखतमा तेओ नाश पामे छे अने पछी पूर्वे नहि अनुभवेलु अति अद्भुत सुख मगटे छे " एवी रीते तपवडे इंद्रियदमन अने रागादि दोषोनो पण निग्रह थाय छे

८ कुग्रह पीडा अने दुर्निमित्तादिकनो क्षय करनार अने सुख संपदाने मेळवी आपनार तप खरेखर भगळकारी छे

९ अष्ठमतपना प्रभाववडे मागध, वरदाम, गगा, सिंधु अने प्रभासाधिप देवोनो पण मनमानतो जय चक्रवर्तीओ करी शके छे

१० तपवडे हरिकेशीबल मुनिनी पेरे देवनु आकर्षण थाय छे एटले तपना प्रभावे देवता पण दास थइ तपस्वी जनोनी सेवा भक्तिमा हाजर रहे छे

११ " एक रसनेंद्रियद्वारा ज्यांसुधी अन्न जळ नियम वगर भख्या करे छे त्यांसुधी माणीओना उग्र[1] कर्म, देह-दुर्गने[2] तजीने जता नथी " ए रीते तो रागादिक उलटा मजबूतज बने छे आ हेतुथी ज अनशन, उनोदरी प्रमुख बाह्यतपनु निर्माण करेल छे, अने सरस-मादक आहार तेमज अतिवणो (जरूर करता वधारे) नीरस आहार पण ब्रह्मचारी जनोने अवश्य वर्जवो कह्यो छे. इत्यादिक अनेकानेक हेतुओवडे तपनो प्रभाव अने तप करवानी आवश्यकता सहज सिद्ध थाय छे इति शम्

---

१ आकरां. २ किल्ला.

वीशस्थानकपदनु टुक विवेचन

(ए तपनु आराधन करवा इच्छनारने खास उपयोगी)

१ श्री अरिहंतपद–' सवी जीव करुं शासन रसी ' एवी उत्तम भावनारूप भावदयाना परिणामपूर्वक निर्मळ आचार विचारवडे तीर्थंकर नाम उपार्जन करी माय' उत्तम प्रकारना देवलोकमा उपजी, त्याथी च्यवी उत्तम कुळमा त्रण ज्ञानसहित मनुष्यपणे अवतरी, अनुक्रमे सकळ भोग सामग्री तजी, परम वैराग्य पामी, वरसीदानवडे दीन–दुःखी जनोनो उद्धार करी, सहु स्वजन वर्ग प्रमुखने संतोषी, जे अप्रमत्त भावे दीक्षा ग्रही, दुष्कर तपवडे घनघाति कर्मने खपावीने केवळज्ञानादिक अनंत आत्म–संपदा पामे छे, अने सकळ इंद्रोवडे अर्चित सता, देवनिर्मित समवसरणमां स्थापित करेला सिंहासन उपर बिराजमान थइने, भव्य जनोने अमृतसमान हित–उपदेश अग्लानपणे आपे छे ते अरिहंत–तीर्थंकर पद(पदवी) सहु करतां श्रेष्ठ उपकारक होवाथी अवश्य आराधवा योग्य छे ए माटे अरिहंत पद पंच परमेष्ठीमां प्रधान छे अने नाम स्थापनादिक चारे निक्षेपे सदाय ध्यान करवा योग्य छे

२ श्री सिद्धपद–सकळ कर्म उपाधि सर्वथा निवारीने आत्मानु सहज निरुपाधिक शाश्वत् सुख आपवा समर्थ श्री जिनेश्वर भगवानना सनातन मार्गने अनुसरी सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूप रत्नत्रयीनुं यथार्थ आराधन करी आत्मानी अनंत शक्ति–अनंत सुख समृद्धिने आवरनारां सकळ कर्मबंधनने तोडी नाखी, जेओ

जन्म जरा मरणादिक दुःखथी रहित, अक्षय-अविनाशी शिव सपदाने वरे छे ते सघळा सिद्ध परमात्माओनु आराधन आ सिद्धपदथी थइ शके छे ते पद परम निर्मळ छे

३ श्री प्रवचनपद—तीर्थंकर भगवानना प्रकृष्ट वचन-आज्ञा प्रमाणे वर्तनारा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध सघने तीर्थंकरनी पेरे परम प्रेमभावथी सेववा योग्य छे श्री तीर्थंकर महाराज पण देशनाना आरंभमा 'नमो तित्थस्स' कहे छे एटले श्री सघने नमस्कार करे छे, तो पछी तीर्थंकर भगवाने मान्य करेला श्री सघने कोण न माने? अपि तु सहु कोइ शासन रागी जनोए श्री सघनो विशेष आदर करवो जोइए श्री सघ अनेक सद्गुणी आत्माओना समुदायरूप होवाथी तेने अनत गुण-रत्नोनो निधान मानी सदाय सेववा योग्य ज छे श्री सघनी शुभ दृष्टि प्राणीयोना रागद्वेषादिक भाव रोगोने टाळवा अमृत समान उपयोगी छे कोइ धन्य-कृतपुन्य जनो श्री सघनु यथाविधि आराधन करे छे-करी शके छे.

४ श्री आचार्यपद—पाच इन्द्रियोनु दमन, नवविध ब्रह्मचर्यनु पालन, चार कषायनो जय, पाच महाव्रतनु पालन, पचाचारनु सेवन, तेमज पाच समिति अने त्रण गुप्तिनु पालन, ए ३६ गुणो अथवा एवा अनेक गुणोना समुदाय जेमनामा प्रगट्या होय, जेओ सयम व्रतमा शिरोमणि होय, तेमज सकळ शास्त्रमा पण पारगामी होय, ते आचार्य भगवतो जैन शासनने अत्यत उपकारक होवाथी सदाय सेववा योग्य छे

५ श्री स्थविरपद—निर्मळ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिक गुणो-

वीशस्थानकपदनु टुक विवेचन

(ए तपनु आराधन करवा इच्छनारने खास उपयोगी)

१ श्री अरिहंतपद–' सवी जीव करु शासन रसी ' एवी उत्तम भावनारूप भावदयाना परिणामपूर्वक निर्मळ आचार विचार वडे तीर्थंकर नाम उपार्जन करी भाय. उत्तम प्रकारना देवलोकमा उपजी, त्यांथी च्यवी उत्तम कुळमा त्रण ज्ञानसहित मनुष्यपणे अवतरी, अनुक्रम सकळ भोग सामग्री तजी, परम वैराग्य पामी, वरसीदानवडे दीन–दु खी जनोनो उद्धार करी, सहु स्वजन वर्ग प्रमुखने संतोषी, जे अप्रमत्त भावे दीक्षा ग्रही, दुष्कर तपवडे घनघाति कर्मने खपावीने केवळज्ञानादिक अनंत आत्म–संपदा पामे छे, अने सकळ इन्द्रोवडे अर्चित सता, देवनिर्मित समवसरणमा स्थापित करेला सिंहासन उपर बिराजमान थइने, भव्य जनोने अमृतसमान हित–उपदेश भगवानपणे आपे छे ते अरिहंत–तीर्थंकर पद(पदवी) सहु करता श्रेष्ठ उपकारक होवाथी अवश्य आराधवा योग्य छे ए वळी अरिहंत पद पंच परमेष्ठीमा प्रधान छे अने नाम स्थापनादिक चारे निक्षेपे सदाय ध्यान करवा योग्य छे

२ श्री सिद्धपद–सकळ कर्म उपाधि सर्वथा निवारीने आत्मानु सहज निरुपाधिक शाश्वत् सुख आपवा समर्थ श्री जिनेश्वर भगवानना सनातन मार्गने अनुसरी सम्यग् दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूप रत्नत्रयीनु यथार्थ आराधन करी आत्मानी अनंत शक्ति–अनंत सुख समृद्धिने आवरनारां सकळ कर्मबंधनने तोडी नाखी, जेओ

जन्म जरा मरणादिक दु खथी रहित, अक्षय-अविनाशी शिव मपदाने वरे छे ते सघळा सिद्ध परमात्माओनु आराधन आ सिद्धपदथी थइ शके छे. ते पद परम निर्मळ छे

३ श्री प्रवचनपद—तीर्थंकर भगवाननां प्रकृष्ट वचन—आज्ञा प्रमाणे वर्तनारा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध सघने तीर्थंकरनी पेरे परम प्रेमभावथी सेववो योग्य छे श्री तीर्थंकर महाराज पण देशनाना आरभमा 'नमो तित्थस्स' कहे छे एटले श्री सघने नमस्कार करे छे, तो पछी तीर्थंकर भगवाने मान्य करेला श्री सघने कोण न माने? अपि तु सहु कोइ शासन रागी जनोए श्री सघनो विशेष आदर करवो जोइए श्री सघ अनेक सद्गुणी आत्माओना समुदायरूप होवाथी तेने अनत गुण-रत्नोनो निधान मानी सदाय सेववो योग्य ज छे श्री सघनी शुभ दृष्टि प्राणीयोना रागद्वेषादिके भाव रोगोने टाळवा अमृत समान उपयोगी छे कोइ धन्य-कृतपुन्य जनो श्री सघनु यथाविधि आराधन करे छे-करी शके छे

४ श्री आचार्यपद-पाचे इद्रियोनु दमन, नवविध ब्रह्मचर्यनु पालन, चार कषायनो जय, पाच महाव्रतनु पालन, पचाचारनु सेवन, तेमज पाच समति अने त्रण गुप्तिनु पालन, ए ३६ गुणो अथवा एवा अनेक गुणोना समुदाय जेमनामां झळहळी रह्या होय, जेओ सयम व्रतमा शिरोमणि होय, तेमज सकळ शास्त्रमां पण पारगामी होय, ते आचार्य भगवतो जैन शासनने अत्यत उपकारक होवाथी सदाय सेववा योग्य छे

५. श्री स्थविरपद-निर्मळ ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिक गुणो-

नु ससेवन करवाथी जेओए पोताना आत्माने स्थिर-शान्त करेलो छे अने उत्तम प्रकारनी क्षमा, मृदुता अने सरलतादिक सद्गुणोवडे जेओ अन्य साधु जनोने यथावसर जरूर पूरती सहाय आपी संयम मार्गमा स्थिर करे छे, ते स्थविर साधुओ जैनशासनना दीपावनार होवाथी, तेमज नवीन अने शिथिल थयेला साधुओने आलंबनभूत होवाथी सदाय सेववा योग्य छे

६ श्री उपाध्याय पद-निर्मल शास्त्र बोधसहित शुद्ध चारित्र पाळवामा सदाय सावधान रही, केवल उपकार दृष्टिथी साधुसमुदायने अनेक प्रकारे सहाय अर्पी जेओ पथ्थर जेवा जड बुद्धिवाळा शिष्योने पण सुशिक्षित करे छे अने उत्तम रहणी-करणीवडे शिष्योने सुविनीत बनावे छे, ते आचार्यने, गच्छने, यावत् श्रीसंघने सहायक श्रीउपाध्याय भगवंतो सहु कोई आत्मार्थी जनोए सदाय सेववा योग्य छे

७ श्री साधुपद-सांसारिक सुखनी असारता जोईने तथा जन्म मरणना अनंत दुःखथी त्रास पामीने संसारनो फेरो टाळवा अने शाश्वत् सुखमां ठरवा माटे आत्मिक शक्ति जगावी, अनुक्रमे सांसारिक बंधनोने कापी, उज्वळ रत्नत्रयीनु पालन करता सद्गुरुनु शरण ग्रही, प्रमादरहित केवल आत्मामांज लक्ष राखी, जे संयममार्गने सारी रीते पाळे छे अने अन्य आत्मार्थी जनोने पण यथाशक्ति सहाय आपी सन्मार्गे चढावे छे, ते साधु जनो स्वपर उपकारक होवाथी सदाय सेववा योग्य छे

८ श्री ज्ञानपद–जेथी स्व परने, जड चेतनने, गुण दोषने, हित अहितने, भक्ष्याभक्ष्यने, यावत् कर्तव्याकर्तव्यने ओळखी शकाय अने अनादि अज्ञान–अविद्या–जडता टाळी शकाय, जेथी स्वपरमा विवेक दीपक प्रगट थता आत्मप्रकाश थाय, अ यात्म स्वरूप झळके, ते ज्ञान अत्यंत उपकारक होवाथी आत्मकल्याणने इच्छता सहुकोई भाई बहेनोए अवश्य अभ्यासवु योग्य छे

९ श्री दर्शनपद–जेवडे सर्वज्ञ भगवाने भाखेला जीव अजीव पुन्य पाप, आश्रव संवर, बंध मोक्ष अने निर्जरारूप नव तत्त्व तथा पद्* द्रव्य, सप्तभंगी,' सप्तनय', चार निक्षेपा प्रमुख सर्व भावोने सत्य प्रमाणिक लेखी अवधारी शकाय, जे संयमादिक सकळ गुणना पा यारूप छे–जेम एकडावगरना मींडा नकामा छे तेम जेना वगर करेली क्रिया क्लेशरूप थाय छे, पण कल्याणरूप थती नथी, ते दर्शनपद सदा सेववा योग्य छे चिंतामणि रत्न समान सुखदायी सम्यक्त्वने पामवा अने अभ्यासवडे भाग्ययोगे पामी तेनी रक्षा अने पुष्टि करवा अन्य स्थळे विस्तारथी कहेला तेना दूषण भूषण प्रमुख ६७ बोलो सारी रीते समजी तेमा विवेक धारवो जोइए (जूओ "श्रद्धाशुद्धि उपाय.")

* १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ जीवास्तिकाय, अने ६ काल. १-१ स्यात् अस्ति, २ स्यात् नास्ति, ३ स्यात् अस्ति-नास्ति ४ स्यात् अवक्तव्य, ५ स्यात् अस्ति अवक्तव्य, ६ स्यात् नास्ति अवक्तव्य, ७ स्यात् अस्ति नास्ति युगपत् अवक्तव्य २-१ नैगम, २ संग्रह, ३ व्यवहार प्रमुख (जूओ 'जैन-तत्त्वप्रवेशिका ')

१० श्री विनय पद–जेवडे राग द्वेषादिक दुश्मन मात्र मूळथी दूर थइ जाय ते विनय कहेवाय छे गुण–गुणी मत्ये मृदुता राखी आत्मामा उत्तम गुण मगट करवा माटे सद्गुणीने देखीने के सांभळीने मनमा प्रमुदित थावु, तथा तेवा सद्गुणी सज्जनोनी यथाशक्ति भक्ति, बहुमान, गुणस्तुति करी आपणे पण तेवा सद्गुणी थवा इच्छा राखवी, एटलुज नहि पण तेवा सद्गुणोनो वारवार परिचय राखवो, सत सुसाधु जनोना नजीवा अवगुण उघाडा पाडी तेमनी कोई रीते निंदावणा करवी नहि, तेमज तेमनी अवज्ञा–आशातनादिक करवारूप विराधनाथी तो सदतर दूरज रहेवु अने अरिहंतादिक पज्य पुरुषो मत्ये पूर्णप्रेम मगटावी यथायोग्य विनय करवो विनयवडेज विद्या, विज्ञान अने चारित्र धर्मनी अनुक्रमे माप्ति थता छेवटे मोक्षपद माप्त थाय छे ते माटे सकळ गुणमा साररूप विनय अवश्य सेववो योग्य छे

११ श्री चारित्र पद–जेथी अनादिसचित कर्ममळथी मुक्त थइ शकाय अने शुद्ध स्फाटिक रत्नसमान निर्मळ–निष्कपाय आत्माना स्वाभाविक स्वरूपने पामी शकाय, ते चारित्र पदने इन्द्रादिक देवो पण सदाय नमस्कार करे छे अनतानुबधी आदि कषायोनो क्षय, उपशम के क्षयोपशम थवाथी आ चारित्र गुण मगटे छे उत्तम मकारनी क्षमा–समता राखवी ए चारित्रनु खरं रहस्य छे एथी चारित्रवत सज्जनो शीघ्र स्वहित साधी शके छे माटे ते सदाय सेववा योग्य छे

१२. श्री ब्रह्मचर्य पद–जेथी स्वरूपचर्या–स्वरूप रमणता अथवा शुद्ध चारित्रनो लाभ थाय, अनेक प्रकारनी विषयासक्ति दूर थई जाय अने आत्माना स्वाभाविक सुखनो अनुभव थाय ते ब्रह्मचर्य पद विश्ववंदित छे यथार्थ ब्रह्मचर्यनु पालन करनार महासुकृती छे गमे तेवा अन्य सुकृत करनार प्राणी यथाविधि ब्रह्मचर्य पाळनारनी होड आवी शकता नथी, जेने माटे विजय शेठ अने विजया शेठाणी, सुदर्शन, जंबूस्वामी अने स्थूलभद्रादिकना दृष्टांत सुप्रसिद्ध छे यथार्थ ब्रह्मचर्यनु पालन ए परम सतोषनु परिणाम होवाथी अते अक्षय सुख मेळवी आपे छे, तेथी सहु कोई कल्याणार्थी भाई बहेनोए पूर्ण प्रेमथी तेनु पालन करवु उचितज छे

१३. श्री क्रिया पद–क्रिया–आचरणवगरनु एकलु ज्ञान पागळु छे, अने ज्ञानवगरनी एकली क्रिया पण आंधळी छे परंतु परमार्थ–समज सहित करवामा आवती सघळी शुभ करणी लेखे थाय छे सर्वज्ञ देशित सत् क्रिया तरफ शुभ रुचि प्रगट थवी ए ज्ञाननुज शुभ परिणाम सूचवे छे तेथी जेमने अत्यत क्रियारुचिपणु तेमज क्रियामार्गमा आदर होय छे, तेमन ज्ञानदशा पण आकरी (तीक्ष्ण) होवी घटे छे वळी क्रियारुचि शुक्लपक्षी एटले अल्पकाळमा ससारनो अंत करी मोक्षमा महालनार होई शके छे अने जेने इतु क्रियारुचि प्रगटीज नथी ते कृष्णपक्षी एटले ससारचक्रमा घणो लांबो वखत परिभ्रमण करनार होई शके छे रहेणी–करणीवगरनी कोरी कहेणी केवळ तेवारूप थाय छे रसोईनु नाम लेवा मात्रथीज

कई भूख भागती नथी, पण तेनु सेवन–आस्वादन करवाथीज भूख शमे छे अने गति–क्रिया करवाथीज आपणे धारेला मुकामे पहोंची शकीए छीए एम समजी सत् क्रियामार्गमा अधिक रुचि धारवी योग्य छे

१८. श्री तप पद–जेम अग्निनो अधिक ताप आपवाथी सोनामा रहेलो मेल बळी जई ते शुद्ध वाचन–कुंदन थाय छे, तेम शास्त्रमां कहेला अनेक प्रकारना बाह्य–अभ्यंतर तप क्षमासहित सेवन करवाथी आत्मामा रहेला चिकणा–निकाचित कर्म पण क्षय पामी जाय छे अने आत्मानु शुद्ध स्वाभाविक स्वरूप प्रगटी नीकळे छे एवो ए तपनो प्रभाव जाणी तीर्थकर गणधर जेवा तद्भवे मोक्ष जनार पण तेनु भावथी सेवन करे छे माटे ते तप सर्वथा सेव्यज छे

१९ श्री गौतम पद–छह छह तपे पारणु करनार, चार ज्ञानना धारक अने अठ्ठावीश महाल[illegible]ना धणी श्री [illegible], श्री
प्रभुना मुख्य गणधर हता तेमनु गोत्र 'गौतम' [illegible]
लब्धी पात्र होवाथी तेओ 'गौतम' [illegible]
तेमनु पवित्र नाम लेतां चोवीशे प्रभना [illegible]
स्मरण कर्यु जाणवु श्री वीर [illegible]
अनहद हतो ते जाणीने [illegible]
कृत्रिम अने अपार प्रेम [illegible]
गौतम स्वामीनु दृष्टांत [illegible]
योग्य छे वळी तीर्थंकर [illegible]

णाय छे, ज्यारे सामान्य साधुजनो कांचन पात्रतुल्य, विरतिवंत श्रावको रजत (रुपाना) पात्रतुल्य, समकितवंत श्रावको तांबाना पात्रतुल्य अने बीजा अविरतिवंत मिथ्यात्वी जनो लोढा अने माटीना पात्रतुल्य कह्या छे ए वचन अनुसारे पण जोतां श्री गौतमपद अति महत्वनुं जणाय छे

१८ श्रीजिन पद–क्रोधादिक प्रसिद्ध अढार दोषोनो क्षय करी नाखवाथी जेमने वीतरागता अने सर्वज्ञतादिक आत्मानी अनंत गुण समृद्धि प्रगट थयेली छे ते जिनपद विश्वप्रकाशक होवाथी अत्यंत उपकारक छे प्रथम अरिहंतपदमां केवळ तीर्थंकर भगवान्नोज समावेश थाय छे, ज्यारे आ पदमां तो उक्त अरिहंत भगवान्ना उपदेश अनुसारे उज्वळ रत्नत्रयीनुं आराधन करी जे कोई घाति कर्मनो क्षय करी केवळ ज्ञानादिक आत्म ऋद्धि प्रगट करे छे ते सर्व कोईनो समावेश थई जाय छे एटले जेमने जेमने केवळ ज्ञानादिक अनंत आत्म संपत्ति प्राप्त थयेल छे ते सर्व कोई सर्वज्ञने आ पदथी आराधवामां आवे छे

१९ संयम पद–विषय सुखनी आशा तजी, क्रोधादिक कषायने जीती, हिंसादिक सकळ आश्रवद्वार छांडी जे कोई आत्मार्थी जनो मन, वचन, कायानी शुद्धि करे छे–आत्मनिग्रह करे छे, ते संयमी जरुर आत्मकल्याण साधी शके छे सर्वसंयमी मुनिजनो छे, ज्यारे देशसंयमी श्रावक होई शके छे दृढ अभ्यासवडे भवभीरु आत्मार्थी श्रावक पण अनुक्रमे सर्व संयमी थई शके छे तेनुं समाधि

पाचमु	तजी परपरिणति रमणता, लहे निजभाव स्वरूप,	
थिविरपद.	स्थिर करता भविलोकने, जय जय थिविर अनूप	५
छट्ठु	बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत,	
उपाध्यायपद	भणे भणावे सूत्रने, जय जय पाठक गीत.	६
सातमु	स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग,	
साधुपद	साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग	७
आठमु	अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रम भीति,	
ज्ञानपद	सत्यधर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति	८
नवमु	लोकालोकना भाव जे, केवलिभाषित जेह,	
दर्शनपद	सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह	९
दशमु	शौच मूळथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार,	
विनयपद.	गुण अनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार	१०
अग्यारमु	रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फळ कही सदीव,	
चारित्रपद	भाव रयणनु निधान छे, जय जय संयम जीव	११
बारमु	जिन प्रतिमा जिन मंदिरा, कंचनना करे जेह,	
ब्रह्मचर्य पद	ब्रह्मव्रतथी बहु फळ लहे, नमो नमो शीयल सुदेह	१२
तेरमु	आत्मबोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल,	
क्रियापद	तत्त्वारथथी धारीए, नमो क्रिया सुविशाल	१३
चौदमु	कर्म खपावे चीकणा, भावमंगल तप जाण,	
तप पद.	पच्चास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण	१४
पंदरमु	छठ्ठ छठ्ठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणग्राम,	
गोयम पद	ए सम शुभ पात्र को नहि, नमो नमो गोयम स्वाम	१५

सोऽभु — दोष टाळी दृष्ट गया, छद्या गुण भास अंग।
जिन पद — वेयावच करीए मुदा, नमो नमो जिन पद संग १६

सत्तरमु- — शुद्धातम गुणमें रम, तजी इंद्रिय आशंस,
सयम पद — थिर समाधि संतोषमां, जय जय संयम वंश. १७

अढारमु — ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समकित मूल;
अभिनवज्ञान — अजर अगमपद फळ लहो, जिनवर पदवी फूल. १८

ओगणीशमु — वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन
श्रुत पद — ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन १९

वीशमु — तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज
तीर्थ पद — परमानंद विलासता जय जय तीर्थ जहाज.

दरेक पदनी वीश नवकारवाळी गणवी तथा दरेकना
पद तथा काउस्सग.

१ नमो अरिहंताण	२४ लोगस्स		२ नमो सिद्धाणं	१५	लोगस्स
३ नमो पवयणस्स.	४५	,,	४ नमो आयरियाण	३६	,,
५ नमो थेराण	१०	,,	६ नमो उवज्झायाण	२५	,,
७ नमो लोए सव्व साहूण	२७	,,	८ नमो नाणस्स.	५	,,
९ नमो दंसणस्स.	६७	,,	१० नमो विणयस्स	१०	,,
११ नमो चारित्तस्स	७०	,,	१२ नमो बंभवयधारिण	९	,,
१३ नमो किरियाण	२५	,,	१४ नमो तवस्स	१२	,,
१५ नमो गोयमस्स.	२८	,,	१६ नमो जिणाण	२०	,,
१७ नमो संयमधारिण.	१७	,,	१८ नमो अभिनवनाणस्स.	५१	,,
१९ नमो सुयस्स	२०	,,	२० नमो तित्थस्स.	५	,,

काउस्सग जेटला खमासमण देवा तथा प्रदक्षिणा देवी.

पांचमु	तजी परपरिणति रमणता, लहे निजभाव स्वरूप,
थिविरपद	स्थिर करता भविलोकने, जय जय थिविर अनूप ५
छठु	बोध सूक्ष्म विणु जीवने, न होय तत्त्व प्रतीत;
उपाध्यायपद	भणे भणावे सूत्रने, जय जय पाठक गीत. ६
सातमु-	स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग;
साधुपद	साधे शुद्धानंदता, नमो साधु शुभरंग ७
आठमु-	अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भवभ्रम भीति,
ज्ञानपद	सत्यधर्म ते ज्ञान छे, नमो नमो ज्ञाननी रीति ८
नवमु	लोकालोकना भाव जे, केवलिभाषित जेह,
दर्शनपद	सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ९
दशमु	शौच मूळथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार,
विनयपद	गुण अनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार १०
अग्यारमु	रत्नत्रयी विणु साधना, निष्फळ कही सदीव,
चारित्रपद	भाव रयणनु निधान छे, जय जय संयम जीव ११
बारमु	जिन प्रतिमा जिन मंदिरां, कंचनना करे जेह,
ब्रह्मचर्य पद	ब्रह्मव्रतथी बहु फळ लहे, नमो नमो शीयल सुदेह. १२
तेरमु	आतमबोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल,
क्रियापद	तत्त्वारथथी धारीए, नमो क्रिया सुविशाल १३
चौदमु	कर्म खपावे चीकणा, भावमंगळ तप जाण,
तप पद	पचास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण १४
पदरमु	छठ छठ तप करे पारणुं, चउनाणी गुणधाम,
गोयम पद	ए सम शुभ पात्र को नहि, नमो नमो गोयम स्वाम १५

सोळमु- दोष अढार क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग,
जिन पद वैयावच्च करीए मुदा, नमो नमो जिन पद संग १६

सत्तरमु शुद्धातम गुणमें रमे, तजी इंद्रिय आशंस,
संयम पद थिर समाधि संतोपमां, जय जय संयम वंश १७

अढारमु ज्ञान वृक्ष सेवो भविक, चारित्र समक्तित मूळ,
अभिनवज्ञान अजर अगमपद फल लहो, जिनवर पदवी फूल १८

ओगणीसमु वक्ता श्रोता योगथी, श्रुत अनुभव रस पीन,
श्रुत पद ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन. १०

वीशमु तीर्थयात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज,
तीर्थ पद परमानंद विलासता जय जय तीर्थ जहाज

दरेक पदनी वीश नवकारवाळी गणवी खमासमण गणवानु
पद तथा काउस्सग्ग.

१ नमो अरिहंताणं	२४	लोगस्स	२ नमो सिद्धाणं	१५	लोगस्स
३ नमो पवयणस्स	२५	,,	४ नमो आयरियाणं	३६	,,
५ नमो थेराणं	१०	,,	६ नमो उवज्झायाणं	२५	,,
७ नमो लोए सव्व साहूणं	२७	,,	८ नमो नाणस्स.	५	,
९ नमो दंसणस्स	६७	,,	१० नमो विणयस्स	१०	,,
११ नमो चारित्तस्स	७०	,,	१२ नमो बंभवयधारिणं	९	,,
१३ नमो किरियाणं.	२५	,,	१४ नमो तवस्स	१२	,,
१५ नमो गोयमस्स	२८	,,	१६ नमो जिणाणं	२०	,,
१७ नमो संयमधारिणं.	१७	,,	१८ नमो अभिनवनाणस्स.	५१	,,
१९ नमो सुयस्स.	१२	,,	२० नमो तित्थस्स	५	,,

काउस्सग्ग केम्ला खमासमण देवा तथा प्रदक्षिणा देवी.

जे अज्ञान अने महा मोहरूपी अंधकारने दूर करी नाख्ये छे, वळी मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यव अने केवळ ए पांच जेना प्रकार छे, जे अनेक रीते जीवोने उपकार करे छे अने जे भव्य जीवोने सर्व पदार्थ संबंधी बोध समर्थ छे, ते ज्ञान दिवाकरने अमारो वारंवार नमस्कार हो ! ७

आराहिआखंडियसक्कियस्स, नमो नमो संजमवीरियस्स ।
सब्भावणासंगविवड्डियस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ ८ ॥

जे अखंडित शक्ति (प्रमाद रहित सतत् पुरुषार्थ) वडे प्राप्त थइ शके छे, सद्भावनायोगे जेनी वृद्धि थई शके छे अने जे शाश्वत सुखादिक आपवा समर्थ छे, ते संयम वीर्यने अमारो वारंवार नमस्कार हो ८

कम्मदुमुम्मूलणकुंजरस्स, नमो नमो तिव्वतवोभरस्स ॥
अणेगलद्धीण निबंधणस्स, दुस्सज्झअथ्थाण य साहणस्स ॥ ९ ॥

जेना प्रभावे गौतमस्वामीनी जेवी अनेक उत्तम लब्धिओ उत्पन्न थाय छे, तेमज दु सा य (महा मुशीबते मेळवी शकाय एवा) अर्थ पण जेना वडे सुसाध्य (सुख मेळवी शकाय एवा) थइ शके छे तथा जे समर्थ हाथीनी पेरे कर्मरूपी वृक्षने समूळगु उखेडी नाखे छे ते तीव्र तपोभर (आंबिल वर्धमानादिक अनेक प्रकारना आकरा बाह्य अने अभ्यंतर तपसमुदाय) ने अमारो वारंवार नमस्कार हो १०

इय नवपयसिद्ध, लद्धिविज्जासमिद्ध । पयडिअसरवग्ग,
ह्रींतिरेहासमग्ग । दिसिवइ सुरसार, खोणिपीढावयार ॥ ,
तिजयविजयचक्क, सिद्धचक्क नमामि ॥१० ॥ इतिशम् ॥

अथ नवपदस्वरुपगर्भित अरिहंतादिक आराधनउपदेश

जियतरागारिजणे सुनाणे, सुपाडिहेरद् सयप्पहाणे ॥
संदेहसंदोहरय हरते, झाएह निच्चंपि जिणेरिहंते ॥ १ ॥

जेमणे राग, द्वेष अने मोहादिक अतरग शत्रुगन जीती लीधो छे जेथी उत्तम केवलज्ञान प्रमुख आत्म-समृद्धि जेमने प्रगट-प्राप्त थयेली छे, तेमज उत्तम प्रातिहार्यादिक अतिशयवडे जे देवाधिदेवनी पदवीने पामेला छे, अने जे पोतानी सातिशय वाणीवडे अनेक जीवोना संदेहरूपी रज समूहने समीर (पवन)नी पेरे झाटकी काढे छे, ते जिन-अरिहंत भगवानने हे भव्यजनो ! तमे सदाय दील्मा ध्यावो ! १

दुट्ठट्ठकम्मावरणप्पमुक्के अणतनाणाइसिरीचउक्के ॥
समग्गलोगग्गपयप्पसिद्धे, झाएह निच्चंपि मणसि सिद्धे ॥२॥

विविध प्रकारे जीवोने विटबना करनारां ज्ञानावरणीय प्रमुख दुष्ट अष्ट कर्मना आवरणोथी जेओ मुक्त थयेला छे तेथी अनत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने अनत शक्ति प्रमुख आत्म-लक्ष्मी जेमने प्रगट थयेली छे, तेमज जेओ समग्र लोकना अग्रपदने पामेला छे एटले निरुपाधिक सिद्धि गति अथवा मोक्ष नामना प्रसिद्ध स्थानने प्राप्त थयेला छे ते सिद्ध भगवानने हे भव्यजनो ! तमे तमारा दीलमां सदाय ध्यावो ! २

न त सुह देइ पिया न माया, ज दिंति जीवाणिह सूरिपाया ॥
तम्हा हु ते चेव सया महेह, ज मुक्खसुक्खाइ लहु लहेह ॥३॥

अवड छत्रीश गुणमणथी अलकृत भाव-आचार्यनी चरण सेवा जीवोने जे सत्य स्वाभाविक सुख समर्पे छे तेवुं सुख मातपिता

दिक स्वजन सबधीओ आपी शकता नथी तेटला माटे हे भव्यजनो ! तमे तेरा भावाराधना चरण कमळ सदाय सेवो–पूजो के जेथी मोक्ष सुखादिक वेगे वरी शको ! ३

सुत्तत्थसंवेगमयस्सुएण, सनीरखीरामयविस्सुएण ॥
पीणंति जे ते उवज्झायराए, झाएह निच्चपि कयप्पसाए ॥४॥

सुस्वादिष्ट जळ, क्षीर अने अमृत समान अनुक्रमे हितकारी श्रुत, अर्थ अने स्वानुभव ज्ञानवडे स्वशिष्यवर्गने जेओ प्रसन्न करे छे तेवा सुप्रसन्न कृपाळु वर वाचक उपाध्यायजी महाराजने हे भव्यजनो ! तमे सदाय दीलमां ध्यावो ! ४

खंते य दंते य सुगुत्तिगुत्ते, मुत्ते पसंते गुणजोगजुत्ते ॥
गयप्पमाए हयमोहमाए, झाएह निच्चं मुणिरायपाए ॥५॥

क्षांत (क्षमाशील–क्षमालु), दांत (दमनशील–इंद्रियजित) सुगुप्ति गुप्त (मन, वचन अने कायाने सुनिग्रहित करी राखनार), मुक्त (निर्लेप–निःस्पृही), प्रशांत (जेमणे कषाय मात्रने सारी रीते शापवा दीधा छे एवा वैराग्य रसमां झीलनार), मूळ–उत्तर साधु योग्य गुणने धारण करनार (पांच महाव्रतादिक साधु योग्य २७ गुण अलंकृत), विकथादिक प्रमाद वर्जित अने मोह मायाथी मूकायेला (हुं अने मारुं जेमने नथी, अथवा अहंता अने ममताने जेमणे मारी काढी छे) एवा मुनिराजना चरण कमळने तमे सदाय ध्यावो ! ५

जं दव्वछक्काइसुसद्दहाणं, तं दंसणं सव्वगुणप्पहाणं ॥
कुग्गाहवाहीउ वयंति जेण, जहा विसुद्धेण रसायणेण ॥६॥

सर्वज्ञ कथित षट (छ) द्रव्य (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने काळ),

जीवाजीवादिक नव तत्त्व (जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष). सात नय (नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत). सप्तभंगी (स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति, स्यात् अस्तिनास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, अने स्यात् अस्तिनास्ति युगपत् अवक्तव्य), चार निक्षेपा (नाम स्थापना, द्रव्य अने भाव), पांच भाव (औदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक अने पारिणामिक) तेमज बे प्रमाण (प्रत्यक्ष अने परोक्ष सविकल्प) विगेरे सर्वज्ञ भाषित वचनमां सुश्रद्धान (दृढ मनाति) लक्षणवाळा सम्यक्त्वने सर्व गुणोमां प्रधान गुणरूप शाहे गणधरोमां आवेल छे के जेम विशुद्ध रसायणवडे गमे तेवी कष्ट सा य व्याधिओ पण दुर थाय छे तेम आ (सम्यक्त्व) गुण वडे अन्य गुण अविनयकर कदाग्रह प्रमुख अनेक प्रकारना आंतर व्याधिओ उपशमी जाय छे एम समजीने हे भव्यात्माओ ! उक्त सम्यक्त्वनुं तमे यथाविध आराधन करो ! जेथी तमारी सघळी धर्म करणी मोक्षदायी नीवडे ६

नाण पहाण नयचक्कसिद्धं, तत्ताववोहिक्कमयं पसिद्धं ॥
धरेह चित्तावसहे फुरतं, माणिक्कदीवुव्व तमोहरतं ॥ ७ ॥

भिन्न भिन्न (अनेक प्रकारना) अपेक्षावाळा अभिप्रायोवडे सम्मुख रहेला अनंता धर्मात्मक वस्तुने करनारा नय समूहयोगे निष्पन्न थयेल, केवळ वस्तु स्वरूपनुं ज प्रतिपादन करनार, भत्यारे पण आ गम रूप भव्य देखातो, स्वपर प्रकाशक होवाथी बीजा चार ज्ञान करता चढीयातो, रत्नदीपकनी पेरे अंतस्तम (उंडा अज्ञान अंधकार) ने हरण करनारो, जाज्वल्यमान ज्ञानदीपक हे भव्यजनो ! तमारा मनमंदिरमां स्थापो ! ७

सुसरई मोहनिरोहसार, पचप्पयार विगयाइयार ॥
मूलोत्तराणेगगुणपवित्त, पालेह निचपि हु सच्चरित्त ॥८॥

जगतमात्रने अघ करी नांखे एवा समर्थ मोहनो निरोध करवा वडे प्रधान, समिति–गुप्ति प्रमुख सुसवर स्वरूप, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, अने यथाख्यात ए पाच प्रकारवाळा अने मूळ तथा उत्तर अनेक गुणोवडे पवित्र एवा सत् चारित्रने तमे सदाय निरतिचारपणे पाळो ८

बज्झं तहा भितरभेयमेयं, कयाइ दुभेयकुकम्म भेयं ॥
दुक्खक्खयथ्थं कयपावनासं, तवं तवेहागमियं निरासं ॥९॥

छ प्रकारे बाह्य अने छ प्रकारे अभ्यतर एम जेना बार भेद गणाय छे, जेनावडे दुर्भेद्य कुकर्मानो भेद (विनाश) थई शके छे, एवा पाप विनाशक तपने हे भव्यजनो ! तमे जन्ममरणादिक दु:खनो क्षय करवा माटे आगमरीते निराशीभावे (निष्कामवृत्तिथी) सेवो ! जेथी तमे जल्दी भवभ्रमण निवारीने अक्षय–अव्याबाध–शिव सुखने पामी शकशो ९

एयाइ जे केवि नवपयाइ, आराहयतिट्ठफलप्पयाइ ॥
लहंति ते सुक्खपरपराणं, सिरिसिरीपालनरेसरव्व ॥१०॥ इति

उपसहार

सर्व–मोक्ष प्रमुख इष्ट फळने प्रकर्षे करीने देवावाळा उपर कहेला उत्तम नव पदोने जे भव्यात्माओ आराधे छे, तेओ श्री श्रीपाळ नरेश्वरनी पेरे सुखनी परपरा अविच्छिन्न सुख सपदाने सहजे पामे छे

श्री सिद्धचक्र-आराधन विधि.

उपर कह्या मुजब नवपदना गुण समजी शाश्वत सुखना अर्थी जनोए तेनुं सदा सद्भावथी सेवन करवुं. त्रिकाळ पूजा सेवा भक्ति बहुमान पूर्वक मनमां निरंतर नवपदनुं स्मरण करवुं. दृढ अभ्यासथी नवपदनुं ध्यान धरनार पोतेज नवपदरूप थई शके छे, तेथी अहोनिश हृदय कमळमां नवपदनु स्थापन करी राखवुं जरूरनुं छे. आसो अने चैत्र मासमां विशेष करीने शुद ७ थी शुद १५ सुधी निरंतर ' आयंबिल ' तपनुं सेवन करवुं अने एकेक दिवसे अनुक्रमे ॐ ह्रीं पूर्वक १ नमो अरिहंताणं, २ नमो सिद्धाणं, ३ नमो आयरियाणं, ४ नमो उवज्झायाणं, ५ नमो लोए सव्वसाहूणं, ६ नमो दंसणस्स, ७ नमो नाणस्स, ८ नमो चारित्तस्स, ९ नमो तवस्स, ए नवपदनुं गणणुं गणवुं. दरेक पदनो २००० जाप करवो अथवा एकेक पदथी २० नवकारवाळी गणवी. गणणुं गणतां अरिहंतादिक पदमांज उपयोग स्थिर करवो. स्थिर आसन करी मन तथा इन्द्रियोने काबुमां राखवी, एकांत अने पवित्र स्थळमां अडग ध्यान धरवुं. उभयकाळ प्रतिक्रमण अने पडिलेहण तथा त्रिकाळ देववंदन संबंधि क्रिया यथाविधि प्रमाद रहित करवी. प्रतिक्रमण एटले करेलां पापनुं पश्चात्ताप पूर्वक सद्गुरु समीपे आलोचन करी निःशल्य थई पुनः तेवां पापथी, डरतां रहेवुं अने सर्व जीवउपर समान बुद्धि राखवी. राग, द्वेष, क्रोधादिक कषाय, निंदा, चुगली, मिथ्या आळ तथा

कलह आदिक निंद्य कामथी सत्वर दूर रहेवु यथाशक्ति दान देवु-निर्मळ मन राखी शुद्धशील पाळवु नव दिवस सुधी यथार्ण एकज धान्यथी, आसक्ति विना-सुखाशक्तियी, एकज वखते, स्थिर आसने भोजन करवु. पहेले दिवसे श्वेत अन्न चोखा प्रमुख, बीजे दिवसे लाल अन्न-घउ प्रमुख, त्रीजे दिवसे पीत अन्न-चणा प्रमुख, चोथे दिवसे नीलवर्ण अन्न-मग प्रमुख, पाचमे दिवसे कृष्णवर्ण-अडद प्रमुख अने छेल्ला चार दिवसे श्वेतवर्ण-चोखा-शालि प्रमुख राधेलु धान्य वापरी देहने आधार आपवो मैत्री प्रमुख भावना चतुष्टयनु सदाय सेवन करवु. सर्व जीवोनु सदाय हित इच्छवु, सद्गुणीने देखी प्रमुदित थवुं दीन-दुखीनु दुःख टाळवा यत्न करवु अने कठोर दीलना निर्दय प्राणी उपर पण द्वेष लाववो नहि देहादिक पुद्गलिक वस्तुओनु अनित्यपणु अने असारपणु विचारी सदा शाश्वत अने सारभूत धर्मनुं दृढ आलंबन लेवु सर्वज्ञ प्रणीत धर्मज आ दःखदरियामा डुबता जीवोने सहायभूत छे नवपदमा देव, गुरु अने धर्म ए त्रणेनो समावेश थाय छे, तेथीज तेनु दृढतर अवलंबन लेवु उचित छे ए नव पदनु सविशेष स्वरूप सद्गुरु समीपे समजी पर आशंसा रहित-निष्कामी पणे तेनु सेवन करवामा आवे तो अल्पकाळमां अक्षय सुख प्राप्त थई शके छे उक्त नवपद अनंत गुणनिधान छता तेना अनुक्रमे १२, ८, ३६, २८, २७, ६७, ५१, ७० अने १२ गुणो शास्त्रमा वर्णवेला छे ते प्रमाणे तेटला लोगस्सना काउस्सग्ग तेटलाज खमासमण अने तेटलीज प्रदक्षिणा विगेरे करणी स्थिर उपयोगथी नव दिवस सुधी अनुक्रमे करवी कही छे वळी दिन दिन विनय, वैया

वच, स्वाध्याय, यान प्रमुख धर्म व्यापार शुद्ध मन, वचन, कायाना योगथी करता आत्मा अवश्य उच्च गतिनो अधिकारी थाय छे आ प्रमाणे नवपदनु आराधन श्री वर्ष सुधी अने बनी शके तो जीवित पर्यंत करवानु छे. श्री वर्षमा सर्व मळीने ८१ आयंबिल उपर मुजब करवाना छे अने साथे साथे बीजी धर्मकरणी करवानो परमार्थ सद्गुरु समीपे समजी तेनु सेवन करनारने यथार्थ लाभ मेळववा, परन्तु अत्यन्त लक्षमा राखवानी जरुर छे, के ते करणी नकामा उपयोगथी दोष रहित निष्कपटपणे करवी भय-परिणामनी चपळता, द्वेष-अरुचि, अने खेद रहित चढते परिणामे दोष रहित करेली करणी उत्तम फळ आपे छे एम समजी शुभ सज्जनोए सर्व मत कदाग्रह मूकी दई उक्त नवपदजीनु स्वरुप यथार्थ रीते निष्पक्षपातपणे विचारी तेनु सेवन-आराधन निर्मळ श्रद्धाथी उल्लसित भावे प्रमाद रहित करवु एवी रीते शुद्धभावथी सिद्धचक्रजीनी आराधना करनार श्री श्रीपाळ अने मयणा सुंदरीनापेरे आ मनुष्य भवमा अद्भुत सुख अनुभवी अनुक्रमे स्वर्गना अने मोक्षना अक्षय अनंत सुख प्राप्त करे छे

अत्र दर्शावेल आराधन विधि सामान्य रीते वीश स्थानक प्रमुख अन्य तपनु आराधन करवा इच्छनारा भव्य जनोने पण यथा योग्य उपयोगी थइ शके एम होवाथी ते दरेक तपनु खास रूप दोरवामा आवे छे



नवपदनु आराधन करनाराओने दरेक पद दीठ बोलवाना दूहा

॥ प्रथम श्री अरिहंतपद ॥

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायरे ॥
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रूपी थायरे ॥ १ ॥
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाईरे ॥
आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मले सवि आईरे ॥ २ ॥

॥ द्वितीयश्रीसिद्धपद ॥

रूपातीत स्वभावजे, केवल दंसण नाणीरे ॥
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्धगुण खाणीरे ॥वी०॥ ३ ॥

॥ तृतीयश्रीआचार्यपद ॥

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे ॥
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

॥ चतुर्थ श्रीउपाध्यायपद ॥

तप सज्झाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे ॥
उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्रातारे ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ पञ्चमश्रीसाधुपद ॥

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे ॥
साधु सुधा ते आतमा, शुं मुंडे शुं लोचेरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

॥ षष्ठ श्रीदर्शनपद ॥

शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे ॥
दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

॥ सप्तमश्रीज्ञानपद ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे ॥
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥ वी० ॥ ८ ॥

॥ अष्टमश्रीचारित्रपद ॥

जाण चारित्र ते आत्मा, निज स्वभावमां रमतोरे ॥
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतोरे ॥ वी० ॥ ९ ॥

॥ नवमश्रीतपपद ॥

इच्छारोधे संवरी, परिणति समतायोगेरे ॥
तप ते एहिज आतमा, वर्ते निजगुणभोगेरे ॥ वी० ॥ १० ॥

वर्धमान तपनी ओळी संबंधी सामान्य समज

वर्धमान तप एटले उत्तरोत्तर वृद्धि पामतो तप ते तप संबंधी ओळी करवानी रीति आ प्रमाणे छे—प्रथम एक आयंबिल, पछी एक उपवास ए प्रथम ओळी. पछी बे आयंबिल अने एक उपवास ए बीजी ओळी पछी त्रण आयंबिल अने एक उपवास ए त्रीजी ओळी पछी चार आयंबिल अने एक उपवास ए चोथी ओळी पछी पांच आयंबिल अने एक उपवास ए पांचमी ओळी आ पांच ओळी एक साथेज करवामां आवे छे त्यारबाद यथाशक्ति, हिंमतवान होय ते एज रीते उत्तरोत्तर एक एक आयंबिल वधारता जाय अने तेना उपर प्रत्येक उपवास करी एक एक ओळी पूर्ण करतो रहे. जेमके ६ आयंबिल अने उपर उपवास, पछी ७ आयंबिल अने उपवास, पछी ८ आयं

बिल अने उपवास, एवी रीते यावत् १०० आयंबिल अने उपर उपवास करे, त्यारे १०० मी ओळी पूर्ण थाय एटले वर्धमान तपनी पूर्णाहुति थई कहेवाय, आ वर्धमान तपनी ओळी अविच्छिन्नपणे (वचमा तूटक पाड्या वगर) चालु राखवामा आवे तो ते तप १४ वर्ष, ३ मास अने २० दिवस सुधी चाले छे अने जो वचमा वचमा थोडाक दिवस कइ शरीरादिकनी शिथिलता प्रमुख कारणसर पडती मूकी पछी आतरे आतरे करवामा आवे तो ते तप पूर्ण थता विलब थाय छे आ वर्धमान तप घणोज प्रभाविक तेमज द्रव्य भाव विघ्न-उपद्रवने हरनारो छे, तेने कोईक विरलभाग्यशाळी जनोज पूर्ण करी शके छे ए वर्धमान तप कोई महानुभाव सुविहित सविग्न भव भीरु गीतार्थ गुरु पासे शुभ मुहूर्ते उल्लासपूर्वक जिन मदिरमा अथवा नदि (समवसरण) महानिने यथाविधि अगीकार करी श्री गुरुमहाराज पासे वासक्षेप करावबो, अने प्रमाद तजी नवपदनी ओळी करता जे जे सदाचार पाळवा सूचना करवामा आवी छे ते ते सदाचारो ज्या सुधी आ महान वर्धमान तपनु सेवन करवामा आवे त्या सुधी पाळवा शील, सतोषादिक प्रमुख सद्वर्तन नेक निष्टाथी पाळवु. विशेषमा प्रत्येक ओळीना दिवसोमा गणणु ' नमो तवस्स ' अथवा ' नमो सिद्धाण ' पदनु २००० गणवामा आवे छे अने तेना गुण प्रमाणे १२ अथवा ८ लोगस्सनो काउस्सग, प्रतिदिन तेटलाज खमासमण, तेमज प्रदक्षिणा पण देवामा आवे छे बाकीनी सामान्य विधि नवपदना प्रसगे कहेवामा आवेल छे ते उपरथी जाणी लेवी

तिथीओ संबंधी तपनी समज



(१)

बीजनुं माहात्म्य तथा सामान्य समज

दुविध धर्मनुं आराधन करवा निमित्ते आ तपनुं सेवन करवामां आवे छे अने ते दिवसे उपवास पोषधादिक यथाशक्ति करवुं जोइए ए तप यथाशक्ति बे मास, १२ मास अथवा जींदगी पर्यंत करवामां आवे छे ज्यां स्पष्ट गणणुं जणाववामां आव्युं नथी त्यां पण नवपद पैकी कोई पण पदनुं २००० गणणुं गणवुं घटे छे बाकीनो विधि नवपदनी ओळीमां बताव्या मुजब यथायोग्य समजी लेवानो छे.

(२)

पंचमी तपनो महिमा तथा सामान्य समज

ज्ञाननुं आराधन करवा शास्त्रकारे पंचमी तप करवा जणाव्युं छे शक्ति होय तो सघळी पंचमी करवामां आवे. नहि तो दरेक मासनी उज्वळ (अजवाळी) पंचमी, नहि तो छेवटे कार्तिक शुदि पंचमी (सौभाग्य पंचमी) तो जरूर करवी जोईए. तेमां २००० गणणुं " नमो नाणस्स " ए पदनुं गणवुं काउस्सग लोगस्स ५ अथवा ५१ अने एटलाज खमासमण विगेरे पण प्रतिदिन देवा जोईए, आ तप पण यथाशक्ति पांच मास, पांच वर्ष अथवा जींदगी पर्यंत करवामां आवे छे तपना दिवसे पोषधादिकनुं सेवन करवुं जोईए

(३)

अष्टमी (आठम) तपनो महिमा अने तनी सामान्य समज.

आवश्यक सूत्रनी निर्युक्तिमां श्रीमान भद्रबाहु स्वामीजीए कह्यु छे के " अट्ठकम्ममहणी अट्ठमी " एटले आठे कर्मनु मथन करनारी अष्टमी छे अर्थात् विधियुक्त अष्टमीनो तप करता आठे कर्मनो क्षय थई शके छे तपना दिवसे तनी शके त्याछुधी अवश्य पौषध प्रमुख करवु जोईए ते तप यथाशक्ति ८ मास, ८ वर्ष अथवा जींदगी पर्यंत करवो घटे छे

(४)

एकादशी तपनु माहात्म्य तथा सामान्य समज

अगीयार अगनु आराधन करवा आ तपनु निर्माण छे श्री नेमिनाथ महाराजने कृष्णजीए पोताना उद्धारार्थे कई साधन माटे पूछयु हतु त्यारे भगवाने तेने एकादशीनु आराधन करवा जणाव्यु हतु सुव्रत शेठे आ पर्वनु यथाविधि आराधन करेलु छे तपना दिवसे एक चित्ते पौषधादिकनु सेवन करवु, अने ते तप यथाशक्ति ११ मास, ११ वर्ष यावत् जीवित करवु जोईए जो वधारे न बने तो मागशिर शुद एकादशी (मौन अगीयारस) नु तो अवश्य आराधन करवु अने ते जींदगी पर्यंत करवु तनु गुणणु (१५० कल्याणकनु) अन्य ग्रथमा बतावेलु छे त्यांथी जोई लेवु

(५)

चतुर्दशीनु माहात्म्य अने सामान्य समज

चौद पूर्वनु आराधन करवा आ तप करवामा आवे छे ते दिवसे अवश्य उपवास पौषधादिकनु सेवन करवु अने ते यथाशक्ति १४

१४ थी अथवा जीवी पर्यंत करवु, पार्श्वनी आलापण तरीके करीने चौदश एक उपवास के बेला करने त्रीजो तप, ते आप-लिय प्राणीनो चार प्रकारणा प्रमुख करवो जोईए

(६)

पूर्णमा अने अमावास्या सबधी तपनी समज

उ पर्वो पर्व पूर्णिमा तथा अमावास्या पण चारित्र आराधन निमित्त छे अने तेथी ते उपवास पौषधादिक वडे आराधवा योग्य छे तेमां पण कार्तिकी अने चैत्री पूर्णिमानी तथा वीर प्रभुना निर्वाण दिवस तरीके अमावास्यानी पण अधिकता जाणवी, एटला तो एवी तिथिओनो नियम करवो जरूर छे, ते आवी रीते के-दरेक आठमी

२. चतुर्दशी, पूर्णमा अने अमावास्या ए चारित्र आराधननी तिथिओ जाणवा तदन बीजी पचमी अने एकादशी ते ज्ञानदर्शन आराधनानी तिथिओ जाणीने यथाशक्ति तप तथा पौषधादिक करी तमनु आराधन करवुं योग्य छे

महोपाध्याय श्री मद्यशोविजयजी कृत श्री पार्श्वजिन स्तवन

(राग प्रभात-राग)

चिदानन्द घन परम निरंजन, जन मन रंजन देव ॥ ए आंकणी ॥

वामा नन्दन जिन पति पूजिये, सुरपति जस करे सेव

मन मोहन जिनजी भेटिए रे ॥ ए आंकणी ॥ १

जायफ़ड चपक केतकी, दमणोने मरुद ॥ लल्ना ॥
कुंदइदु रुचि सुदर जोडी, पूजीए पासजिणंद ॥ मनमोहन० ॥ २ ॥
केसर घोळी घसी घनचंदन, आनदघन घन घनसार ॥ लल्ना ॥
मयुरी पूजा करो मलरंगे, पाउंय पुण्य सफार० ॥ मनमोहन० ॥ ३ ॥
अगे चगी आगी बनावी, अलंकार अति सार ॥ लल्ना ॥
द्रव्यस्तवविधि पूरण विरची, भावीए भाव उदार ॥ मनमोहन० ॥ ४ ॥
परमातम पूरण गुण मत्यक्ष, पुरुषोत्तम परधान ॥ लल्ना ॥
भगटभाव मभावती वल्लभ०, तु जयो सुगुणनिधान ॥ मन मोहन० ॥ ५ ॥
जो तुम भक्ति मोरी० मुझमन, उनविचरे अतिचित्त ॥ लल्ना० ॥
दुरित भुजगम० बधन त्रुटे, तो मचलो जगवित्त ॥ मन मोहन० ॥ ६ ॥
तुम आणा सुरवेली मुजमन, नदनवन जिहां रुड ॥ लल्ना० ॥
कुमति कदाग्रह कटक शाखी, समवे नहि तीहां मुढ ॥ मन मोहन० ॥ ७ ॥
भक्तिराग तुज आणाराधन०, दोय चक्र ससार ॥ लल्ना ॥
सहस अढार अग रथ चाले, विघन रहित गिरधार ॥ मन मोहन० ॥ ८ ॥
गुरु उपदेशे जो मुज लाग्यो, तुझ शासनको राग ॥ लल्ना ॥
महानदपद खेंच लहेगो, ज्यु अलि० कुसुम पराग ॥ मन मोहन० ॥ ९ ॥
बाहिर मन निकसन नहि चाहत, तुझ शासनमां लीन ॥ लल्ना ॥
उमग निमग करी निजपद रहने, ज्यु जलनिधि० जलमीन
॥ मन मोहन० ॥ १० ॥

---

१ विशाल-अनगल २ प्राणप्रिय ३ मयूरी (मोरली) ४ पाप-साप ५ कांटाळा वगडा ६ आज्ञापालन. ७ भ्रमर ८ लिफक्रया ९ गमेनेम. १० समुद्र.

ली न पाउं, जो तु साहिब एक ॥ ललना० ॥
आसना दृढ निजमनकी, ज्युं अविचलपद टेक ॥मन मोहन०॥११॥
तुम शासन अनुभवको रस, क्युं करी जाणे लोग ? ॥ललना॥
अक्षरियोत कन्या नवी जाणे, ज्युं सुख दंपत[1] संजोग ॥मन मोहन० ॥१२॥
तु साहिब हुं सेवक तेरो, ए व्यवहार विभाग ॥ललना॥
निश्चय नयमत दोनु सरिखे, है नहिं भेदको लाग ॥मन मोहन०॥१३॥
मन वचनादिक पुद्गल न्यारो, न्यारो सकल विभाव ॥ललना॥
शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय घटना, तुझ समशुद्ध स्वभाव॥मन मोहन०॥१४॥
तु घट अंतर प्रगट विराजे, ज्युं निर्मल मणिकंत ॥ललना॥
बाहीर ढूंढत मूढ न पावे, ज्युं मृगमद मृग भ्रांत ॥ मन मोहन० ॥१५॥
गुणगणादिकभावे भिन्न, सबमाहे तुझ अंश ॥ललना॥
खीरनीर जिम भिन्न करतहे, उज्ज्वल अनुभवहंस ॥मन मोहन०॥१६॥
आतमज्ञान दशा जब जागी, वैरागी तुझ ध्यान ॥ललना॥
सो पावे ज्युं रत्नपरीक्षा, पेखत रत्नप्रधान ॥ मन मोहन० ॥ १७ ॥
पुण्य प्रकृति देवको कारण, मूढ कहे नहीं धर्म ॥ललना॥
ज्युं पीरो कोई अध न माने, लहत न अंतर मर्म ॥मन मोहन० ॥१८॥
गंध रूप रस फरस विवरजित, न धरे तिहां संठाण ॥ललना॥
अण अवतार अशरीर अवेदी, तु प्रभु शुद्धप्रमाण ॥मन मोहन०॥१९॥
केवलज्ञान दशा अवलोके, लोकालोक प्रमाण ॥ललना॥
दर्शन वीर्य चरण गुणधारी, सेवत सब अहिठाण ॥मन मोहन०॥२०॥

---

१ दंपती.

द् अरुपी तेरी, नही जगको व्यवहार ॥

ही कछु कहत न आवे, तु प्रभु अलख अपार ॥ मन मोहन०

द् रवि ग्रहगण केरा, जिहा प्रसरत नही तेज ॥लल्लना॥

एक तुज धाम विराजे, निर्मल चेतन सेज ॥मन मोहन०॥२२॥

द्वे रहित अजरामर निर्भय, व्यापक एक अनंत ॥लल्लना॥

द् प्रकृति अरुपाय अमायी, तु प्रभु बहु गुणवंत ॥मनमोहन ॥२३॥

माता तु थाता भ्राता, पिता बंधु तु मित्त ॥लल्लना॥

सरण तुहि तुज सेवा कीजे, दृढ करी तनु वच चित्त ॥मनमोहन ॥२४

पास आस पूरो अब मोरी, अरज एक अवधार ॥लल्लना॥

श्री नयविजय विबुध पाय सेवक, जस कहे भवजल्लतार ॥ मनमो

जिनजी भेटिये हो २५ इति